



राष्ट्रीय आन्दोलन और अलीगढ़ जनपद के कवि [सन् 1901 से 1947 ई० तक]

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की एम्. फिल.

उपाधि हेतु
प्रस्तुत छद्म शोध-प्रबन्ध

1990

निर्देशक :

डा० गेंदा लाल शर्मा

एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत, भाषा शास्त्र)
पी-एच. डी., डी. लिट.
वरिष्ठ रीडर

शोधार्थी :

सद्दीक खाँ

हिन्दी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़-202002

Red E. ...

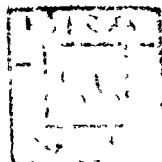


DS1887



Handwritten signature and stamp: AED-200

27 AUG 1992



अनुक्रमिका

पृ० सं०

प्राक्कथन

अनुक्रमिका

प्रथम अध्याय : अलीगढ़ जनपद : सामान्य परिचय, समाज और जनजीवन

1.1	सामान्य मानचित्र	1
1.2	नामकरण	2
1.3	भौगोलिक स्थिति	4
1.4	समाज और जनजीवन	6
1.5	आर्थिक स्थिति	9
1.6	अलीगढ़ जनपद एक नज़र में	11

द्वितीय अध्याय : राष्ट्रीय आन्दोलन और अलीगढ़ जनपद

2.1	आन्दोलन की भूमिका	12
2.2	प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, सन् 1857 ई०	12
2.3	अलीगढ़ जनपद, असहयोग आन्दोलन और खिलाफत आन्दोलन	16
2.4	नमक सत्याग्रह सन् 1930 ई०	21
2.5	अलीगढ़ का दमन-युद्ध, सन् 1932 ई०	22
2.6	व्यक्तिगत सत्याग्रह , सन् 1940-41 ई०	24
2.7	भारत छोड़ो आन्दोलन, सन् 1942-45 ई०	24
2.8	अलीगढ़ जनपद के राष्ट्रीय नेता और राष्ट्रीय ग़हीद	26

तृतीय अध्याय : अलीगढ़ के प्रमुख राष्ट्रीय कवि : सामान्य परिचय

3.1	श्री नवाब सिंह चौहान "कंज"	27
-----	----------------------------	----

3.2	श्री साहेब सिंह मेहरा	30
3.3	श्री छेमसिंह नागर	35
3.4	श्री गजराज सिंह "तरीज"	39
3.5	श्री टक्कन्नाल शर्मा	42
3.6	श्री छेदालाल मुद्ग	46
3.7	श्री रामप्रताप पुजारी	51
3.8	पेच दीपचन्द	52
3.9	श्री नाथुराम शर्मा "शंकर"	54
3.10	श्री इन्द्र शर्मा	58
<u>चतुर्थ अध्याय : अलीगढ़ जनपद के कवियों का राष्ट्रीय साहित्य</u>		60
<u>विविध संकलित रचनाएँ</u>		
4.1	श्री साहेब सिंह मेहरा	63
4.2	श्री पेच दीपचन्द	78
4.3	श्री नाथुराम शर्मा "शंकर"	95
4.4	श्री छेमसिंह नागर	98
4.5	श्री छेदालाल मुद्ग	118
4.6	श्री रामप्रताप पुजारी	135
4.7	श्री गजराजसिंह "तरीज"	140
4.8	श्री टक्कन लाल शर्मा	175
4.9	श्री नवाब सिंह चौहान "कंज"	177
4.10	श्री इन्द्र शर्मा	199
<u>पंचम अध्याय : उपसंहार</u>		208
संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ सूची		
साक्षात्कार		

प्रासङ्गिकता

अलीगढ़ जनपद राष्ट्रीय आन्दोलन के कारण भारत में ही नहीं अपितु अन्तरराष्ट्रीय उपाधि प्राप्त जनपद है । इस जनपद का भारतीय ऐतिहासिक दृष्टि में द्वितीय स्थान रहा है क्योंकि दिल्ली से चलकर कानपुर तक जाने वाले मार्ग पर स्थित यह जनपद राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र रहा है । यहाँ के राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों ने कविताओं एवं जनसमाजों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करके देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान दिया । विदेशी सरकार के अत्याचारों और दुर्व्यवहारों से तंग आकर यहाँ के जनकवियों, स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपनी जान न्योछावर में डालकर राष्ट्रीय आन्दोलन को तपन बनाया । इस लघु-शीघ्र प्रबन्ध में मैंने राष्ट्रीय आन्दोलन के सहयोगी, स्वतन्त्रता सेनानियों एवं इस जनपद के राष्ट्रीय जनकवियों की रचनाओं को संकलित किया है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध की महत्वपूर्ण विषय की रूपरेखा को प्छान्क एवं तार्किक दृष्टि से पाँच अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत किया है । प्रथम अध्याय में अलीगढ़ जनपद के सामान्य परिचय एवं नामकरण व समाज और जनजीवन पर सूक्ष्म रूप से प्रकाश डाला गया है । द्वितीय अध्याय में अलीगढ़ जनपद का सन् 1857 से लेकर सन् 1947 तक के राष्ट्रीय आन्दोलन और स्वतन्त्रता संग्राम का उल्लेख किया है । तृतीय अध्याय में अलीगढ़ जनपद के राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जिन कवियों ने इस जनपद में स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बजाया उनका संक्षिप्त परिचय संकलित करके प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत अलीगढ़ जनपद के राष्ट्रीय कवियों की रचनाओं को संकलित किया है । ये रचनाएँ अधिकतर ब्रज भाषा में हैं । कुछ रचनाएँ उड़ी बोली और ब्रज दोनों में हैं । इन संकलित रचनाओं से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रेरणा, और

जनता में राष्ट्रीय भावना जागृत करने का तफ़्त प्रयास मिलता है । पंचम अध्याय में उपसंहार देते हुए तथा शोध की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है ।

इस प्रबन्ध के विषय घयन एवं शोध निर्देशन का श्रेय डा० गैदालाल शर्मा, वरिष्ठ रीडर हिन्दी विभाग को है । डा० साहब ने इस शोध कार्य के लिए मुझे प्रोत्साहित कर एवं अपने सुयोग्य निर्देशन में शोध-कार्य को सम्पन्न कराया है । आभार मात्र प्रकट करके मैं गुरु कृपा से उश्व नहीं हो पाऊँगा । मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने ज्ञान एवं व्यवहार में उनकी कृपा तदैव पाता रहूँगा ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध की विषय सामग्री संकलन में स्वतन्त्रता तेनानी एवं अलीगढ़ जन्मद के राष्ट्रीय जनकवि श्री साहब सिंह 'मेहरा' जी का पूर्ण सहयोग रहा है । उनके इस सहयोग तथा साक्षात्कार से मैं उश्व नहीं हो सकता । महान देवमवत, समाज सेवक, मेहरा जी के लिए मैं तदैव आभारी रहूँगा ।

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० के०पी० सिंह जी का इस लघु-शोध-प्रबन्ध में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । आपने अपने अमूल्य समय में से मुझे प्रस्तुत शोध कार्य में समय - समय पर परामर्श देकर तथा धैर्य से प्रबन्ध कार्य करने को उत्साहित किया है । मैं उनके प्रति तदैव विरक्त हूँ । प्रो० जैलज जेदी साहब एवं डा० शिवकुमार शान्तिधर जी से इस प्रबन्ध में मुझे पूर्ण सहायता मिली है । मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ । विभागीय अन्य गुरुजनों से भी समय - समय पर मुझे इस शोध कार्य में सहयोग मिला है । मैं सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ ।

मौलाना आजाद पुस्तकालय से मुझे काफी मदद मिली है । पुस्तकालय के हिन्दी सेक्शन के श्री शिवदत्त शर्मा जी [डिप्टी लाइब्रेरियन] ने आवश्यक पुस्तकें प्रदान कर मेरी अपूर्व सहायता की है साथ ही मेरे शोधार्थी साथी श्री मो० आशिक अली, श्री तारिक अजीज, श्री मेराज अहमद व कुमारी नाजिमा

कातुन तथा हॉस्टिल साथी श्री मो० अहमद, श्री हबीबुर्रहमान आदि ने भी समय-समय पर सहयोग देकर जीध पुरा कराने में मेरा विशेष उत्साह बढ़ाया है । इन सभी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ ।

प्रस्तुत लघु-जीध-प्रबन्ध के लिए मेरे माता-पिता और बहिन भाईयों ने मुझे सम्पूर्ण सुविधाओं के साथ प्रबन्ध कार्य करने का अवसर प्रदान किया है अतः उन सबका धन्य है । यह लघु-जीध-प्रबन्ध मैं अपने माता-पिता के प्रति सादर समर्पित करता हूँ ।

मेरे इस प्रबन्ध की सभी त्रुटियाँ मेरी हैं और जो उत्तम हैं वह मेरे गुरुजों एवं हिन्दी के अनेक विद्वानों एवं स्वतंत्रता सेनानियों का सहयोग, तथा साहित्य की निर्दिष्ट त्रुटियों को प्रकाशन से पूर्व ठीक करने का आश्वासन देता हूँ । जाना है विद्वान कृपानाथ के साथ मुझे आशीर्वाद देकर उत्साहित करेंगे ।

विनीत

१२ ३११

सदीक खान

॥ सदीक खान ॥

प्रथम अध्याय

अलीगढ़ जनपद सामान्य परिचय, समाज २७१ जन. ज्ञेय.

- 1.1 सामान्य मानचित्र
- 1.2 नामकरण
- 1.3 भौगोलिक स्थिति
- 1.4 समाज और जनजीवन
- 1.5 आर्थिक स्थिति
- 1.6 अलीगढ़ जनपद एक नज़र में

1. 1945-1946 1947-1948 1949-1950 1951-1952 1953-1954 1955-1956 1957-1958 1959-1960 1961-1962 1963-1964 1965-1966 1967-1968 1969-1970 1971-1972 1973-1974 1975-1976 1977-1978 1979-1980 1981-1982 1983-1984 1985-1986 1987-1988 1989-1990 1991-1992 1993-1994 1995-1996 1997-1998 1999-2000 2001-2002 2003-2004 2005-2006 2007-2008 2009-2010 2011-2012 2013-2014 2015-2016 2017-2018 2019-2020 2021-2022 2023-2024 2025-2026 2027-2028 2029-2030 2031-2032 2033-2034 2035-2036 2037-2038 2039-2040 2041-2042 2043-2044 2045-2046 2047-2048 2049-2050 2051-2052 2053-2054 2055-2056 2057-2058 2059-2060 2061-2062 2063-2064 2065-2066 2067-2068 2069-2070 2071-2072 2073-2074 2075-2076 2077-2078 2079-2080 2081-2082 2083-2084 2085-2086 2087-2088 2089-2090 2091-2092 2093-2094 2095-2096 2097-2098 2099-2100 2101-2102 2103-2104 2105-2106 2107-2108 2109-2110 2111-2112 2113-2114 2115-2116 2117-2118 2119-2120 2121-2122 2123-2124 2125-2126 2127-2128 2129-2130 2131-2132 2133-2134 2135-2136 2137-2138 2139-2140 2141-2142 2143-2144 2145-2146 2147-2148 2149-2150 2151-2152 2153-2154 2155-2156 2157-2158 2159-2160 2161-2162 2163-2164 2165-2166 2167-2168 2169-2170 2171-2172 2173-2174 2175-2176 2177-2178 2179-2180 2181-2182 2183-2184 2185-2186 2187-2188 2189-2190 2191-2192 2193-2194 2195-2196 2197-2198 2199-2200 2201-2202 2203-2204 2205-2206 2207-2208 2209-2210 2211-2212 2213-2214 2215-2216 2217-2218 2219-2220 2221-2222 2223-2224 2225-2226 2227-2228 2229-2230 2231-2232 2233-2234 2235-2236 2237-2238 2239-2240 2241-2242 2243-2244 2245-2246 2247-2248 2249-2250 2251-2252 2253-2254 2255-2256 2257-2258 2259-2260 2261-2262 2263-2264 2265-2266 2267-2268 2269-2270 2271-2272 2273-2274 2275-2276 2277-2278 2279-2280 2281-2282 2283-2284 2285-2286 2287-2288 2289-2290 2291-2292 2293-2294 2295-2296 2297-2298 2299-2300 2301-2302 2303-2304 2305-2306 2307-2308 2309-2310 2311-2312 2313-2314 2315-2316 2317-2318 2319-2320 2321-2322 2323-2324 2325-2326 2327-2328 2329-2330 2331-2332 2333-2334 2335-2336 2337-2338 2339-2340 2341-2342 2343-2344 2345-2346 2347-2348 2349-2350 2351-2352 2353-2354 2355-2356 2357-2358 2359-2360 2361-2362 2363-2364 2365-2366 2367-2368 2369-2370 2371-2372 2373-2374 2375-2376 2377-2378 2379-2380 2381-2382 2383-2384 2385-2386 2387-2388 2389-2390 2391-2392 2393-2394 2395-2396 2397-2398 2399-2400 2401-2402 2403-2404 2405-2406 2407-2408 2409-2410 2411-2412 2413-2414 2415-2416 2417-2418 2419-2420 2421-2422 2423-2424 2425-2426 2427-2428 2429-2430 2431-2432 2433-2434 2435-2436 2437-2438 2439-2440 2441-2442 2443-2444 2445-2446 2447-2448 2449-2450 2451-2452 2453-2454 2455-2456 2457-2458 2459-2460 2461-2462 2463-2464 2465-2466 2467-2468 2469-2470 2471-2472 2473-2474 2475-2476 2477-2478 2479-2480 2481-2482 2483-2484 2485-2486 2487-2488 2489-2



अजोगढ़ जनपद : सामान्य परिचय, समाज एवं जन-जीवन

1.1 नामकरण

गंगा-यमुना के मध्य ब्रजमंडल के कोर पर बसा - ताजा उद्योग तथा अजोगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध नगर - अजोगढ़ का इतिहास में विभिन्न दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

रामायण काल से पूर्व भी कोल अजोगढ़ का अस्तित्व था । कोहो क्षत्रिय के आश्रम के कारण यह स्थान "कोहिला" आश्रम कहलाता था । यह भी प्रमाणित है कि कोहिला आश्रम के पास ही महर्षि विश्वामित्र का आश्रम था । वर्तमान अजोगढ़ जनपद में स्थित "बेसवा" स्थान उसी विश्वामित्र आश्रम का स्मृति-चिह्न है ।

महाभारतकालीन श्रीकृष्ण से भी अजोगढ़ कोल का संबंध बताया जाता है । श्रीकृष्ण के समय में यह नगर ब्रजभूमि के कोर पर बसा होने के कारण "कोर" नाम से अभिहित हुआ । " रत्नयोरमेदः " के आधार पर "कोर" कालान्तर में कोल हो गया । एक विद्वदन्ति यह भी प्रसिद्ध है कि जब श्रीकृष्ण गारिका ने सम्राट् हो गए , उस समय ब्रजमंडल के दुःख को गाथा सुनाई । मित्र-मंडलों के आग्रह पर श्रीकृष्ण ने "कोर" में नृत्यकला केन्द्र की स्थापना की । पहले एक बड़ा गढ़ कोटा बनाया गया और उसके मध्य एक कला-केन्द्र स्थापित किया गया । जब गढ़ के नामकरण का प्रश्न उठा तो श्रीकृष्ण ने इसका नाम अजोगढ़ -राधिका के साथ जोड़कर , अजोगढ़ रखने का प्रस्ताव दिया , जो सर्व स्वीकार कर लिया गया । तदनुसार वह नृत्यकला केन्द्र "अजोगढ़" के नाम से प्रख्यात हुआ जिसका विकसित रूप "अजोगढ़ " है ।

एक किंवदन्ति यह भी है कि इस क्षेत्र के कोल्हापुर नामक ब्राह्मण अतुर के अत्याचारों से पीड़ित जनता के रक्षार्थ श्रीकृष्ण के भाई बलराम ने उसका पथ किया था जिसके फलस्वरूप यह स्थान "कोल" के नाम से पुकारा जाने लगा। अलीगढ़ जनपद में स्थित हरदुआगंज, रामघाट, तथा बैरगवर का मन्दिर आदि इस घटना की पुष्टि करते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि अलीगढ़ जनपद में दाऊ जी अथवा बलराम के अनेक मन्दिर हैं और बलराम जी यहाँ के निवासियों के आराध्य रहे हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से इस स्थान का नाम कौशाम्बी था। यहाँ कौशाम्बी नामक चन्द्रवंशी राजा राज्य करते थे। बाद में अतुर राजा कोल ने कौशाम्बी को हटाकर इस स्थान का नाम "कोल" रखा। तीमर वंश के राजाओं तथा कुतबुद्दीन ऐबक के पतन के बाद मराठों ने इसका नाम "रामगढ़" रखा। मराठों के पतन के बाद मुगल शासकों ने इसका नाम पुनः अलीगढ़ कर दिया। सन् 1754 ई० में राजा सुरजमल जाट ने इसे जीतकर पुनः इसका नाम "रामगढ़" कर दिया लेकिन सन् 1773 ई० में मुगल शासक नज़क ख़ाँ ने इसपर अधिकार करके इसे फिर से "अलीगढ़" नाम दिया।

सिंधिया शासन के बाद सन् 1803 में अंग्रेजों ने अलीगढ़ में सन् 1805 ई० में मिस्टर रसल को यहाँ का प्रथम न्यायाधीश नियुक्त किया उसने यहाँ एक सैनिक न्यायालय की स्थापना की। बाद में तत्कालीन जिलाधीश "लायल" के नाम पर इस न्यायालय को "लायल पुस्तकालय" में बदल दिया गया। इस पुस्तकालय के मुख्य द्वार पर लगे सन् 1809 के जिलाई के विषय में बताया जाता है कि श्री बाबू तोता राम जी ने इस पुस्तकालय की आधार-शिला रखी थी। आज यह "मालवीय पुस्तकालय" के नाम से प्रसिद्ध है।

सन् 1858 ई० में यहाँ पहला तहसीली स्कूल बना। सन् 1872 में कलकट्टे और कयहरी का निर्माण हुआ। सन् 1870 ई० में तत्कालीन गवर्नर लार्ड लिटन ने "मोहम्मदन एंग्लो ओरिएंटल कालेज" का शिलान्यास किया। इस कालेज के प्रथम प्रधानाचार्य मिस्टर डेक थे। यह कालेज सन् 1905 ई० तक कलकत्ता वि०वि० से संब० था आगे चलकर सन् 1920 ई० में इसी संस्था को विश्वविद्यालय

को मान्यता प्राप्त हुई। आज यह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के नाम से प्रख्यात है। इसके संस्थापक सर सैयद अहमद साँ थे।

1.2 अलीगढ़ जनपद की भौगोलिक स्थिति, समाज और जन-जीवन

उत्तर प्रदेश में स्थित अलीगढ़ जनपद गंगा और यमुना के मध्य बसा एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक जनपद है। यह $27^{\circ}29'$ से $28^{\circ}11'$ अक्षांस उत्तर और $77^{\circ}29'$ से $78^{\circ}38'$ देशान्तर पूर्व में स्थित है। इसका क्षेत्र लगभग 3,150 वर्ग किलोमीटर है। यह समतल भूमि पर स्थित है। इसका क्षेत्र लगभग सर्वत्र समतल भूमि पर स्थित है। इस जनपद के उत्तर में अनूपशहर और सूरज तालाब, पश्चिम और दक्षिणपूर्व में एटा जनपद है।

अलीगढ़ जनपद की जलवायु मुख्यतः समशीतोष्ण है। प्रमुख रूप से जनपद में गर्मी, बरसात, और सर्दी तीन हो चुकी होती है। मार्च से जून तक गर्मी की ऋतु रहती है। इसके बाद वर्षा ऋतु जोलाई से अक्टूबर तक तथा नवम्बर से मार्च तक सर्दी का मौसम रहता है। इस जनपद में लगभग 25 ईश्वर वर्षा होती है। वर्षा ऋतु के मौसम के अलावा भी गर्मी तथा सर्दी के दिनों में वर्षा होती है।

इस जनपद की जन संख्या सन् 1848 ई. से 7,39,356 और सन् 1901 में 12,00,822 थी। गत 76 वर्षों में इस संख्या में लगातार वृद्धि हुई है।

सन् 1951 में यह जनसंख्या 15,43,506 थी। सन् 1981 की जनगणना के अनुसार यहाँ जनसंख्या लगभग 25.75 लाख हो गई है। अलीगढ़ जनपद की ग्रामीणी जनसंख्या 19.83 लाख तथा शहरी जनसंख्या 5.92 लाख थी। आजकल जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

अलीगढ़ देश के अन्य भागों से रेलों और सड़कों से जुड़ा है। इसकी दो प्रमुख सड़कें हैं : ग्राण्ड ट्रंक रोड और आग्रा रोड। ग्रांड ट्रंक रोड पंजाब से आकर इस जनपद में प्रवेश करके आगे एटा होकर कलकत्ता तक जाती है। उत्तर

और पूर्वोत्तर रेलवे इसे देश के विभिन्न भागों से जोड़े हुए है। जनपद में हावरस एक जंक्शन है जहाँ से होकर छोटी लाइन गुजरती है। ये लाइन जनपद के दक्षिण और पश्चिम की ओर जाती है। अजोगढ़ जनपद की रीढ़वेज बसे भी यातायात का प्रमुख साधन है। मुख्य रीढ़वेज मार्ग ये है : अजोगढ़ से एटा ; अजोगढ़ से आगरा मथुरा.; अजोगढ़ से बरेली, रामपुर, मुराबाद आदि तथा अजोगढ़ से हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली आदि। रेलों के माध्यम से यह बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान आदि से जुड़ा है और यहाँ से माल और यातायात होता है।

इस जनपद को बड़ी नदियाँ हैं : गंगा और यमुना और छोटी नदियाँ हैं : काजी नदी, नोम नदी, सतवाँ नदी, बोया नदी, सैमुर नदी, कर्दन नदी। इन नदियों के प्रवाह से यह उर्वर बना हुआ है। यहाँ की उर्वरता में गंगा नहर, माँट शाखा, हावरस शाखा, अनूपशहर शाखा और जोवर गंगा शाखा आदि नहरों का बड़ा सहयोग है। इन नहरों के अलावा कुँई, नज्कूप, रहट, टैंकुली और ताजाब आदि इसकी भूमि को और उपजाऊ बनाते हैं।

अजोगढ़ जनपद को ये छह तहसीलें हैं :

1. कोत, 2. छेर, 3. इगलास, 4. हावरस, 5. सिकन्दराराज तथा 6. अतरौली।

इस जनपद के ये 17 विधान-क्षेत्र हैं :

1. धनोपुर, 2. जोधा, 3. इगलास, 4. अतरौली, 5. गंगोली, 6. सिकन्दराराज, 7. बिजौली, 8. ल्हायन, 9. अकराबाद, 10. सासनो, 11. गौला, 12. छेर, 13. पंढौस, 14. मुरसान, 15. जवाँ, 16. टप्पल और 17. हावरस।

आधार ग्रंथ :

1. अजोगढ़ का शैव राजनैतिक इतिहास, दितामणि शुक्ल, पृ. 2
2. अजोगढ़ जनपद के जनकवि : हेमचंद्र नागर तथा साहबसिंह मेहरा, पृ. 15। अकाशित तपु शोध प्रबंध, इरवेन्द्र पाल सिंह
3. हिन्दो विश्व गैस, से 36।, डा. धारेंद्र वर्मा, पृ. 247

1.3 समाज और जन-जोवन

इस जनपद में हिन्दू-मुस्लिम, सिद्ध, जैन, बौद्ध और ईसाई आदि धर्मों के लोग रहते हैं। इन सबमें अधिक संख्या हिन्दुओं की है। दूसरे स्थान पर मुसलमानों की संख्या आती है। चारों वर्णों के लोग हिन्दुओं में निवास करते हैं। यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी वर्णों और जातियों के लोग रहते हैं। ब्राह्मणों की अनेक जाति-उपजातियाँ जैसे - गौड़, सारस्वत, मैथिल, कान्यकुब्ज तथा गौतम आदि यहाँ के विभिन्न भागों में रहती हैं। एक समय ब्राह्मणों की बड़ी-बड़ी जमोदारियाँ थीं। इनमें लाखनऊ के ब्राह्मणों की जमोदारी विशेष प्रसिद्ध है।

राजपूतों की अनेक उपजातियाँ इस जनपद में निवास करती हैं। जादों राजपूत सम्पूर्ण जनपद में मिलते हैं। अलीगढ़, छैर, सिकन्दराराऊ व अतरौली तहसीलों में ये विशेष रूप से निवास करते हैं। छौकर, जसवार, किरार, राजपूतों का भी यह जनपद विशेष निवास-स्थान है। चौहान छैर, सिकन्दराराऊ और अलीगढ़ तहसीलों में बसे हुए हैं। साहीली, अकराबाद और विजयगढ़ में पहले इनकी बड़ी-बड़ी जमोदारियाँ थीं। बड़गुजर राजपूत अतरौली, सिकन्दराराऊ और अलीगढ़ तहसीलों में रहते हैं। तोमर राजपूत हाथरस और इगलास तहसीलों में मिलते हैं। जंधार राजपूतों का निवास स्थान मुख्य रूप से इगलास तहसील है। इसी तहसील में पेंवार राजपूत भी रहते हैं।

उपर्युक्त राजपूत जातियों के अतिरिक्त यह जनपद सौलंकी, कछवाहा, राठौर आदि राजपूतों का जन्म और कर्म-भूमि रहा है। जाटों की भी अपने गौरवशाली इतिहास पर गर्व है। ओझों की प्रभुसत्ता स्थापित होने से पहले हाथरस और मुरसान में इनकी बड़ी-बड़ी जमोदारियाँ थीं। जाट अधिकतर छैर, इगलास और हाथरस तहसीलों में हैं।

वैश्य समाज सम्पूर्ण जनपद में बिखरा हुआ है। हाथरस और अलीगढ़

व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहाँ इनका बाहुल्य है। जनपद में वैश्य समाज अधिकतर व्यवसायी और व्यापारी है। यहाँ अग्रवालों और बारह सैनो बनियों को संख्या अधिक है। वार्ष्णेय, छण्डेलवाल, चौसेना, जैसवाल आदि अनेक उप-जातियों के वैश्य भी यहाँ निवास करते हैं।

अलीगढ़ जनपद में अनुसूचित जातियों के लोग भी आरंभ से हो रहे हैं। इन जातियों में जाटव और बास्मो+ हरिजन विशेष उल्लेखनीय हैं। जनपद की पिछड़ी जातियों में - गढ़रिया, कहार, काछी, नाई, उटोक, कढ़ई, धोबी, बैरागी और मिश्रक आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

अलीगढ़ जनपद में मुसलमानों का भी उल्लेखनीय स्थान है। मुसलमानों को दोनों प्रधान शाखाएँ - शिया और सुन्नी - यहाँ सताब्दियों से रह रही हैं। मुसलमानों में शेख, सैय्यद, मुगल और पठान प्रमुख हैं। शेखों को कुरेशी, सिद्दीकी, फारूकी, अन्सारो, अ उस्मानो, खुर्रासानो आदि शाखाएँ हैं। पठानों में गौरो, फ़ुफ़्फ़ाई, शेरवानो, लोदो आदि और सैय्यदों में रिज़वी, नक्वी, ज़ैदो आदि हैं। मुसलमान तेजो, भिस्तो, कसाई, मेवातो और जुलाहे, मोनिहार, फकीर आदि जनपद भर में बसे हैं।

ईसाई भी पर्याप्त संख्या में जनपद के विभिन्न भागों में बसे हैं। सर्वप्रथम सन् 1837 ई. में यहाँ क्राइस्ट चर्च की स्थापना हुई थी। ईसाइयों ने अपने सेवा-भाव से पिछड़े और दलित जातियों के लोगों को अपने धर्म की ओर आकर्षित किया। इन जातियों में से बड़ी संख्या में लोग ईसाई बनते गए।

इस जनपद में विभिन्न धर्मावलंबी लोग सदियों से रहते चले आ रहे हैं। सारे अलीगढ़ जनपद में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति का संगम मिलता है। अंग्रेजी शासन-क्षेत्र, प्रतिक्रियावादो और साम्प्रदायिक शक्तियों ने हिन्दू और मुसलमानों में कटुता पैदा करने के अनेक प्रयत्न किए हैं। आज इनके आपसी संबंधों में राज-नीति भी कटुता उत्पन्न करने का सतत प्रयास कर रही है। विन्तु देश की

आज़ादी , राष्ट्रिय भावना और संयुक्त निर्वाचन-पद्धति ने इनके सौहार्द और बन्धुत्व को बराबर बनाया है ।

हिन्दुओं में प्राचीन, मध्यकालीन और अर्वाचीन अनेक मन्दिर और देवस्थान जैसे - अचल सरोवर और जूसे के चारों ओर निर्मित मन्दिर गिलहराज, छैरेश्वर महादेव मन्दिर, मंगलेश्वर मन्दिर , दिगम्बर जैन मन्दिर , रामलाला स्थल आदि हिन्दू संस्कृति के प्रतीक बने हुए हैं ।

इस जनपद में मुस्लिम संस्कृति के प्रतीक ईदगाह, विशाल जामा मस्जिद और अनेक मस्जिदें, दरगाह शाहकमाल, आधी मस्जिद अठखम्बा शाही, मज़ार शेख दाऊद, कुतुबशाह का मकबरा, बर्खा बहादुर का दरगाह, मुस्लिम विश्वविद्यालय में सिधत सर सैय्यद अहमद खाँ का मकबरा आदि उल्लेखनीय हैं ।

इस जनपद में तहसीलों और गाँवों में हिन्दू-मुस्लिम जातियों के विभिन्न सांस्कृतिक मेलों के चलन हैं । हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई सब आपस में बिना भेद-भाव के मेलों में हर्ष-उल्लास के साथ भाग लेते हैं ।

अन्य जनपदों को भाँति अलोगढ़ जनपद का सामाजिक जीवन भी अभी तक अंधविश्वासों और रूढ़ियों से ग्रस्त है किन्तु औद्योगिक विकास और शिक्षा-प्रसार के कारण शहरी लोगों में काफी सुझबुझ आ गई है । गाँव के लोगों पर भी इसका प्रभाव पड़ता जा रहा है । शिक्षा-प्रसार के लिए इस जनपद में एक विश्व-विद्यालय के अतिरिक्त कई डिग्री कालेज, अनेक इण्टर कालेज, जूनियर तथा प्राइमरी विद्यालय मौजूद हैं । अन्य जिलों को भाँति इस जनपद को भी ब्रज-संस्कृति का केन्द्र होने का गौरव मिला है । किन्तु दोषकाल तक मुस्लिम शासकों के अधिकार में रहने तथा इस्लामी शिक्षा का गढ़ होने के कारण यहाँ इस्लामी शिक्षा का तथा संस्कृति का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है ।

अलोगढ़ जनपद के धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन को स्पष्ट ढाँचा यहाँ

के पर्वों और मेलों में देखने को मिलते हैं। इनके कुछ उदाहरण हैं - रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, दशहरा, दोषावली, शिवरात्रि, होली, ईद, मोहर्रम, प्रवाहरवफास। देवछट, महावीर जयन्ती, गुरु गोविन्द सिंह स्मृति दिवस, तुमाइस आदि के अवसरों पर जिले में विभिन्न स्थानों पर मेले, तमाशों और विशाल जुड़सों का आयोजन किया जाता है। ये पर्व, मेले और तमाशे इस जनपद के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन को निरन्तर सरस बनाए रखते हैं।

1.4 अलोगढ़ जनपद की आर्थिक स्थिति

आर्थिक दृष्टि से इस जनपद के लोगों को भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ हैं। जनपद के लोगों का मुख्य आधार खेती और उससे जुड़े व्यवसाय हैं। यहाँ के लोगों को मुख्यतः पाँच श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

1. कृषक
2. छेतीहर मजदूर
3. लघु एवं ग्रामीण उद्योग-धंधे
4. बड़े उद्योगपति या व्यवसायी
5. अन्य व्यवसायी लोग - सरकारी कर्मचारों, शहरी मजदूरों और वकील आदि।

कृषकों की आर्थिक स्थिति अब काफी सुधर गई है किन्तु छेतीहर मजदूरों की आय बहुत कम होने के कारण उनकी स्थिति में सुधार नहीं हो पाया है। देखा जाए तो कुछ-कुछ बदलाव आ रहा है। तीसरे प्रकार के लोगों के रहन-सहन की भी साधारणतया सही नहीं कहा जा सकता। बड़े-बड़े उद्योगपतियों और व्यापारियों की स्थिति बहुत अच्छी है। पाँचवीं श्रेणी के लोगों की आर्थिक दशा मध्यम प्रकार की है। इनमें शिक्षा प्रसार अधिक है। ये अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के प्रयास लगातार करते रहते हैं।

निस्सन्देह अलोगढ़ जनपद वस्तुतः हमेशा से एक महत्वपूर्ण स्थान

रहा है । आज भी अपने प्रदेश में इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । यह जन्मद निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है । भारत सरकार प्रेस , सैन्ट्रल डैरो फार्म, ग्लैक्सो लेबोरेटरीज, प्रोमियर इन्फैमिल वर्क्स, इन्डियन इम्प्लोमेंट्स , इंडियन डार्ड कास्टिंग्स, टाइगर लॉक्स, गोपो वनस्पति, प्राग आइस मिल्स, गाँधी नैत्र चिकित्सालय, अलोगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, जवाहर लाल मैडिकल कॉलेज आदि सुप्रसिद्ध संस्थान इसके गौरव और चहुँमुखी विकास के परिचायक हैं । अलोगढ़ में दूरदर्शन केन्द्र और आकाशवाणी का विदेशी प्रसारण केन्द्र भी है । यहाँ एक हवाई पट्टी का निर्माण भी हुआ है ।

यह एक अकाद्य सत्य है कि अलोगढ़ भविष्य में उत्तर प्रदेश के अति विशिष्ट स्थानों में अग्रणी हो जाएगा । अभी भी अलोगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कारण यह विश्व उपाधि प्राप्त है ।

जनपद अलीगढ़ एक नजर में

1. जनसंख्या (1981 की गणनानुसार)	25.75 लाख	19. 1704	गावों की संख्या जहाँ शुद्ध पेयजल उपलब्ध है	1704
(अ) ग्रामीण	19.83 लाख			
(ब) नगरीय	5.92 लाख			
2. भौगोलिक क्षेत्रफल	5019 वर्ग कि.मी०			
(अ) कृषि योग्य क्षेत्रफल	3.90 लाख हैक्टेअर			
(ब) सिंचित क्षेत्रफल	3.64 लाख हैक्टेअर			
3. तहसील	6			
4. विकास खण्ड	17			
5. ग्राम सभा	1498			
6. गाँवों की संख्या	1704			
7. न्याय पचायत	171			
8. नगर पालिका	5			
9. नगर क्षेत्र समिति	14			
10. प्रमुख उपज	गेहूँ, गन्ना, आलू, चना मटर			
11. कुल खाद्यान्न उत्पादन	10.33 लाख मीट्रिक टन			
12. प्रमुख उपजों का उत्पादन				
(अ) गेहूँ	28.81 कुन्टल प्रति हैक्टेअर			
(ब) चना	13 " "			
(स) मटर	15.43 " "			
13. गन्ना—(क) क्षेत्रफल	16850 हैक्टेअर			
(ख) उत्पादन	77.93 लाख कुन्टल			
14. प्रमुख सिंचाई साधन	नहर राजकोय/निजी नलकूप, पंप सैट			
15. नहरों की लम्बाई	908 किलोमीटर			
16. नलकूपों की संख्या	31185			
राजकीय नलकूप/निजी नलकूप	751/30434			
16. प्रमुख उद्योग	ताला एब हाईवेयर			
17. प्रमुख हस्तशिल्प	पीतल की मूर्ति, कालीन व मूर्ति निर्माण			
18. मंडको की कुल लम्बाई	1883 किलोमीटर			
(क) सार्वजनिक निर्माण विभाग	1050			
(ख) ग्रामीण सड़क व अन्य	833			
19. गावों की संख्या जहाँ शुद्ध पेयजल उपलब्ध है	1704			
20. विद्युत्तित्कृत ग्रामों की संख्या	1633			
21. विद्युत्तित्कृत हरिजन वस्तियाँ	438			
22. जूनियर वैसिक स्कूल	1432			
23. सीनियर वैसिक स्कूल	375			
24. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	145			
25. महाविद्यालय	6			
26. निम्न विद्यालय	1			
27. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	3			
28. पौनीटैक्नीक	2			
29. मारक्षणा प्रतिष्ठान (वर्ष 1981 के अनुसार)	31 34 प्रतिष्ठान			
30. मेडिकल कॉलेज	1			
31. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	54			
32. ऐलोपैथिक चिकित्सालय	81			
33. होम्योपैथिक चिकित्सालय	07			
34. आयुर्वेदिक चिकित्सालय	29			
35. यूनानी चिकित्सालय	05			
36. पशु चिकित्सालय	38			
37. वन क्षेत्र	970 हैक्टेअर			
38. रेलवे स्टेशन हॉल्ट सहित	21			
39. रेलवे लाइन की लम्बाई	106 किलोमीटर			
(क) बड़ी लाइन	62			
(ख) छोटी लाइन	58			
40. कुल डाकघर	90			
41. राष्ट्रीयकृत बैंक शाखा	89			
42. ग्रामीण बैंक	17			
43. सहकारी बैंक	7			
44. भूमि विकास बैंक	706			
45. मरकाजी सस्ते गन्ने की दुकान	30			
46. पुलिस स्टेशन कुल	अज्ञात			

अज्ञात विभाग, अलीगढ़, ०.५.०५, 19००-०५
पृ. ३-९ (६)

द्वितीय - अध्याय

राष्ट्रीय आन्दोलन और आन्दोलन के विकास

- 2.1 आन्दोलन की भूमिका
- 2.2 प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम सन् 1857 ई०
- 2.3 अलीगढ़ जनपद अखिल भारतीय आन्दोलन और खिलाफत आन्दोलन
- 2.4 नमक सत्याग्रह 1930 ई०
- 2.5 अलीगढ़ का दमन - चक्र सन् 1932 ई०
- 2.6 व्यक्तिगत सत्याग्रह सन् 1940 - 41 ई०
- 2.7 भारत छोड़ो आन्दोलन सन् 1942 - 45 ई०
- 2.8 अलीगढ़ जनपद के राष्ट्रीय नेता और राष्ट्रीय शहीद

- - - - -

राष्ट्रीय आन्दोलन और अलीगढ़ जनपद :

भूमिका :- अलीगढ़ जनपद पौराणिक काल से भारतवर्ष का उपाधि प्राप्त

क्षेत्र रहा है। यह जनपद ब्रजप्रदेश का किनारा अथवा कोर कहा जाता है रहा है। यहाँ की उर्वरा भूमि ने संस्कृति साहित्य और राजनीति में अनेक आयाम जोड़े हैं प्रथम भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर भारत के स्वतंत्र होने तक जनपद के देशप्रेमियों ने अपने बलिदान और त्याग के द्वारा इस जनपद का नाम ऊँचा किया है। महात्मा गाँधी के भारतीय राजनीति के क्षितिज पर उदय होने के बाद यह जनपद अत्यन्त सक्रिय हो गया था और लगभग सभी बड़े राष्ट्रीय आन्दोलनों में यहाँ के देशप्रेमियों ने अपना विशेष योगदान दिया है।

इन आन्दोलनों में से कुछ का विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सन् 1857 ई०

सन् 1857 ई० में अलीगढ़ शहर की आबादी एक परकोटे के अन्दर थी और इस परकोटे में दो खिड़कियाँ थीं। इसका एक दरवाजा पूर्व की ओर खुलता था जिसे मदार दरवाजा कहते थे मदार इसलिए कि इसके आसपास मदार {आक} के बहुत से पेड़ थे और इसी के पास मदारी {शिव} का पिनाल मन्दिर भी था। सन् 1857 ई० में अंग्रेजों ने मदार दरवाजे की प्रतिमा ध्वस्त करके ध्वज की फाँसी पर लटका दिया था और इसकी कब्र को उन्होंने कई बार खुदाया। इससे अलीगढ़ की जनता में भारी आक्रोश हुआ और यह भी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह का एक कारण बना। दूसरा कारण अलीगढ़

में नील के व्यापार को लेकर रेतवे लाइन पर लदान होने के कारण अंग्रेजों ने कुछ नियन्त्रण लगाये और माल को उंटों पर ले जाने पर नियन्त्रण लगा दिया। इससे व्यापारियों को हानि हुई। तन् 1854 ई० में अंग्रेजों ने कड़ीबहादुर की कब्र को नष्ट करके रेतवे लाइन निकालना। जिसके कारण यहाँ की जनता में आक्रोश बढ़ा। अंग्रेजों ने बन्नादेवी मन्दिर को भी छुड़ा दिया था और इससे हिन्दू जनता उनके विरुद्ध कड़ी हो गयी थी।

एक और कारण वर्तमान जामामस्जिद के सामने से सोने और तेबरात के कारीवार की जयगंज के सराफा बाजार में भेज देना और मस्जिद के सामने कीतवाली तहसील का भवन निर्माण कराना। इससे यहाँ की जनता को बड़ी असुविधा हुई और अंग्रेजों से दुश्मनी मानने लगे। अंग्रेजों ने तुर्कमान दरवाजे के तुर्क सरदारों को बन्दी बनाकर फाँसी दे दी इससे भी यहाँ की जनता उनसे खिलाफ हो गयी। अंग्रेजी सरकार ने यहाँ के कसाइयों के माँस, चमड़ा आदि के व्यापारों को हानि पहुँचाने का प्रयास जिससे वह लोग भी उनके विरुद्ध हो गये।

भैरठ से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के आरम्भ होने पर अलीगढ़ में भी इस विद्रोह का स्वर दिखाई पड़ा। 17मई को बर्लटन नामक अंग्रेज अधिकारी का बंगला जला दिया गया। 19मई को नारायण नामक ब्राह्मण के एक विवाह के अवसर पर चार पलटन के सिपाईयों ने उन्हें बर्लटन के बंगले की आग लगाने की बात कहते सुना तो बर्लटन के सैनिकों ने बन्दी बना लिया और 20मई को उन्हें फाँसी दे दी गयी। इसी के फलस्वरूप पलटन के सैनिक नाराज हो गये और परेड में एक सैनिक ने कड़ी उतारकर फेंक दी और उसे स्वर में कहा खुदा हों भी फाँसी दिला। इससे सम्पूर्ण जनपद में क्रान्ति की लहर फैल गयी। 9वीं पलटन ने कौन्सी बासन के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया उन्होंने कयहरी, डालखाने और सरकारी खजाने आदि को लूटा तथा जलाया गया। ग्वालियर की छुसवारी

की सुरक्षा में अलीगढ़ के अंग्रेज अप्सरों और उनके परिवारीजनों को हाथरस पहुँचा दिया गया । केवल दो बर्क मिस्टर कोनर और बलाइन के परिवार यहाँ रह गये जिन्हें 22 मई को सातनी के समीप समामयी नामक गाँव में जाकर अपनी जान बयानी पड़ी । इसी यहाँ मिस्टर न्यटरलेन का परिवार भी मिल गया और भेवातियों ने उन पर हमला करके न्यटरलेन के बेटे को मार डाला । इस आन्दोलन की लहर हाथरस में भी पहुँच गयी और ब्रिज कौकबर्न ने झाड़ी में छिपकर 48 क्रान्तिकारी देश भक्तों को मार डाला । इसके बाद यह हाथरस की सड़कों पर गस्त लगने लगा । हाथरस के राजा गोविन्द को चौड़े दिन के लिए राजा के अधिकार दे दिये थे क्योंकि इसने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति में भाग नहीं लिया था । परन्तु दयाराम के किले के क्रान्तिकारी कीरों का पड़ाव हाथरस किले में बहुत दिनों तक रहा । ये तिली अथवा क्रान्तिकारी हाथरस में आये और उन्होंने अंग्रेजों की टोपी कुछ उछानी । इसी के आधार पर यह जनगीत प्रचलित हुआ ।

“फिरंगी लुट गयी रे, गोरा लुट गयी रे, हाथरस के बाजार में -”

इसी दौरान भर तहसील के देशभक्त राय गोपालसिंह को भी अंग्रेजों ने फाँसी लगा दी जिससे भर में आक्रोश बढ़ता चला गया । यहीं पर बिहारी [धमार] भेदा [रामनगर का ब्राह्मण] धर्मा [रामनगर का जाट] ने नाठी और तलवार से सेमुल नामक अंग्रेज को मार दिया इस समय अंग्रेजों का पुतु नामक सेवक भी अंगना ने मार डाला था । जिसमें अंगना को मृत्यु दण्ड मिला, धर्मा, भेदा, भेदा [नाम्न] को भी फाँसी दे दी गयी थी ।

5 जून को सातवें छुटवार सेना ने विदेशी शासन के सैनिकों को लूटा 21 जून को अलीगढ़ के कलक्टर ने मइराक की न उजड़ी हुई फैक्टरी में शरण ली । 30 जून को कोल अथवा अलीगढ़ में क्रान्तिकारी मुसलमानों ने तत्कालीन हरे ब्रि

को उठाकर यह जपथ ली थी कि ये अंग्रेजों को भगाकर ही घेन लेगी । 2 जुलाई को मड़राक पर देशभवतों का आक्रमण हुआ इतने 15 देशप्रेमी महीद हुए । वाटसन और उत्का चौड़ा दोनों बुरी तरह से घायल हुए । इतने एक दिन पूर्व ग्वालियर की छुटसवार सेना ने हावरत के विदेशी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसके कारण थैलेबेण्डर को हावरत से आगरा भागना पड़ा ।

वाटसन जब आगरा की ओर भाग रहा था तो रास्ते में उसके दो साथी मि० मार्क और मि० टाण्डी मारे गये आगरा जाकर वाटसन की हेजे से मुठभु हो गयी । इगलास के देशप्रेमी जाटों ने गहलऊ निवासी अमानी जाट के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम को सक्रीय बना दिया इन्होंने इगलास पर आक्रमण किया और यहाँ के तहसीलदार को मुरतान भागने के लिए बाध्य किया । बल्टन ने आकर इन्का सामना किया और अमानी जाट को अन्त में फौसी दे दी गयी ।

अकराबाद में महताबसिंह व मंगलसिंह ने स्वतन्त्रता संग्राम को शक्ति-शाली बना दिया । अतरीली में बड़गुजराँ ने अंग्रेजी सत्ता को समाप्त कर दिया और यहाँ के क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी जोइन्ट मजिस्ट्रेट मुहम्मद अली को तहसील के फाटक पर मार डाला । अलीगढ़ के देशभवत नसीमुल्ला खाँ ने सिकन्दराराऊ के देशभवत जमींदार गौस मुहम्मद खाँ को अलीगढ़ आने के लिए आमन्त्रित किया इन दोनों ने नायब सूबेदार की सन्द् प्राप्त करके अलीगढ़ में स्वतंत्र शासन की स्थापना की सन्द् के अधिकार प्राप्त करने के बाद नसीमुल्ला को गौस मुहम्मद खाँ का नायक बनाया गया महबूब खाँ तहसीलदार और हुसैन खाँ को कीतवाल का भार सौंपा गया ।

अलीगढ़ के पास मानसिंह बगीची पर 21 अगस्त को मेजर मोण्ट-गोचरी की सेना एकत्रित हुई इसने पहले हावरत पर अधिकार किया इसके बाद 24 अगस्त को अलीगढ़ के गौस मुहम्मद व मौलवी अब्दुल अजीम की देशभवत सेना

का सामना हुआ इस संघर्ष में अनेकों देशभक्त सैनानी स्वतन्त्रता की छेदी पर बलिदान हुए । इसी क्रान्तिकारी युद्ध में मौलवी अब्दुल अजीज और हुसैन काँ भेवाती शहीद हुए । अलीगढ़ जामा मस्जिद में शहीद वीर अब्दुल जलील इक़ रवं उनके साथियों की कब्र आज भी देशवातियों की स्वतंत्रता का सन्देश देती है ।

अलीगढ़ जनपद में असहयोग और क्लिप्त आन्दोलन

सन् 1921 - 22 में असहयोग आन्दोलन को अलीगढ़ में प्रगति देने वाले महानुभाव थे - श्री तत्तल्लुक अहमद शेरवानी, अब्दुल मजीद, ठा० मलबान सिंह, ठा० टोडरसिंह, मोहम्मद हाफिज उर्रमान, इन्द्रवर्मा, पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा और श्री तोताराम राठी आदि । इस अह असहयोग आन्दोलन के दौरान निषेधात्मक और निर्णयात्मक दोनों पक्षों के कार्यक्रम को अलीगढ़ में लागू किया गया । इस दौरान यहाँ भी विदेही माल का बहिष्कार, सरकारी विद्यालयों का त्याग, सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार किया गया । साथ ही साथ 1919 के व्यवस्थापिकाओं के चुनाव का बहिष्कार किया गया सरकारी उपाधियों को अस्वीकार किया गया सरकारी पदों से त्याग पत्र दिये गये सरकारी और अर्ध सरकारी उत्सवों में भाग नहीं लिया गया और भारतीय मजदूर और श्रमिकों को मेतौपाटामियों के युद्ध में भाग लेने से रोक़ा गया इसी दौरान कुछ राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना हुई । निजी पंचायतों का गठन हुआ । स्वदेश माल का प्रचार और हथकरघा उद्योग को प्रोत्साहन मिला और कुआड़ुत के विस्तृत एक आन्दोलन चलाया गया 28 नवम्बर सन् 1917 में पहली बार गाँधी जी का अलीगढ़ में आने पर स्टेशन पर स्वागत किया गया । स्टेशन के पास लायल लाइब्रेरी [मालवीय पुस्तकालय] के भेदान में दो हजार लोगों ने गाँधी जी के भाषण और हिन्दू मुस्लिम एकता के नारे लगाये उस समय गाँधी जी ने सरसपृथद को भी याद किया और उनकी उस बात पर बल दिया जिसमें उन्होंने हिन्दू-

मुस्लिम दोनों को भारतकोदो आँखें बताया ।

तन् 1917 में यहाँ प्रान्तीय कांग्रेस सम्मेलन हुआ इस सम्मेलन के अध्यक्ष प्रान्तीय कांग्रेस नेता मुंजी दंडवरीशरण थे । यह सम्मेलन दीवानी कचहरी के भेदान में हुआ और इसमें भाग लेने वाले मौलाना मुहम्मद अली, शीकतअली और गोविन्द बल्लभ पन्त आये । इसके बाद 12 अक्टूबर तन् 1920 को गांधी जी दूसरी बार आना हुआ और उन्होंने जामाअल्लाह के सामने भाषण दिया तथा अलीगढ़ विश्व-विद्यालय के पुनियन हाल में छात्रों को भाषण दिया । यहाँ पर ठाकुर अब्दुल मजीद की तदारत में गांधी जी की सभा का आयोजन हुआ । गांधी जी कुर्जापाड़ा में ठाकुर साहब की कंकड़ कोठी में रहे थे और वहाँ उन्होंने लगभग दो हजार महिलाओं की सभा को सम्बोधित किया । जयगंज में रमाशंकर यादव के भेतृप में बोहरे जी के मन्दिर में भी उनका स्वागत हुआ 23 नवम्बर 1920 को गांधी जी फिर अलीगढ़ आये जिसमें ठाकुर मजीद की कोठी पर तोताराम राठी, श्रीदयशर्मा और राजेन्द्र शर्मा आदि ने भाग लिया इससे कुछ दिनों में ही छात्रों में राष्ट्रीय भावना की लहर फैल गयी और इन छात्रों ने राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया, लक्ष्मीनारायण शर्मा, रघुवीर तहाय शर्मा, वासुदेवतहाय, धनीराम राम, गनपतलाल, तोताराम राठी, श्रीदय शर्मा आदि ।

अलीगढ़ से स्वराज आश्रम स्थानान्तरित होकर होने पर यहाँ विशेष उत्सवनीय कार्य हुआ जिसकी पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी तारीफ की थी । यहाँ ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु, मास्टर नारायणदास, चौधरी ग्याम बिहारी लाल, डा० किशन प्रसाद दास और विजय दयाल स्वराज आश्रमों के संघालन में बड़ा योगदान किया था ।

नागपुर कांग्रेस के समय कुछ व्यक्तियों ने अपनी कालत छोड़कर देशप्रेम का परिचय दिया इनमें से कुछ के नाम ये हैं श्री तसदुल अहमद शेरवानी, ठाकुर

अब्दुल मजीद, बाबू हनुमान प्रसाद माथुर और बाबू विश्वम्भर सहाय आदि । अलीगढ़ में ही अलीगढ़ नेशनल यूनीवर्सिटी और जामिया मिलिया की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी थी । गाँधी जी ने अपने अंग्रेजी पत्र "यंग इण्डिया" में 14 अक्टूबर और 25 अक्टूबर सन् 1920 को अलीगढ़ कालिख ट्रस्टियों के नाम और अलीगढ़ शीर्षक से दो पत्र लिखे । अहिंसात्मक स्वतंत्रता संग्राम की भावना स्पष्ट दिखाने पड़ती थी । 2 नवम्बर सन् 1920 को "यंग इण्डिया" में ही गाँधी जी ने अलीगढ़ के छात्रों के माता-पिताओं के नाम भी एक पत्र प्रकाशित किया । उसमें उन्होंने बताया कि विदेशी शासन आसुदी तत्वों से परिपूर्ण है और उसका बहिष्कार होना चाहिए ।

गाँधी जी के भावनाओं पर 550 छात्रों ने अलीगढ़ विश्वविद्यालय को छोड़ा इन्हीं से 350 छात्रों ने जामिया मिलिया में प्रवेश ले लिया उस समय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय शिक्षण संस्था माना जाता था । गाँधी जी मुस्लिम नेशनल यूनीवर्सिटी [जामिया मिलिया] बनाने की बहुत धिन्ता थी और उन्होंने डा० मोहम्मद इकबाल को इस संबंध में एक पत्र लिखा था उसमें उन्होंने हकीम अजमल खॉं और डा० अन्तारी का भी उल्लेख किया था ।

सन् 1911 में अलीगढ़ में भी असहयोग और खिलाफत आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया इसी समय स्वतन्त्रता संग्राम को गति देने के लिए गाँधी जी के अलावा मौलाना मुहम्मद अली, शीकत अली, सी०एफ० एण्ड्रूज, हकीम अजमल खॉं डा० अन्तारी आसफ अली, लाला शंकर दयाल आदि अलीगढ़ में आये थे । 5 अगस्त सन् 1921 को गाँधी जी अलीगढ़ तीसरी बार पधारि थे तभी श्री तसद्दुल अहमद खैरवानी को सरकार ने गिरफ्तार किया और अलीगढ़ कलक्टर लिडियड ने उन्हें अलीगढ़ जेल में न रखकर कहीं गुप्त रूप से रहने की योजना बनायी उन्हें फाँसी घर की छिड़की से रात में निकाला गया और एक हंजन और एक डिब्बे

लगी रेल में उन्हें दूसरे जेल भेजा गया । इस कार्य के लिए न रेलवे ने लिडियड ने 50 हजार रुपये की माँग की जिसके कारण उन्हें नौकरी से त्याग पत्र देकर अलीगढ़ से विदा होना पड़ा ।

5 जुलाई सन् 1921 को अलीगढ़ में मयंकनर बलवा हुआ जामा मस्जिद के सामने तहसील से भीड़ पर गोली बरसायी गयी जिसमें तात लोग शहीद हुए उस दुःख काण्ड से बेहद वेदना हुआ और उन्होंने सरकार को इस संबंध में जिम्मेदार ठहराया था । अलीगढ़ जनपद के प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को विदेशी सरकार ने नहीं छोड़ा । सन् 1921 से 1922 तक सर्वे श्री तसदुक् अहमद शेरवानी, डा० टोडर सिंह, डा० मल्लानसिंह, श्री उवाजा अब्दुल मजीद, श्री ज्वाला प्रताप जिन्नात, श्री तीताराम राठी, डा० धनीराम "प्रेम" अकतर अली, अल्लाह बख्श, करनसिंह [ग्राम सलीमपुर], टीकमसिंह [ग्राम पाली] निसार अहमद शेरवाली [डाक्टरेट के सुपरिण्टेण्डेन्ट पद से त्याग पत्र देकर ये सन् 1921 के स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे थे । तालिगराम, जोहरीमल [पुरदिलपुर] अय्यार अली [अतरोली] आदि गिरफ्तार हुए । इनको जेल और जुमानि की सजायें दी गई ।

लाला लाजपतराय अलीगढ़ में सन् 1905 और 1926 में वे दलित मानवता के उद्धार के लिए आये थे । जिस दिशा रमाशंकर याज्ञनिक मोहनलाल वर्मा, हनुमत्दा माधुर, इन्द्रमनो जाटव और चिरंजीसिंह सक्रिय थे । सन् 1922 में गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद देश अतहयोग आन्दोलन में दुःख वातावरण पैदा हो गया था उस समय सर्वश्री चितरंजनदास, मोतीलाल नेहरू, हकीम अजमलखान और बिदुधन भाई पटेल आदि गण्यमान नेताओं ने । जनवरी सन् 1923 में "स्वराज्य दल" की स्थापना की । आगरा, मथुरा और अलीगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से स्वराज्य दल की ओर से सुन्दासन के श्री नारायणदास बी०ए० प्रत्यासी बने ।

सन् 1923 विदेशी सत्ता ने तिरंगे झण्डे का अपमान किया इसके विरोध में अलीगढ़ से 40 सत्याग्रहियों का एक जत्था डा० टोडरसिंह के नेतृत्व

में नागपुर गया था इन सत्याग्रहियों में सर्वश्री गंगासिंह {कदमपुर तिकन्दराराऊ} श्री टक्कमलाल शर्मा {यन्डोत}, केमसिंह नागर {नगला पदम}, ग्योदानसिंह {कजरोठ}, नत्थनसिंह, मेमसिंह, नेमसिंह, शेरसिंह व गोपालदास पारासर आदि नाम उल्लेखनीय हैं। 2मई तन् 1923 को नागपुर में 144 दफा तोड़ने पर इन्हें सवा दो महीने का जेल दण्ड मिला। तन् 1925 में कांग्रेस सम्मेलन कानपुर में हुआ जिसमें अलीगढ़ से ठाऊ मलखानसिंह के नेतृत्व में आठ या नौ स्वयंसेवकों का जत्था कानपुर गया था। इसके बाद तन् 1927 में पी० गोविन्द बल्लभ पन्त के सभापतित्व में अलीगढ़ में प्रान्तीय कांग्रेस सम्मेलन का आयोजन किया गया इस सम्मेलन की सफलता के लिए सर्वश्री मलखान सिंह, ठाऊ टोडरसिंह, श्री ज्वालाप्रसाद जिजासु और ठावाजा अब्दुल मजीद आदि ने बड़ा परिश्रम किया था।

तन् 1927 - 28 में विदेशी सरकार ने साहमन कमीशन बनाया इसके सभी सदस्य गोरे थे इस साहमन कमीशन का राष्ट्रीय दलों ने बहिष्कार किया और जहाँ भी यह कमीशन गया वहाँ पर काले झण्डे दिखाये गये अलीगढ़ में भी इसके विरोध में प्रदर्शन एवं सभाएँ हुईं इन सभाओं, कांग्रेस के नेताओं ने अपना असन्तोष प्रकट किया। तन् 1928 में सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी सरदार भगतसिंह फरार होकर देश भ्रमर श्री टोडरसिंह के गाँव मादीपुर अलीगढ़ में रहे। जी। सरदार भगतसिंह ने अपना नाम बदलकर बलवन्तसिंह रख लिया था और यहाँ पर इन्होंने शेरसिंह और नत्थन सिंह जी के क्रान्तिकारी संगठन सम्बन्धी कार्य किया था। 31 जनवरी तन् 1929 को कांग्रेस ने स्वतन्त्रता प्रस्ताव की अलीगढ़ के देश भ्रमरों में एक नवीन उत्साह उत्पन्न कर दिया। 26 जनवरी तन् 1930 को सारे देश में प्रथम स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। अलीगढ़ में भी उत्साह और राष्ट्रीय जोश के साथ मनाया गया।

नमक सत्याग्रह सन् 1930 ई०

अलीगढ़ में 6 अप्रैल सन् 1930 की शाम को कृष्णदत्त पालीवान ने एक सभा का आयोजन किया और उसमें तय किया गया कि आगरा में स्वयंसेवकों की टोलियाँ जायेंगी और बाद में बाकी चार जन्मदों के स्वयं सेवक भाग लेंगे। डा० मलखान सिंह ने इस काम में आम में घी डालने का काम किया डा० डी डी टोडरसिंह के निवास स्थान में सत्याग्रह आश्रम खोला गया श्री मदनलाल प्रेमी और दददा चिन्नलाल ने अनाज कपड़ा आदि की व्यवस्था की थी। इस सत्याग्रह आन्दोलन में महिलाओं ने भी भाग लिया इसी सिलसिले में युन्नीलाल और उनके दोनों पुत्रों त्रिविक्रम और बनारसीदास को जेल भेजा गया। कम्पनी बाग में नमक कानून को धराधर तोड़ा जाता रहा डा० टोडरसिंह और रमाशंकर याज्ञनिक ने नमक बनाने का प्रयास किया किन्तु नमक न बन पाने का कारण उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जा सका, इसमें आठवीं कक्षा के छात्र पुस्तोत्तमदास ने प्रमुख भाग लिया इन पर तथा अन्य पुष्क छत्रों पर पुलिस की मार पड़ी। सरकारी हाईस्कूल पर झण्डा फहराने की घटना में रमाशंकर याज्ञनिक को गिरफ्तार किया गया इस प्रकार नमक सत्याग्रह का अलीगढ़ पर पुरा प्रभाव पड़ा।

सन् 1930 में संसद के प्रसवता बिठल भाई पटेल अलीगढ़ आये और इसी समय लाल कुर्तीदल के महा नेता सरहदी गाँधी बान अब्दुल गफ्फार खान भी अलीगढ़ आये इनका मावज बहुत ही उत्तेजक था इन्होंने कहा अगर हम सब भारतवासी गये भी होते तो अंग्रेज हमें काबू न कर पाते। कैसी शर्म की बात है कि हम आदमी होकर भी गुलाम बने हुए हैं। इसी समय केर निवासी राधाचरण पुलिस के अत्याचारों से धिंदी शासन का कदतर विरोधी बन गया जिसे धर्मसमाज के बर्तीत छात्रों ने राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लिया इसी बान पर उन्हें कालिज से निष्कासित किया गया या धर्मसमाज इण्टर कालिज के प्रधानाचार्य

श्री बलिकानी श्री स्वतंत्रता आन्दोलन के समर्थक थे इसी समय सर्वज्ञी तीताराम राठी, श्री चन्द्र सिंह, डा० टोडरसिंह, डा० मलखान सिंह, नवावसिंह चौहान, मास्टर अन्तराम वर्मा, श्री ततददुक अहमद भेरवानी, उवाजा अब्दुल मजीद, जवाला प्रसाद जिज्ञासु, मन्दसुमार देव बगिठ, मोहनलाल गौतम आदि । इन प्रमुख कांग्रेस जनों की गिरफ्तारी हुई और ये दण्डित भी हुए । बाद में दूरबिन समझौते के तहत इन्हें छोड़ दिया गया ।

अलीगढ़ के नौजवानों ने एक नौजवान सभा का गठन किया जिसमें पुस्तोत्तमदास बंसल, जमुनाप्रसाद पाठक, कान्तीकिशोर, श्री शरीफतिदिदकी, देवेन्द्र शर्मा, हरीमोहन मटनागर और ध्रुवकिशोर चौधरी प्रमुख कार्यकर्ता थे । सन् 1931 में इस सभा ने गृहीत भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह और छोटे भाई सरदार कुलतार सिंह को भी आमन्त्रित किया गया इसी दौरान नेताजी सुभाष चन्द्र भी अलीगढ़ आये और उनसे भी यह जनपद बेहद प्रभावित हुआ ।

अलीगढ़ का दमन चक्र । सन् 1932 ई०।

सन् 1932 में अलीगढ़ में दफा 144 लगा दी गयी और जुलूसों आदि पर पाबन्दी लगा दी गयी थी । इसी दौरान अलीगढ़ के प्रमुख नेताओं डा० मलखान सिंह, डा० टोडरसिंह, श्री जवालाप्रसाद जिज्ञासु आदि को भी जेल में डालने की कोशिश की गयी डा० मलखान सिंह तो भूमिगत हो गये और ये स्वतन्त्रता आन्दोलन को बराबर चलाते रहे सन् 1932 में प्रदर्शनीय कार्यों पर कम्पनी धाग और बाजारों में लाठी चार्ज की गयी, मदार दरवाजे पर पुलिस चौकी के सिपाहियों ने काफी मार पीट की थी । इस मारपीट में राधेश्याम अग्रवाल और तीताराम को काफी चोटें आयीं । इस दौरान आन्दोलन सम्बन्धी साहित्यको भी सरकार ने जप्त किया और काफी ब दमन का प्रभाव बना रहा । इसी समय मञ्जीनगन नामक एक अवधार प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक श्री हरिश्चन्द्र

जी थे । इसमें सरकार की बड़ी कटु आलोचना की गयी । अंग्रेजी सरकार ने इस समय काफी अत्याचार किए । काशी के राजा कुंवर घेतर्तिलाल की बाल विवाहकृत भुक्त भ्रष्टाचार गया कोटा के राजा की भक्तों की मार लगवाई गयी जिसके कारण वह टिकटी पर ही स्वर्ग स्थित हो गए । अलीगढ़ में भी अक़राबाद जैसी जगहों में जन-बचका का कत्ले आम कराया इसी प्रकार की और बहुत सी घटनाएँ देश में फैल रही थी । सन् 1932 में डिप्टी कदल अज्जात और जोड़ण्ट मजिस्ट्रेट धर्मवीर सिंह ने देश भक्तों को काफी सजायें दीं । उन दिनों जेल अधिकारी रघुनन्दन और सुपरिन्टेन्डेंट रहमान थे जो अपनी बेरहमी के लिए उद्योत रहे इनके समय में जेलों में काफी यातनाएँ दी गयीं श्री हौतीलाल गाँव लाहौर तहसील हाथरस की जेल में ही मृत्यु हो गयी । तिकन्दराराऊ तहसील की श्रीमती गंगादेवी को इस समय बन्दी बनाया गया जब उनकी गोद में तीन मास की पुत्री थी इसकी लड़की की भी मृत्यु जेल में ही हुई ।

20 सितम्बर सन् 1932 को हरिजन आन्दोलन चलाया गया और इस आन्दोलन में हरिजनों को उच्च वर्णमाला लोगों के साथ लाने का गहरा प्रयास किया गया । सन् 1933 में अलीगढ़ कांग्रेस के सबसे अधिक सदस्य बने इस समय देश में कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 40 लाख थी जिसमें से षेड लाख अलीगढ़ जनपद में ही बने थे । पं० जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस कमेटी अलीगढ़ को ऐश्वर्य खदर के 16 झण्डे दिये थे ।

सन् 1937 में हरदुआगंज में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें पं० जवाहर लाल नेहरू, पं० गोविन्द बल्लभपन्त तथा एम०एन०राय आदि ने भाग लिया इस अधिवेशन के आयोजन स्वागतार्थ्यक्ष, डा० मल्लान सिंह, स्वागत मंत्री व मन्दकुमार देव वशिष्ठ, कोषार्थ्यक्ष श्री चन्द्रसिंहल स्वयं सेवक कमान्डर मुंजी गजाधर सिंह पाण्ड्याल निर्मात्र अर्थ्यक्ष उदयवीर सिंह प्रदर्शनी व्यवस्थापक हरपालसिंह व रामगोपाल आजाद थे ।

अलीगढ़ और सुभाषचन्द्र बोस [सन् 1940]

सन् 1940 में भैताजी तूफाने दौर पर अलीगढ़ आये और यहाँ आकर उन्होंने जहाँ नगीला गाँव में पहुँचे वहाँ पर इनका भव्य स्वागत हुआ। यहाँ से लौटने पर मालवीय पुस्तकालय में एक बड़ी सभा का आयोजन हुआ इसके में प्रमुख श्रीदेवशर्मा और अध्यक्ष मलबान सिंह थे यहाँ से चलकर हाथरस आर्य समाज मंदिर में सभा हुई जिसमें मुरलीधर पौद्धार ने भैताजी को उनका चित्र भेंट किया जिसकी नीलामी हुई और 810 मलबान सिंह ने उसे 51 रुपये में खरीदा था।

व्यक्तिगत सत्याग्रह [सन् 1940 - 41]

सन् 1940-41 के दौरान अलीगढ़ में व्यक्तिगत सत्याग्रह का भरपूर जोर रहा और इस समय अलीगढ़ में दफा 108 में बहुत से स्वतन्त्रता सेनानियों को बन्दी बनाया गया जिसमें प्रमुख श्री नवाबसिंह चौहान, ठेदालाल मुट, साहबसिंह मेहरा, मोलवी फास्क अहमद व हेमसिंह नागर आदि इन्होंने मुचलके और जमानत देने से इनकार कर दिया और जेल में कड़ी सजातनाओं का सामना किया। व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान यहाँ के अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों को गिरफ्तार किया गया ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु २४0२१०२० थे और उन्हें दादों में व्यक्तिगत सत्याग्रह करते हुए बन्दी बनाया था और 425 सत्याग्रहियों को सजाएँ हुईं किन्तु यह कार्यक्रम अवाध गति से चलता रहा। सन् 1941 में ठेर में जिला राजनैतिक सम्मेलन हुआ जिसके पहले दिन के अध्यक्ष पुरुषोत्तम दास धंसल और दूसरे दिन के पण्डित जवाहरलाल नेहरू थे।

भारत छोड़ो आन्दोलन [सन् 1942 - 45 ई०]

अलीगढ़ में भारत छोड़ो आन्दोलन को यहाँ के स्वतन्त्रता सेनानियों ने प्रज्वलित किया अन्य देशवर्तियों के साथ-साथ 20 अगस्त को तोताराम राठी को गिरफ्तार किया गया पुरुषोत्तमदास धंसल के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला गया जिसमें भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस इन्हें गिरफ्तार न कर सकी। तहसील हगलास में

ग्योदान के पुरा में विदेशी शासन को ललकारा था । इस समय वीर सेनानी पुस्तुषीतमदास वंसल ने भी एक ललकार सुनायी विदेशी मशीन के पुरजों देश की आजादी में हमारा साथ दो । इस समय पुलिस ने पुस्तुषीतमदास और उनके साथियों को रस्तों में बाँधकर ले जाना चाहित जिसका इन्होंने विरोध किया और तब ये पुलिस की गाड़ी से ले जाये गये । इसी समय विजयगढ़ निवासी अर्जुन के सम्पादक मण्डल से संबंध रमेश आर्य की गिरफ्तारी हुई । इनको बन्नादेवी वाने में बरबती से मारा पीटा जाता था और उन्हीं यातनाओं से जेल में इनकी मृत्यु हो गयी तन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में बनारसीदास का भी बलिदान हुआ । आरौली गोल्डिकाण्ड में अनेक स्वदेश प्रेमियों को गिरफ्तार किया गया जिनमें से त्रिभुक्तार, बनारसीदास रामचरण, विजयम्बर दयाल, जयनारायण, लालू, ओमप्रकाश, रमेशचन्द्र, मुरलीमनोहर आदि पर मुकद्दमे चले लगभग सभी को डेढ़ वर्ष की सजा दी गयी थी ।

तन् 1942 के अलीगढ़ बम स्टेशन काण्ड में श्रीमती अम्मा आशफजली के आगमन के पश्चात् तोड़फोड़ की कार्यवाही को बढ़ावा मिला ई इसमें कैलाशचन्द्र, मदन्नाल द्वितीय, देवदत्त कलंकी और किशनलाल आदि ने क्रांतिकारी योजनाएँ बनायीं इस क्रांतिकारी योजना के कार्य में अंग्रेजी सरकार बहुत परेशान हो उठी थी और 24 सितम्बर तन् 1942 को देवदत्त कलंकी द्वारा रके गये एक शक्तिशाली बम कास्टेशन पर विस्फोट हुआ इस बम का निर्माण मिलिट्री की रेलगाड़ी को धरबाद करने के लिए किया गया था । इस घटना से स्थानीय प्रशासन डगमगा गया । इसके बाद पुलिस ने देशमवतों के घर में तलाशियाँ लीं और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । इनको आठ दिन तक बन्द रखा गया था इस बम के बारे में जानकारी मायूम करने के लिए काफी यातनाएँ भी दी गयीं उसी समय मोतीलाल आर्य ने पुलिस वालों को ललकारते हुए कहा कि "तुम्हारी पिस्तौलें चलने से पहले तुम्हारा सर चकनाचूर कर दिया जायेगा ।

बम काण्ड के बाद पुलिस को दहशत और चढ़ गयी और अत्याचार भी बढ़े इस अत्याचार में देवदत्त कलंकी जी के 9 वर्षीय भाई गणेश को पुलिस ने अनेक

यातनारें दीं जिससे वह जहीद हो गया । तन् 1946 में अन्तरिम सरकार का गठन हुआ श्री रफी अहमद क़िदवयी, लालबहादुर शास्त्री के फलस्वरूप जहीद बनारसीदास की निर्मम हत्या की । न्यायिक जाँच की चेदी श्री बी०बी० ओव, जिना जज नियुक्त किया गया ।

इस प्रकार निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अलीगढ़ जनपद ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान किया है और इस जनपद ने किसी भी प्रकार से इस संघर्ष से मुँह नहीं मोड़ा था । लगातार संघर्षरत रहकर इस जनपद के स्वतंत्रता सेनानियों ने देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

अलीगढ़ के राष्ट्रीय नेता और राष्ट्रीय जहीद

अलीगढ़ राष्ट्रीय नेता

श्री तसद्वुक् अहमद ज़ेरवानी, श्री उवाज़ अब्दुल मजीद, श्री निसार अहमद ज़ेरवानी, श्री टा० ग़लबान सिंह, स्व० श्री टा० टोडर सिंह, श्री नन्दकुमार देव वशिष्ठ, श्री ज्वाला प्रताप जिह्वा, श्री टा० शयोदान सिंह, श्री नडावर्तित सिंह चौहान, टा० श्री नैपालसिंह, श्रीचन्द सिंहल, श्री देवेन्द्र शर्मा, श्री पुस्तोत्तमदास बंसल, देवमवत श्री मोहनलाल गीतम, श्री तेठडावरमल, श्री मोतीलाल आर्य, श्री रामगोपाल आजाद, श्री तोताराम राठी ।

राष्ट्रीय जहीद

श्री मौलवी अब्दुल जलील, श्री गीत मुहम्मद खाँ, श्री नसीमुल्ला खाँ, श्री हुसैन खाँ मेवाती, श्री किशनसिंह नायक, श्री राव भीपाल सिंह, श्री मंगलसिंह व श्री महताब सिंह, श्री अमांनिसिंह, श्री गाराधन शर्मा, श्री होतीलाल, श्री रमेश चन्द्र आर्य, श्री बनारसीदास, पी० श्री रामस्वरूप, श्री श्यामलाल, श्री महमूद खाँ, ता० गेम्बीलाल, श्री गणेश ।

तृतीय - अध्याय

3. अलीगढ़ जनपद के प्रमुख राष्ट्रीय कवि एवं सामान्य परिचय ।

3.1 श्री नवाब सिंह घोड़ान "कंज"

3.2 श्री ताहब सिंह "मेहरा"

3.3 श्री हेमसिंह "नागर"

3.4 श्री गजराज सिंह "तरीज"

3.5 श्री टक्कन ताल शर्मा

3.6 श्री छेदाताल मुंड

3.7 श्री रामप्रसाद पुजारी

3.8 पेश दीपचन्द

3.9 श्री नाथूराम शर्मा "शंकर"

3.10 श्री इन्द्र वमा

x x x x x

x x x x

x x x

x x

x

3.1. "श्री नवाब सिंह चौहान" [कंज]

आपका जन्म 16 दिसम्बर 1909 को ग्राम जवाई बाजीदपुर जिला - अलीगढ़ में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री बलवन्त सिंह था। आप बचपन से ही होनहार बालक थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के ही विद्यालय में हुई थी। उसके उपरान्त आपने अलीगढ़ में धर्मसमाज इन्टर कालेज में प्रवेश लिया था। आप जब आठवीं कक्षा में पढ़ा करते थे, तब हिन्दी के प्रख्यात कवि श्री गोकुल चन्द्र जमा आपके गुरु थे। उनकी प्रेरणा पर ही आपने हिन्दी में कविताएँ लिखना प्रारम्भ किया था। बाद में "सुकवि" के संपादक श्री गयाप्रसाद शुक्ल "तनेही" तथा अलीगढ़ जनपद के शीर्षस्थ हिन्दी कवि पण्डित नाथूराम जमा "झंकर" के सम्पर्क में आकर आपने अपना उपनाम "कंज" रख लिया था। आप खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों में ही अत्यन्त तत्नत रचना किया करते थे।

आपका जन्म क्योंकि ग्राम में हुआ था और वहाँ की अनेक समस्याओं का आपको अत्यन्त निकट का अनुभव था, अतः आपने अपनी रचनाओं में वहाँ के जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का ही चित्रण किया था। मूलतः किसान परिवार में जन्म लेने के कारण आप उनके जीवन की अनेक विषमताओं को सहज ही अनुभव कर लेते थे। ऐसी ही निकट परिस्थिति का चित्रण आपने अपनी एक रचना में इस प्रकार किया है -

जब भूख से तुम झरीर गया,

पसुधा तु-तुधा उपजाए तो क्या।

अरविन्द को मार तुझार गया,

मुत्काता हुआ रवि आए तो क्या।

कुम्हलाय गई जब पंखड़ियाँ,
 घनश्याम पीयूष चुवाए तो क्या ।
 जब प्राण कलैवर छोड़ धले,
 तब "कुंज" कहो तुम आर तो क्या ।

आपने अपनी रचनाओं में प्राचीन गाथाओं और लोकसंस्कृति का भी अच्छा चित्रण किया था । आपकी रचनाओं का एक संकलन "बुझा न दीप प्यार का" नाम से प्रकाशित हो चुका है । इस संकलन में आपकी खड़ी बोली और ब्रजभाषा में लिखी गई 76 कविताओं को समविष्ट किया गया है ।

आप कविताएँ तथा लेख भी पत्रिकाओं तथा रेडियोस्टेशन के लिए लिखते थे । इससे प्राप्त धन को वह सुरक्षा कोष में उठा देते थे । आकाशवाणी से समय - समय पर आप^{की} वातावरण, रूपक प्रसारित होते थे, आपके निम्न कविता संग्रह प्रकाशित हुए ।

1. सुबहें समान सब हैं महान ।
2. गुर्रें गीत कितान के ।
3. बुझा न दीप प्यार का ।

सन् 1930 में महात्मा गांधी के आन्दोलन पर राष्ट्रीय आन्दोलन में कुद पड़े फलस्वरूप विद्यालय से इन्हें निष्कातित कर दिया गया था । इसी वर्ष श्री मलखान सिंह, श्री तीताराम राठी, टीडरसिंह आदि के साथ जेल भेजे गये । गांधी जी के व्यक्तित्वगत सत्याग्रह आन्दोलन के अन्तर्गत 19 अक्टूबर 1942 को सत्याग्रह किया जिसमें श्री ठाकुर साहब सिंह, श्री फारुख अहमद के साथ आपने गिरफ्तारियाँ दीं । भविष्य में सत्याग्रह न करने के लिए दफा 108 के अन्तर्गत जमानत मुघल के माँगे गये लेकिन आप तबने जमानत

देना स्वीकार नहीं किया । 22 अगस्त 1942 को "भारत छोड़ो आन्दोलन" में डा० मलबान सिंह व अन्य कार्यियों के साथ आपने गिरफ्तारी दी । तन् 1939 , 1941 और 1942 के स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में भी जेल काटी । अलीगढ़ , बरेली , उन्नाव , आगरा , फैजाबाद तथा प्रतापगढ़ आदि जेलों में कुल तीन वर्षों तक रहे । आप किसान वर्ग के प्रबल हिमायती थे । आप अखिल भारतीय स्तर की मजदूर युनियन व पी०एन०टी० फेडरेशन के अध्यक्ष भी रहे । दो बार जिना परिषद के अध्यक्ष रहे । ग्यारह वर्ष तक राज्यसभा के सदस्य भी रहे । आप कार्यकाल समाप्त होने के एक वर्ष पूर्व त्यागपत्र देकर अलीगढ़ आ गये छः तीसरे दिनों के अधिवेशन में सहस्र तीसरा प्रश्नों में से आपके तैयारीत तीसरे प्रश्न 4339 स्वीकृत हुए । उत्तर प्राप्त के लिए आपका मंत्रियों से निजी सम्बन्ध रहता था । इनके प्रश्नों से राजकीय हलकों में कलबली मची रहती थी । और इनके प्रश्नों का उत्तर देने पर सरकार का धन तथा समय व्यय होता था ।

तन् 1962 में चीन के आक्रमण के समय आपने सर्वप्रथम अपने ध्यान में से पचास रुपये मासिक की कटौती करवायी थी ।

तन् 1946 से लेकर कांग्रेस के विभाजन तक आप उसमें अनेक महत्वपूर्ण पदों पर प्रतिष्ठित रहे । आप जिन दिनों पहले - पहले राज्यसभा के सदस्य के रूप में मनोनीत होकर "भारतीय संसद" में पधारे थे, तब आपने तेठ गोविन्द दास के साथ मिलकर संसद में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रबल आन्दोलन किया था । आपातकाल के उपरान्त जब देश में "जनता पार्टी" का शासन हुआ था तब भी आप "लोकसभा" के सदस्य रहे थे । अपने इस संसदीय कार्यकाल में आपने हिन्दी कार्यक्रमों में भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया था ।

1948 से 1951 तक आरोग्य से विधायक रहे ।

1952 से 1963 तक राज्यसभा के सदस्य रहे ।

1948 से 1951 तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अध्यक्ष रहे ।

1963 से 1970 तक पुनः जिला परिषद के लोकप्रिय अध्यक्ष रहे ।

उपरोक्त सभी पद कृतिष्ठ अविभाजित की टिकट पर पूरे किए ।

1977 के छठवीं लोकसभा के लिए जनता पार्टी की टिकट पर अलीगढ़ सामान्य क्षेत्र से सदस्य चुने गए । इस दौरान संसदीय राजभाषा समिति के संयोजन तथा तुर पंचशती राष्ट्रीय समारोह के महामंत्री थे ।

विश्व तुर्य सम्मेलन की साहित्य समिति के संयोजक भी रहे ।

दिनांक 5 अप्रैल 1981 को जिला मलबान सिंह अस्पताल से पदवी कराकर लौटते समय कठपुला से उतरते समय रिक्के से गिरकर फ्रैक्चर हो गया । चिकित्सकों के उत्कृष्ट प्रयत्नों के बावजूद भी आपको बचाया न जा सका आतः आप रात्रि 12 बजेकर 30 मिनट पर अपने परिवार, साथियों एवं चाहने वालों को बिलखता छोड़कर इस दुनिया से विदा हो गए ।

राजकीय आदिशानुसार राजकीय सम्मान के साथ आपका आर्य समाजी रीति से दाह संस्कार किया गया । हजारों चाहने वालों ने अंतिम दर्शन किए ।

3.2 स्वामित्रता तैनानी श्री साहबसिंह "मेहरा"

सामान्य जीवन परिचय

बीसवीं शताब्दी के जन्म कवि एवं स्वामित्रता तैनानी श्री साहबसिंह "मेहरा" जी का अलीगढ़ जन्मदिन में प्रमुख स्थान है, इन्होंने ब्रज क्षेत्र की जन-भाषा में लोक-गीतों की रचनाएँ करके न केवल उनकी लौह हृदय परम्परा को

को जागृत किया है लोक गीतों के माध्यम से इन्होंने जनता में एक नया मोड़ दिया है । "मेहरा"जी ने अपनी रचनाओं में क्रांति एवं विद्रोह के स्वरों को भी उमारा है साथ ही साथ आजादी का विगुल भी बजाया है ।

"मेहरा" जी का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में स्थित नगीला नामक गाँव में ब्रजम कुवला दूज तम्बू 1976 [तन् 1919 ई०] में एक निम्न मध्यवर्गीय छत्री परिवार में हुआ था । इनके पिता लाला प्यारेलाल मेहरा तथा माता का नाम श्रीमती ईश्वरी देवी था । मेहरा जी के पिता का व्यवसाय नगीला गाँव में एक छोटी सी दुकान करते थे इसके साथ - साथ गाँव में गल्ले की तुलाई का काम भी करते थे । मेहरा जी के परिवार के लोग पंजाब के निवासी थे ।

मेहरा जी की शिक्षा दीक्षा गाँव के प्राइमेट स्कूल में ही व्यवस्था की गई थी इन्होंने उसी स्कूल से तन् 1929 ई० में तीसरी कक्षा पास की थी इसके बाद चौथी कक्षा में पास में कम्बा जहाँ में पढ़ने जाते थे इसके बाद इन्होंने तहसील स्कूल अलीगढ़ जो आजकल धर्मसमाज इन्टर कॉलेज के नाम से जानी जाती है वहाँ से उर्दू में मिडिल पास किया था । अंग्रेजी का ज्ञान तो इन्होंने बाद में अपने साथियों से जहाँ में प्राप्त किया था ।

तन् 1934 ई० में इनका विवाह जगरानी से हुआ । तन् 1957 ई० में जगरानी की मृत्यु हो गयी । इनसे दो सन्तान, एक लड़का तथा एक लड़की पैदा हुए थे इसके कुछ दिन बाद मेहरा जी ने अपनी दूसरी स्त्री विमला देवी से कर ली थी ।

तन् 1930 में मेहरा जी के गाँव में आर्य समाज का प्रचार बहुत तेजी के साथ चल रहा था इसका असर मेहरा जी पर भी पड़ा । इन्होंने आर्य समाज प्रचार एवं भवनीपदैक्य कार्य भी किया । आर्य समाज से समाज-सेवा,

अनुतोद्धार, सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं जातिवाद के लड़ने की प्रेरणा मिली । ये संस्कार आज तक हममें विद्यमान हैं ।

मेहरा जी सन् 1936 ई० से राजनीति में आये थे । इस समय उनकी भेंट डाक्टर अनवर अली से हुई । उनसे प्रेरणा पाकर इन्होंने समाजवादी विचारधारा को अपनाया और कांग्रेस के आन्दोलन में सक्रिय हो गये । मेहरा जी अनवर अली के अलावा सरदार भगतसिंह के दल का भी इनकी विचारधारा पर बहुत प्रभाव पड़ा । इन्होंने दिनों हैदराबाद के निजाम ने महर्षि दयानन्द रचित "सत्यार्थ प्रकाश" के चौदहवें समुत्पात [अध्याय] पर अपने राज्य में पाबन्दी लगा दी इसके विरुद्ध में आर्य समाज ने देश व्यापी आन्दोलन [जेल भरी] प्रारम्भ किया बरेली जिले से ताउन सिंह के नेतृत्व में ताउन दल एक हजार सत्याग्रहियों सहित हैदराबाद सत्याग्रह के लिए गया इसमें ताहसिल मेहरा जी भी शामिल थे ।

हैदराबाद से लौटने के बाद मेहरा जी अलीगढ़ के विख्यात कम्युनिस्ट नेता रफीक आर०डी० भारद्वाज के सम्पर्क में आये तथा पार्टी में शामिल होने के बाद अलीगढ़ प्रेत कर्मचारी आन्दोलन के सम्बन्ध में एक वर्ष के लिए कैद किए गये । जेल से रिहा होने पर इन्होंने किसानों, मजदूरों तथा समाज के बीच समाज सुधार तथा स्वतंत्रता की जागृति का प्रचार किया ।

सन् 1942 के आन्दोलन के सम्बन्ध में ये सितम्बर 1942 में पुनः अगस्त 1944 तक नजरबन्द रहे । बाद में जब जेल से रिहा हुए तब इन पर सरकार ने गॉंव ही रहने की पाबन्दी लगा दी । इसी बीच इनके पिता का स्वर्णवास हो गया था । सन् 1945 - 46 में फिरोजाबाद में इन्होंने अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल सम्मेलन में पहली बार भाग लिया और इन्होंने ब्रजभाषा की रेडियो पर स्थान देने की माँग की थी । अन्त में इस विचार को

केन्द्रीय सुचना एवं प्रसारण विभाग ने स्वीकार किया ।

महात्मा गाँधी के हत्याकाण्ड बीस जनवरी 1948 के बाद फरवरी 1949 में पुनः तीन महीने के लिए नजरबन्द कर दिया गया । तन् 1948 से 1950 तक उन्होंने दस वर्ष उत्तर प्रदेश की अनेक जेलों में बिताये । इसके बाद तन् 1952 में कलकत्ते में आयोजित अखिल भारतीय शान्ति सांस्कृतिक सम्मेलन के अवसर पर आयोजित हिन्दी, उर्दू, पंजाबी आदि भाषाओं के सम्बन्धित कवि सम्मेलन में मेहरा जी ने भाग लिया ।

तन् 1953 में जेल से छूटकर आने पर तबनऊ से प्रकाशित कम्युनिस्ट पार्टी के अवधार "जनयुग" साप्ताहिक और "नया पथ" मासिक में इन्होंने सम्पादक आदि का कार्य किया । तन् 1957 ई० में ये अलीगढ़ में ही लगभग रहने लगे थे । तन् सत्तावन में इन्होंने "जन्ता" साप्ताहिक और उसके बाद "कलयुग" साप्ताहिक का प्रकाशन किया । उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रकाशित एक समाचार के सम्बन्ध में इन पर एक मुकदमा चलाया, वह मुकदमा सर्वोच्च न्यायालय तक लड़ा गया और अन्त में मेहरा जी पर 200 रुपये जुर्माना और छः महीने की सजा का आदेश हुआ । यह पूरा केस आजकल एल०एल०बी० के कोर्स में शामिल है ।

तन् 1934 ई० से मेहरा जी ने उर्दू कविता लिखना आरम्भ किया था, जब ये मिडिल स्कूल में पढ़ते थे । हिन्दी में इन्होंने तन् 1938 में लिखना शुरू किया । मेहरा जी ने ब्रज लोक-गीतों की ही रचना की । ब्रज लोकगीतों में रतिया, होली, बारहमासी, मल्हार आदि इनके सर्वाधिक लोकप्रिय गीत हैं । मेहरा जी काव्य रचनाओं में एक मुख्य विशेषता यह भी पायी जाती है कि ये अधिकतर पद्यमय संवादों के रूप में होते हैं । ये संवाद भी बहुता स्त्रियों के बीच के संवाद हैं । इनके गीतों में स्वतन्त्रता के लिए तथा अंग्रेजों के दुर्व्यवहार के विरुद्ध

के लोगीत लिखे हैं ।

सन् 1978 में अलीगढ़ के पास खैरगढ़ बल्देव-छट के भेले में मेला कमेटी की ओर से मेहरा जी की पष्ठीपूति के अवसर पर इन्होंने प्रजवाबा के लोकगीतकार और कवि की हेतियत से सम्मानित किया उत्तर प्रदेश की मंत्री राजेन्द्र कुमारी ने ताहबसिंह मेहरा को 1001/- रुपये और एक जाल भेंट किया । मेहरा जी ने अपने लोकगीतों के माध्यम से दूर-दूर तक अंग्रेजों के विरुद्ध तथा आजादी के लिए धिगुल बजाया है । आजकल मेहरा जी देश के स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में सेन्द्रल तथा उत्तर प्रदेश सरकार से पेन्शन पा रहे हैं । मेहरा जी आज भी देश की सेवा में कार्यरत हैं ।

मेहरा जी द्वारा रचित निम्नलिखित लोकगीत जो अंगलिखित हैं -

मेहरा जी की मुख्य राष्ट्रीय रचनाएँ निम्नलिखित हैं जिनमें से कुछ रेडियो पर ब्रौडकास्टिंग हो चुकी हैं कुछ अभी अप्रकाशित हैं -

आवाहन {आल्हा }

गीत मल्हार

जापान को घेतावनी

राष्ट्रीय रसिया

चौपाई, गीत, रसिया

आदि ।

3.3 राष्ट्रीय कवि श्री हेमचंद्र नागर

सामान्य परिचय

उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध अलीगढ़ जनपद के प्रगतिशील कवियों में नागर जी का प्रमुख स्थान है। इन्होंने ब्रज प्रदेश की लोक भाषा में लोक-गीतों की रचना करके न केवल उनकी तोड़ हड़ संस्थ परम्परा को जागृत किया वरन् लोक-गीतों को नई शक्ति और दिशा प्रदान की है। नागर जी ग्रामीण गीतों के लोकप्रिय छन्दों को अपनाकर ग्रामीणों की भाषा में ही उनके पास नवयुग का सन्देश, जाति और विद्रोह के विचार पहुँचाए हैं। नागर जी का जन्म अलीगढ़ जिले में स्थित नगला पदम नामक ग्राम में दिसम्बर तन् 1898 ई० में एक निम्न-मध्य-वर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम ठा० बिहारी सिंह था यह जाति के जादों ठाकुर थे। इनकी माता का गौरी देवी था।

नागर जी अधिक पढ़े लिखे नहीं थे। इनके गाँव में पहले से ही प्राइमरी स्कूल था। यह स्कूल पहले प्राइवेट था लेकिन आज यह सरकारी और प्राइमरी से बढ़कर जूनियर हाईस्कूल हो गया है। नागर जी इसी स्कूल में कुछ दिन कक्षा एक {पहली} में पढ़े थे और बाद में अपनी ननिहाल चले गये और यह हुआ कि ननिहाल में जाकर लाड़-प्यार में उद्विग्न हो गए। बाद में जब ननिहाल से वापस आये तो इन्होंने पिता और इनके दो भाई थे, उनके साथ खेती का काम शुरू कर दिया था। ग्यारह वर्ष की उम्र में नागर जी की शादी जिना - बुलन्दशहर के जटौला नामक ग्राम से हो गई कुछ दिन में ही इनकी पत्नी नन्हरी देवी स्वर्ग सिधार गयीं। नागर जी की दूसरी शादी तीन वर्ष बाद इनकी पहली पत्नी की छोटी बहिन भूपी देवी के साथ हो गई। इनके एक पुत्र तथा पाँच पुत्रियाँ थी इनके पुत्र का नाम प्रेमकुमार है, प्रेमकुमार जी ने भी देश को

आजाद कराने में अपना योगदान दिया है । ये कई बार जेल हो आए हैं ।
 प्रेमकुमार जी ने देश के लिए अनेक त्याग किए हैं प्रेमकुमार जी की स्वतंत्रता
 सेनानी के रूप में पहचान मिल रही है ।

तन् 1914 ई० में नागर जी पर आर्य समाजी विचारधारा का
 प्रभाव पड़ा । ये महाशय जसवंतसिंह, महाशय छज्जासिंह के पास बैठने लगे थे
 ये दोनों आर्य समाज के सदस्य थे । ये दोनों कवि और गायक थे । इनके साथ
 रहने से नागर जी में कविता करने के संस्कार जागे और इनके प्रभाव से लोक-
 गीतों की रचना करने लगे और उन्हें गा - गा कर सुनाने लगे ।

नागर जी के आरम्भिक दिनों से ही भारतीय साहित्य परस्पर
 अनेक विरोधी भाव-धाराओं का संगम-स्थल हो गया था । विदेशी शासकों
 ने केवल देश की अर्थ-व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट किया बल्कि देश की सामाजिक
 और सांस्कृतिक स्थिति में भी भयंकर परिवर्तन कर दिया था । ऐसी स्थिति
 देखकर नागर जी ने हिन्दी की ग्रामीण भाषा में रचनाएँ लिखी थीं जोकि
 फिरंगियों के समझ से ऊपर की भाषा थी ।

तन् 1919 ई० में "नागर जी" भारतीय राजनीति में आए ।
 इसी वर्ष से कांग्रेस के सदस्य बन गये । इनका राजनीतिक जीवन इंग्लैण्ड सहित
 से शुरू होता है । तन् 1923 ई० में नागपुर झण्डा सत्याग्रह में टीडर सिंह के
 साथ जुड़कर 14 आदमी सत्याग्रह में गये थे । जिनमें नागर जी भी एक थे ।
 वहाँ इन्हें झण्डा निकालने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और इन्हें
 एक साल की सजा दी गयी । नागपुर जेल से निकालकर "नागर जी" को छठवा
 जेल में भेज दिया गया । वहाँ पर ताम्रज्वा केद की सजा भोगनी पड़ी । चार
 माह बाद जब झण्डा निकालने की रोक हटा ली गई तब इनकी रिहा किया
 गया ।

सन् 1931 ई० में ये आर्यसमाज के सदस्य बन गये । आर्य समाज के प्रतिनिधि के रूप में इनकी बीस सय्ये महीना मिलते थे । हैदराबाद में जब सत्यार्थ प्रकाश के पठन-पाठन पर आरोप लगाकर निजाम ने उस पर पाबंदी लगा दी थी, तब ये अलीगढ़ से हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने के लिए गये और वहाँ पर गिरफ्तारी दी । और बाद में चलकर ठाकुर मलबान सिंह , आचार्य नरेन्द्रदेव आदि सोसलिस्ट पार्टी के सदस्य थे । कमिस्त पार्टी से "नागर जी" का विश्वास टूट गया था । नागर जी बराबर सत्य की खोज कर रहे थे और इन्होंने सन् 1942 ई० में सोच-विचारकर कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता स्वीकार कर ली थी ।

सन् 1915 ई० में आजादी के पक्ष में भाषण देते समय इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । बाद में इन्हें नागपुर, बनारस, आगरा आदि सैन्य जेलों में और अलीगढ़ , बुलन्दशहर, सीतापुर, छठला आदि स्थानीय जेलों में रखा गया । नागर जी तथा श्री छेदालाल मुद्ग की संगत एक थी । ये दोनों साथ-साथ रहते थे और मजनीपदेश करते थे । सन् 1942 ई० से पूर्व महाशय छप्पा सिंह जैसे अखिल भारतीय आर्य-समाज के प्रचारक और मजनीपदेश करते थे । तथा "नागर जी" को आर्य समाज से समाज सेवा, अक्षुतोद्धार, सामाजिक कुरतियों, अन्धविश्वासों और जातिवाद की लड़ने की प्रेरणा मिली ।

"नागर जी" ने सबसे पहले रसियाई, जिकड़ी मजम लिखना शुरू किए । सन् 1914 ई० में जब ये घर पर ही अध्ययन कर रहे थे तभी इन्होंने मजम की पहली तुकबन्दी की थी । "नागर जी" को ध्वनि से ही गाने में विशेष रुचि की और ग्राम्य गीतों को ये बड़े चाव से गाते थे । जब इन्होंने लिखना आरम्भ किया तो इनका ध्यान ग्राम्य गीतों की ओर ही स्वभावतः गया । ब्रज के लोकगीतों में रसिया होती सर्वाधिक लोकप्रिय है । नागर जी ने

रतियाओं की मण्डली भी बनाई थी । कितान आन्दोलन के सम्बन्ध में अलीगढ़ तथा आस-पास जिलों व देहातों में जा-जाकर स्वरचित लोकगीत गाए थे । नागर जी ने रतिया तथा होली, लोकगीतों के अलावा सपरी, मल्हार, कवित्त, दोहा, साधारण गीत, भजन, तीर्थ यात्रियों के गीत आदि भी लिखे तथा गाए हैं ।

“नागर जी” ने लोकगीतों के अतिरिक्त नाटक भी लिखे हैं । इनके अधिकतर नाटक तथा बहुत से लोकगीत जेलों में लिखे तथा खेले गये हैं । इन्होंने सन् 1942 ई० में कितान बारहमाती जेल के अन्दर ही लिखी थी । इनका एक बहुत प्रसिद्ध कर्तव्य नाटक सीतापुर तथा अलीगढ़ जेल में खेला गया । “नागर जी” के कई नाटक भारतीय कला मन्दिर कानपुर से प्रकाशित हो चुका है इसके अतिरिक्त हंस, स्वप्नभारत, तारा, विप्लव आदि पत्रिकाओं में भी इनके काफी लोकगीत प्रकाशित हो चुके हैं ।

1. अपने गीत, धरती के गीत - सन् 1940
2. नल-दमन्ती - सन् 1940
3. शिवाजी और रीजन आग - सन् 1940
4. फौती का सुहाग - सन् 1940
5. कितान की तकदीर - सन् 1942
6. जन-कीर्तन - सन् 1950
7. नये रतिया - सन् 1953
8. क्रान्त बाटिका - सन् 1953

नागर जी की प्रकाशित रचनाएँ ये हैं :

1. विचित्र प्रकाश
2. कितान बारहमाती 1942

3. पन्तनगर संग्राम

नागर जी की कुछ रचनाएँ मास्को से ब्रॉडकास्ट भी हो चुकी हैं। लोक-गीतों के अतिरिक्त नागर जी ने ये नाटक भी लिखे हैं :

1. कर्तव्य - सन् 1940

2. भीम प्रतिज्ञा - सन् 1945

स्व० श्री हेमसिंह नागर जी एक ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने साहित्य द्वारा विशेषकर अपने लोक-गीतों एवं नाटकों द्वारा, स्वतंत्रता संग्राम को बल प्रदान किया है। अपने गीतों में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन - चित्र प्रस्तुत करके ये भारतवासियों में स्वतंत्रता की भावना जागृत करते रहे। इन्होंने कहा था -

“मातृभूमि की सेवा में बहाए गए बून की बूँद संसार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु होती है।”

3.4 स्व० श्री गजराज सिंह “सरोज”

सामान्य जीवन परिचय

श्रीतर्फी ज्ञातव्यी के जनकवि श्री गजराज सिंह “सरोज जी” एक देशभक्त तथा राष्ट्रीय स्तर के कवि थे। इनका जन्म जुलाई सन् 1910 ई० में ग्राम मुन्नी का मगला तहसील - आरौली, जिला - अलीगढ़ में हुआ था। यह यादव परिवार में पैदा हुए, इनके पिता का नाम श्री पुरनसिंह यादव तथा माता का नाम श्रीमती जानुकी देवी था। सरोज जी के पिता एक किसान थे और इनके ताऊ पेच का काम करते थे। इनके ताऊ का इनके ऊपर काफी प्रभाव पड़ा था।

“सरोज” जी की शिक्षा बचपन में तहसील कासगंज में स्थित बुझार गाँव में हुई थी । बुझार गाँव में इनके पिताजी की नानिहाल थी । वहाँ पर प्राइमरी स्कूल था । सरोज जी ने वहाँ से पाँचवी तक शिक्षा ग्रहण की थी इसके बाद मिडिल तक शिक्षा इन्होंने कासगंज तहसील में पायी । इनका बचपन तथा शिक्षा का समय बुझार में ही बीता था । प्राइमरी के बाद मिडिल तक यह कासगंज में ही रहते थे क्योंकि गाँव से दूर था और रास्ता भी न था अगर छुट्टी में घर आना होता था तो इनके पिता इनको बैलों की गाड़ी में लेने जाते तथा पहुँचाने भी गाड़ी से आते थे क्योंकि कोई वाहन का साधन न था । मिडिल पास करने के बाद सन् 1925 के आस-पास इनकी शादी हो गयी थी । इनका पत्नी का नाम श्रीमती महादेवी है इनके तीन लड़के तथा दो लड़कियाँ थी इनके तीनों लड़के सरकारी कर्मचारी हैं तथा दोनों लड़कियों की शादी हो गयी । इनकी पत्नी अभी जीवित है, आँखों से कमजोर है ।

सन् 1922 में सरोज जी ने जिन्ना बरेली से आयुर्वेदाचार्य का कोर्स किया था जब यह आयुर्वेदा में सफल हो गये तो इन्होंने तिकन्दराराऊ में घेच की दुकान खोल ली थी जो आज भी है । इन्होंने घेच के माध्यम से जन की सेवा की थी । सरोज जी जब घेच का काम करते थे तो वह अपने मूल स्थान अमोती में रहने लगे थे सुबह अपने गाँव से अमोती से तिकन्दराराऊ जाते थे , शाम को वापस आ जाते थे ।

सन् 1930 ई० से सरोज जी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने लगे थे । सरोज जी गाँधी के सम्पर्क में आये और उन्होंने छुआ-छुत का भेदभाव दूर करना तथा सामाजिक सम्बन्ध जोड़ने पर बल दिया और गाँधीवादी विचारों से सहमत हुए । सन् 1930-31 से ही सरोज जी ने घर पर चरखा चलाना शुरू किया तथा खादी के वस्त्र धारण किये थे आप तो चरखा से बुनी हुई खादी

का वस्त्र पहन्ती थे ही साथ में उनके घरवाले भी बाघी के वस्त्र पहन्ती थे ।
बाघी का पहनावा उनके लड़के अब भी पहन्ती हैं ।

सरोज जी राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने के साथ-साथ
राष्ट्रीय कविताओं के भी प्रेमी थे इनके द्वारा रचित मुख्य रूप से दो पुस्तकें
हैं अहिंसा, और आदर्शधन । सरोज जी ने ब्रज तथा खड़ी बोली दोनों में अपनी
रचनाएँ लिखी हैं सरोज जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता में स्वतंत्रता
की जागृति का विगुल बजाया था इन्होंने किसानों के शीषण तथा मजदूरों के
भी गीत गाये थे ।

सरोज जी राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे तथा अपनी
कविताओं के माध्यम से आजादी का विगुल बजाने लगे तो अंग्रेज सरकार ने
इनके वारन्ट काट दिये वारन्ट के बाद ये छिपकर थे सब काम करते रहे और
घरवालों को अंग्रेज सरकार के अधिकारियों ने परेशान किया इनके छेत्त की कुड़की
भी की तथा इनके अमर 100 रुपये का जुर्माना भी किया गया था तथा सन्
1941-42 में जेल में भी जाना पड़ा इसके बाद दिसम्बर 1943 में छुटकर आये
इसके बाद आगरा में 10 महीने की सजा काटने के बाद अलीगढ़ में 12 महीने
की सजा काटी थी तथा इनको नजरबन्द भी रखा गया था । सरोज जी ने
अपनी जान और माल की परवाह न करते हुए देश की आजादी के लिए सब कुछ
त्याग दिया था ।

सरोज जी आजादी के बाद सन् 1962 ई० में सिकन्दराराज
से विधायक पद के लिए खड़े हुए थे लेकिन उसमें इनकी पराजय हुई फिर कभी भी
इन्होंने कोई चुनाव नहीं लड़ा था ।

सरोज जी की मृत्यु सन् 1973 ई० में हुई थी यह अपनी लड़की

की विदाई कराने के लिए गये थे अचानक इनको वहाँ दिल का दौरा पड़ा और वहीं पर स्वर्गवास हो गया सरोज जी का दाह संस्कार इनके गाँव अमोली में ही किया गया था । इनकी पत्नी श्रीमती महादेवी जी आज भी जीवित हैं ।

सरोज जी एक सच्चे देशप्रेमी तथा स्वतन्त्रता सेनानी थे इनको उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से 100 रुपये माहवार पेंशन मिलती थी ।

3.5 स्वतन्त्रता सेनानी जनकवि "पण्डित दक्कन लाल शर्मा"

सामान्य जीवन परिचय

स्वतन्त्रता सेनानी पंडित दक्कनलाल शर्मा का जन्म 26 जनवरी सन् 1904 ई० को अलीगढ़ जनपद में स्थित कल्याणगढ़ीत में हुआ था । आपके पिता पंडित किशनलाल शर्मा कल्याण के प्रसिद्ध मिठान चिह्नेता थे । पाँच भाइयों में शर्मा जी सबसे बड़े थे शर्मा जी के तेवर बचपन से ही बदले हुए थे प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करते-करते थे और परवान चढ़ गए और आपका जिज्ञासु मन देश की आजादी के लिए किये जा रहे कार्यों की ओर उन्मुख होने लगा ।

सन् 1921 ई० में महात्मा गाँधी अलीगढ़ पधारे उन दिनों चण्डीत के श्री राधेताल गुप्त तहसीली स्कूल में, जहाँ अब धर्मसमाज इण्टर कॉलेज स्थित है, कक्षा 6 के छात्र थे । गाँधी जी के भाषण से, प्रभावित होकर उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया और स्वराज्य के सुख-स्वपनों की चर्चा गाँव में जाकर की जिससे शर्मा जी का किञ्चित् मन बहुत प्रभावित हुआ इस प्रकार सर्वप्रथम स्वातन्त्र्य प्रेरणावर्मा शर्मा जी में जगाने का श्रेय स्व० श्री राधेताल गुप्त को है बाद में इन दोनों के आग्रह पर महात्मा गाँधी जी चण्डीत भी पधारे ।

शर्मा जी के स्वतन्त्रता प्रेम को परिपक्व किया । ठा० टीहर सिंह

व हरिगिरि गुहाई जो जिले में आजादी की लड़ाई की बागडोर संभाल रहे थे वे प्रायः चण्डीत आया जाया करते थे, इन दोनों के सम्पर्क में आकर शर्मा जी ने शिक्षा और घरेलू काम-काज से लगाव तोड़ दिया और पूरी तरह आजादी की लड़ाई में कूद पड़े जिसकी एक लम्बी कहानी है ।

सन् 1927 ई० में शर्मा जी का विवाह कर दिया गया इस आशा से कि गृहस्थ जीवन में इनका स्वाव हो जायेगा । इनकी पत्नी श्री चम्पादेवी सीधी और सरल स्वभाव की होने के कारण इनकी गतिविधियों में हस्तक्षेप करने के बजाय सहयोगिनी बनना ही उचित समझा । विवाह के तीन वर्ष बाद सन् 1930 ई० में जबकि शर्मा जी लखनऊ कैम्प जेल में बन्द थे उस समय इनकी पत्नी ऊनीगढ़ में महिला सत्याग्रह कैम्प में रहकर विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिंग किया करती थी तत्कालीन अंग्रेज कलक्टर पी०डब्ल्यू० मार्क ने महिलाओं की गिरफ्तारी नहीं कराई थी । श्रीमती चम्पादेवी को बड़ी परेशानी उठानी पड़ी वह शर्मा के साथ सन् 1931 से 1940 तक आगरा कार्य क्षेत्र होने के कारण वह भी साथ रही थी ।

सन् 1940 में शर्मा जी के प्रथम पुत्र पं० गंगाशरण शर्मा का जन्म हुआ जो इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त कर राजस्थान में टी०वी० हेल्थ विजीटर है । दूसरे पुत्र महेन्द्र चन्द्र शर्मा का जन्म 1942 में हुआ ये इण्टरमीडिएट तक शिक्षा पाने के बाद सेना में हवलदार बर्क हो गए । आजकल चण्डीत में ही कपड़े का व्यापार करते हैं । शर्मा जी की तीन लड़कियाँ थीं जिनका विवाह हो चुका है अपनी-अपनी गृहस्थी संभाल रही हैं । श्रीमती चम्पादेवी ने अपनी संतान को घोर अभावों में रहकर भी कभी हीनता की भावना से ग्रसित नहीं होने दिया ।

सन् 1940 में भारत स्वाधीन हुआ और पण्डित जी को धनीपार्जन

की ओर लौटना पड़ा क्योंकि सम्मिलित परिवार की कड़ियाँ अलग-अलग हो चुकी थीं । माहें अपना - अपना कारोबार संभाल रहे थे । 130 बीघा पैत्रिक भूमि ठीक प्रकार कृषि न होने से अनामकारी सिद्ध हुई और हाथ से निकल चुकी थी । कुछ पूँजी जुटाकर बाँडतारी और बाद में कपड़े का काम किया लेकिन व्यापार में पारंगत होने की आय आप स्वतन्त्रता संग्राम में लगा चुके थे, इसलिए असफल रहे और सब लुटिया-पुँविया हुआ बैठे । आठ दस ताल इसी प्रकार व्यतीत हुए तब लड़कों ने धनीपार्जन का मोर्चा संभाल लिया ।

वारडोली काँड से असहयोग आन्दोलन वापस ले लिए जाने के कारण देश के राजनैतिक वातावरण में गतिरोध पैदा हो गया था, लेकिन तभी नागपुर झंडा सत्याग्रह ने कई घेतना पैदा की । इसी आन्दोलन से पं० टक्कमलाल शर्मा राजनीति में सक्रिय हुए । तन् 1919 तक शर्मा जी कांग्रेस के कार्य में जुटे रहे । यह क्षेत्र इतना सक्रिय समझा जाता था कि महात्मा गाँधी और पण्डित जवाहरलाल नेहरू वहाँ पधारे । एक बार क्षेत्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ । जिसमें दूर - दूर के कांग्रेसी नेताओं ने भाग लिया । शर्मा जी को राजनीति में प्रविष्ट कराने वाले श्री राधेलाल गुप्त तन् 1929 में आगरा गाँधी आश्रम में भेजकर थे उन दिनों गाँधी आश्रम कांग्रेस कार्य के केन्द्र थे । कुछ समय बाद शर्मा भी आगरा पहुँच गये और मुख्य रूप से प्रचार की जिम्मेदारी संभाल ली थी कृष्णदत्त पालीवाल सेठ, अंगलसिंह इनके काम से बहुत प्रभावित हुए ।

श्री किशनलाल भारद्वाज, शिवप्रसाद गुप्त, शैलसिंह नागर, कन्हैयालाल गोतम, छेदालाल शर्मा भी आगे पहुँच गये थे । यह टीम नमक सत्याग्रह के लिए सत्याग्रही भर्ती करने के अतिरिक्त जहरी क्षेत्र में नेटर बोवनों में आग लगाने और देहाती क्षेत्र में टेलीफोन के तार कटवाने आदि की योजनाओं को कार्यान्वित किया करती थी । इन्हीं दिनों कांग्रेस को गैर कानून करार

दे दिया गया । अखबारों पर पाबन्दी लगे गई प्रचार का कार्य बहुत कठिन हो गया तब "सिंहनाद" छ पत्र का प्रकाशन गुप्त रूप से शुरू किया गया । यह पत्र श्री रौधेलाल गुप्त के निवास में सायकिलोस्टाइल में छपता था और दो पैसे में गुप्त रूप में बेचा जाता था कई बार तलाशी होने पर भी सायकिलोस्टाइल मशीन पुलिस के हाथ नहीं लगी । इस क्षेत्र पत्र के प्रकाशन केन्द्र का पता लगाने वाले को 500 रुपये पुरस्कार देने की घोषणा अंग्रेज सरकार द्वारा की गई थी ।

पं० टक्कलाल शर्मा जी एक अन्य पत्र "कर्मित बुलेटिन" जोहरी बाजार जयपुर में छपवाकर आगरा मंडल के पाँच जिलों में वितरित किया करते थे यह पत्र छपने के बाद लकड़ी की पेटियों में बन्द करके साधुन के नाम से भरतपुर भेजा जाता था । वहीं से यह अखबार आगरा पहुँचाया जाता था इस अखबार को ले जाने का माध्यम उंटों के द्वारा था । इस पत्र का पता बताने वाले को एक हजार रुपये इनाम की घोषणा की । अंग्रेजी सरकार ने पण्डित जी को कर्मित का नेता तथा अखबार का सम्पादन समझा था इसलिए पण्डित जी को आगरे से बाहर जाने के लिए छः महीने के लिए रोक लगा दी थी । इस प्रतिबन्ध को पण्डित जी ने तोड़कर अंग्रेज हुकूमत को कुली चुनीतीदी थी और निकटवर्ती गाँव वगरा को केन्द्र बनाकर पैसुमार प्रचार करते रहे । अखबार तर्कलेट करने के साथ शर्मा जी जन सम्पर्क और जनसमाजों के माध्यम से आजादी का सन्देश फैलाते थे । जब कर्मित बड़े-बड़े नेता जेलों में बन्द कर दिये गये थे । तब आपने बुलन्दशहर जिले में "लगानबन्दी आन्दोलन" को चल दिया । यहीं से आपका बार्ड जारी कर दिया गया अबदुल 1930 में शर्मा जी को बुलन्दशहर में छः महीने की सजा हुई । अलीगढ़ की जेल से भी छः महीने की सजा का आदेश हुआ । शर्मा जी ने अपनी कविताओं से जेल के वातावरण को जोशीला बनाया और जब लखनऊ कैम्प जेल में थे तब गाँधी हरदिन समझौता हुआ सभी

कार्य-कर्ताओं के साथ जर्म जी भी जेल से छूटे ।

सन् 1942 ई० में "भारत छोड़ो" आन्दोलन के तिलतिले में पण्डित जी को 10 माह अलीगढ़ जेल में नजरबन्द रखा गया । यह वह समय था जब अंग्रेज सरकार का कलेजा हिल चुका था आजादी की लड़ाई सफलता की ओर अग्रसर हो रही थी सन् 1943 से सन् 1947 तक का समय हिन्दुस्तान की राजनीति में बड़े उतार चढ़ाव का समय रहा । अंग्रेज सरकार पूर्ण रूप से समझ चुकी थी कि हिन्दुस्तान छोड़ना ही होगा फिर भी जितना कूटनीति खेल केला जा सकता था केला गया सन् 1947 में हिन्दुस्तान आजाद हुआ जहाँ एक ओर आजादी की खुशी हुई वहाँ विभाजन का दुःख भी सहने को मिला ।

जर्म जी ने किसानों, मजदूरों तथा अंग्रेजी शासन के अपर बहुत सी रचनाएँ लिखी थीं ।

3-6 "रव० श्री छेदालाल मुद्ग"

जीवन परिचय

श्री छेदालाल मुद्ग का जन्म सन् 1893 ई० माह 2 अक्टूबर को गाँव लहरा , तहसील - हाथरस, जिला - अलीगढ़ में हुआ था । मुद्ग जी के पिताजी का नाम श्री ठाकुरदास तथा माताजी का नाम श्रीमती गोविन्दी था । मुद्ग के पिता बहुत ही गरीब किसान थे जो दिन रात खेती में मेहनत करते थे । इसके बावजूद भी घर का खर्चा तभी ढंग से नहीं चल पाता था मुद्ग जी के पिता तथा उनके चाचा श्री प्रभुदयाल व मुद्ग जी की पाँच बहिन थीं ।

मुद्ग जी बचपन से ही गाँव की रतिया व जिकड़ी भजन की मंडली में ही रहते थे । मुद्ग जी के पिताजी चाहते थे कि उनका पुत्र भी उनके खेती में हाथ बटाये । लेकिन मुद्ग जी मंडली में ही रहते थे इन्हीं कारणों से इनके

पिता इनसे नाराज रहा करते थे । मुद्र जी माँ श्रीमती गौविन्दा देवी मुद्र जी को बहुत प्यार करती थीं । मुद्र जी अपने पिता के डर से घर नहीं आते थे तो मुद्र जी की माताजी उनके लिए बाना पड़ोसियों के यहाँ रख आती थीं और कभी मालूम हो जाता था कि मुद्र जी किस जगह हैं तो वह बाना वहीं पहुँचा देती थीं । इस प्रकार से मुद्र जी का बचपन व्यतीत हुआ । मुद्र जी जब जवान हुए तो वह बड़े-बड़े रतियों के दंगल या फूल-डोलों में रतियाई के जिकड़ी मजन में होते थे, उनमें मुद्र जी ने कभी पराजय का मुँह नहीं देखा । गाँव के लोग मुद्र जी के बारे में कहा करते थे कि न मालूम छिद्दा के घट पर क्या तरफ़ती घिराजमान थी, कभी हमने रजिस्टर लेकर गाँव हुए नहीं देखा था हमारी मंडली हमेशा जीतकर ही आई ।

मुद्र जी के बारे में लोगों ने यह भी बताया कि गाँव की मंडली रामघाट पर एक बार गई उस समय उनका बारन्ट था अंग्रेजी हकूमत {शासन} की बात थी मंडली के रतिया गुरु हुए तो वहाँ तेनात याना इन्चार्ज ने मुद्र जी के रतिया मजन कराये और यह भी जिम्मेदारी ली कि कोई हाथ नहीं लगा सकता जब तक मैं यहाँ इन्चार्ज हूँ । आप निर्भीक होकर रतिया होने दीजिए । तब वहाँ गंगाजी की भेंट गाई जिसकी चन्द लाइन इस प्रकार से हैं ।

मुद्र जी की शादी उस जमाने में बड़ी मुश्किलों से हुई क्योंकि जमींदारी प्रथा थी लगान एक जमाने पर बेदखली हो जाती थी ऐसी हालत में किताने कर्जा करके लगान चुकाये या शादी करें । मुद्र जी की शादी के बारे में यह कहा जाता है कि जब उनकी शादी हुई तो काफी उम्र थी तथा उनकी पत्नी की उम्र कम थी । मुद्र जी अपनी पत्नी से ब्राह्मणी कहकर पुकारा करते थे । उस गरीबी में मुद्र जी की पत्नी को दो-दो दिन भूख ही निकल जाते थे लेकिन

कभी ब्राह्मणी ने किसी पड़ोसी से भी यह नहीं कहा कि मुझे खाना नहीं मिला । मुद्र जी की पत्नी सन् 1936 में मुद्र जी का साथ छोड़ स्वर्ग सिधार गई । वह तीन बच्चों को छोड़ गई जिनमें 2 लड़के और एक लड़की । मुद्र जी की माता का तो बहुत पहले ही देहान्त हो गया था । ये तीनों बच्चे बहुत कम उम्र के थे । लड़की पैदाइश में ही इनकी पत्नी की मौत हुई थी । इस लड़की को मुद्र जी बहिन ने कुछ दिनों तक पाला , बाद में इनके ताते बच्ची को ले गये करीब 11 साल की होकर वह लड़की ननिहाल में ही मर गई ।

मुद्र जी पर सब संकट आते हुए भी वह धबराये नहीं झेलते रहे और राष्ट्रीय आन्दोलन से हटे नहीं । दोनों लड़कों की देखभाल उनके पिता तथा चाचा व छोटे भाई गौरी ज़रूर करते थे । सन् 1936 में आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का सम्मेलन हरदुआगंज में हुआ था । इस कांग्रेस में लाखों की भीड़ थी उसके बारे में कहा जाता है कि भीड़ में या तो पंडित जवाहरलाल नेहरू बोलते थे तब शान्त रहती थी या फिर मुद्र जी की खलनाम बजना शुरू होता था तब शान्त रहती थी । मुद्र जी जनता को करब कूटा कहकर सम्बोधन करते थे ।

मुद्र जी इस दौर में भी अनेक बार जेल गये । निजाम हैदराबाद की जेल में भी रहे बताते हैं उस समय अंग्रेजी शासन की जेलों में कितनी यातनायें दी जाती थीं इसको आज का नेता या जनता नहीं जानती राजनैतिक लोगों को जेलों की सजा यहाँ तक कि हाथ पैरों में कीलें भी ठोक दी जाती थीं । मगर मुद्र जी इन सबकी परवाह किये बिना अंग्रेजी शासन से संघर्ष करते रहे ।

मुद्र जी तथा उनके साथी कांग्रेस में ही रहकर क्रान्तिकारी विचार-धारा के कदतर हमी थे सन् 1941 ई० में कम्युनिस्ट पार्टी कानूनी हो गई तो उनके सभी साथी मुन्शी मजाधर सिंह, केमसिंह नागर, उदयवीर सिंह आदि जो कांग्रेस के अन्दर शामिल थे वह कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये । सन्

1941 से लेकर सन् 1949 तक काफी मुश्किलें झेलीं तथा घरेलू जिन्दगी जीना दुष्पचार हो गया जब सन् 1949 ई० में कम्युनिस्ट पार्टी का नया नेतृत्व आया तो श्री पी०सी० जोशी जगह का ची०टी० रबदिसे पार्टी के नेता बने उस समय पार्टी की रचनीति बदली । उस समय सम्पूर्ण पार्टी के कार्यकर्ता जलों में डाल दिये गये । इसी समय 15 अगस्त सन् 1949 को जेल में इमली के पेड़ पर काला कपड़ा रंग कर झंडा लगा दिया गया । जब बाहर पुलिस लाइन से अधिकारियों ने देखा कि जेल में काला झंडा लगा है तो जेल अधिकारियों से जानकारी की और उस झण्डे को अधिकारी चुपचाप उतार कर ले गये । जब मुद्द जी ने देखा कि झंडा उतर गया है तो फिर दुबारा से झंडा लगा दिया गया और झंडे की हिफाजत के लिये सभी पार्टी के लोगों ने इमली के पेड़ का घेरा बनाकर खड़े हो गये । तब जेल अधिकारी तथा एस०एस०पी० पुलिस सहित जेल में आये तो उन्होंने काला झंडा उतारने की कोशिश की गई । उसी समय नीचे पड़ा ईंट का अध्या मुद्द जी ने फेंक कर मारा जो एस०एस०पी० के दाँत में लगा दाँत टूट गया । जिसका मुकदमा सरकार ने जेल के अन्दर ही चला । जिसमें पार्टी के लोगों को 3 - 3 वर्ष की सजा हुई । सन् 1947 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन बम्बई में श्री राहुल सांकृत्यायन के सभापतित्व में हुआ । इस अवसर पर आयोजित लोकगीत सम्मेलन में मुद्द जी नागर जी व मेहरा जी अपनी टीली के साथ गये । मुद्द तथा पार्टी के साथ जाने वाले लोग लगभग 15 दिन वहाँ रहे थे मुद्द जी कविताओं के अलावा दूसरे कवियों की कविताओं को लोग पसन्द नहीं करते थे मुद्द जी ने खुद कहा था कि पूरे देश से आये और भी कवि लोग हैं उन्हें भी अपनी कविताएँ सुनाने का अवसर दीजिये ।

मुद्द जी की वाणी में बड़ी कशिश थी लोग उनकी कविताओं को सुनने के लिए दो-दो कोत से पैदल आते थे इसीलिए मुद्द जी जनकवि थे कांग्रेस

को झोंपड़ियों तक पहुँचाने का श्रेय मुद्र जी व उनकी कविताओं को ही है । तन् 1956 - 57 में मुद्र जी के पैर में एक मस्सा हो गया था । एक दिन बैठे-बैठे उन्होंने मस्से को रेंठकर तोड़ दिया जिसमें से एक तार सा खिंचा और वह मस्सा घाव बन गया और उनकी जान लेकर ही गया । इस घाव के कारण वह 2 वर्ष तक अलीगढ़ जिला अस्पताल में रहे । बीच में पार्टी ने श्राव आन्दोलन में कलकत्ती कचहरी पर भुख हड़ताल की थी "मुद्र" जी अस्पताल छोड़कर भुख हड़ताल में आ बैठे जबकि पार्टी ने उनको मना कर दिया था कि आप अस्पताल छोड़कर नहीं आयेगी फिर भी "मुद्र" जी नहीं माने और भुख हड़ताल पर आकर बैठ गये । उसके कुछ दिनों बाद किसान सभा का प्रान्तीय सम्मेलन नगला पदम "नागर" जी के गाँव में था । अस्पताल छोड़कर सम्मेलन में चले गये । जब वह जँडौत से नगला पदम डेलगाड़ी में बैठकर जा रहे थे तो आगे नदी के पुल पर गाड़ी पलट गई जिससे उनकी बाईं बाजू और टूट गई । फिर उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया । जहाँ बीमारी लाइलाज हो गई थी तो उन्हें अगरा भेडीकल कालिज में लेकर गये तो वहाँ भी डाक्टरों ने मना कर दिया । मगर यह "मुद्र" जी को नहीं बताया कि इलाज के लिए मना कर दिया है । उन्हें वापस अलीगढ़ ला ही रहे थे कि हाथरस आने से पूर्व उन्होंने कहा कल अलीगढ़ चला चलूंगा आज गाँव के लोगों से मिल लेने दो । गाँव पहुँचने के बाद उन्होंने साफ मना कर दिया कि अब मैं गाँव से कहीं नहीं जाऊँगा यहीं मरूँगा । फिर वह कहीं नहीं गये और 12 मार्च तन् 1959 को अपने गाँव लहरा में ही ब्रह्मलीन हो गये ।

"मुद्र" जी ने बहुत से रतिया, भजन, राष्ट्रीय आल्हा, स्वराज्य संगीत लँग्रेस का इतिहास, लाखा भवन, सुदामा चरित्र मुद्र भजनावली आदि । "मुद्र" जी ने आजादी के लिए बहुत बड़ी कुर्बानी दी थी उन्होंने कविताओं के माध्यम से तथा शारीरिक क्रिया कलापों से योगदान दिया था ।

3.7 स्व० श्री रामप्रसाद पुजारी

सामान्य जीवन परिचय

अलीगढ़ जनपद में स्थित तहसील - हाथरस में जलालपुर गाँव में पं० रामप्रसाद पुजारी का जन्म सन् 1897 ई० में हुआ था आपके पिता श्री रामजीलाल एक मामूली से किसान थे पुजारी की माता इनके पैदाइश के छः महीने बाद ही स्वर्गवास सिधार गयी थी तथा इनके थोड़े दिन के बाद पिता भी चल बसे । पुजारी का जीवन बहुत दुःख भरा हुआ था आप तीन साल तक श्री खयालीराम जी के आश्रम में कुछ दिन पूरे करने पड़े इसके बाद आप श्री पीताम्बर जी के साथ बम्बई चले गये आश्रम में थोड़ी सी शिक्षा मिली थी ।

पुजारी जी ने बम्बई में बड़े मन्दिर की गजाला की सफाई करके अपने रोटरी क्लब की व्यवस्था करने लगे बाद में लक्ष्मीनारायण जी के मंदिर माथी बाग में पानी पिलाने का कार्य किया । जब आप बम्बई से तो वहाँ कांग्रेस का सन्देश सुनने को मिला । सन्देश सुनने के बाद गाँव में आकर श्री ठाकुर जी मन्दिर जी के मन्दिर का जीवोद्धार कराया और उस मन्दिर में सेवा पूजा का कार्य किया और वहीं रहने लगे ।

सन् 1930 ई० में जब देश में स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन चला तो पुजारी जी उसके स्वयं सेवक बने साथ ही साथ कस्बा छर्वा, अतरीली आदि कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया । उसके बाद इन्होंने अलीगढ़ जिले के अन्तर्गत कांग्रेस का संगठन किया तथा कांग्रेस के सदस्य बनाये थे । सन् 1931 में अंग्रेजी सरकार ने इनको एक महीने के लिए जेल भेज दिया महीने भर के बाद जेल रिहा किया गया । रिहा होने के बाद इन्होंने स्वतन्त्रता के लिए अलीगढ़ तथा देहात में जाकर प्रचार किया । सन् 1932 में पुजारी को तहसील हाथरस में गिरफ्तार किया गया इस बार इनको छः माह की सख्त कैद हुई ।

सन् 1939 में अंग्रेजों के खिलाफ हाथरस दौलतराम के चौक पर व्याख्यान दे रहे थे । ब्रिटिश शासन अब टिक नहीं सकता । पुजारी जी कई बार जेल गये थे । इसी बीच थे आल्हा अंग्रेजों के खिलाफ बनाकर गाते थे । इन्होंने रानी लक्ष्मीबाई सत्याग्रह, सुभाष संग्राम, गाँधी जी के अमर आल्हा बनाकर गाते थे । इनकी हास काव्यकृति प्रकाशित "बाबा कविराय" हुई थी ।

पुजारी जी राष्ट्रीय आन्दोलनकारी तथा देशभक्त थे पुजारी का स्वर्गवास सन् 1972 ई० में हो गया था ।

3.8 पैद्य दीपचन्द

सामान्य जीवन परिचय

पैद्य जी के पूर्वज दक्षिण गोवा के निवासी थे वे आर्य क्षत्रीय यदुवंश की कदम्ब शाखा में जन्मे थे । राज्य विहीन होकर उनका परिवार चित्तौड़ भी रहा बाद में अवागढ़, जलेश्वर आकर बसे इन्का व्यवसाय तैनिक था वे पैद्य जी के दाद थे सन् 1800 ई० में अंग्रेजी फौजों ने अलीगढ़ पर अधिकार किया तब उनका आना जाना समीप के गाँव जमालपुर में रहा यहाँ से उन्होंने अपने पौत्र का विवाह किया ससुराल में पुत्र न होने के कारण वे यहाँ पर बस गये । जलेश्वर में इनके पास काफी जमीन थी तथा बाग भी था लेकिन जमींदार से झगड़ा होने पर सब कुछ त्याग कर चले आये थे ।

पैद्य जी का जन्म सन् 1910 ई० में हुआ था इनके पिता का नाम श्री डालचन्द था । प्रथम विश्व युद्ध समाप्त के पश्चात् जो महाभारती वर्षा हुई बीस दिन तक रही उसमें तथा आगे दो वर्ष के अन्दर मेरे माता-पिता तथा माई-बहिन सबका देहान्त हो गया । इनका पालन पोषण इनके ताऊज्जाद भाईयों ने किया था ।

पेच जी के परिवार में हिन्दी भाषा का अध्ययन एवं अध्यापन परम्परा से चलता आ रहा था यद्यपि ब्राह्मणी व्यवस्था ने जाटव जाति को पढ़ने - लिखने से वर्जित कर रखा था । इनकी शिक्षा जमालपुर के प्राइवेट स्कूल में तथा ईताई प्राइवेट स्कूल विलियम साहब के यहाँ से कक्षा 8: तक उर्दू तथा पाँच तक इंग्लिश पढ़ी । इनके दाद रामानन्दी मत के थे लेकिन इनके भाई बन्धु कबीर पंथी थे आगे चलकर इन्होंने वैदिक साहित्य की धार्मिक पुस्तकें पढ़ी जिसमें वेद दर्शन, उपनिषद्, छंदशास्त्र तथा श्री मन्त्री देवशास्त्री से संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया । अन्त में सन् 1926 ई० से ही इन्होंने पंडिताई कार्य भी संभाल रखा है । यह कार्य इन्होंने विद्यार्थी जीवन से प्रारम्भ किया था क्योंकि इनकी जाति में पंडिताई का कार्य करने वाला नहीं था ब्राह्मण लोग इनको अशुत समझते थे ।

सन् 1930 से ये राजनीति में आये सन् 1932 से 1945 तक अलीगढ़ में स्थित मालवीय पुरतकालय के सदस्य रहे नमक सत्याग्रह में पेच जी ने सक्रिय रूप से भाग लिया । ये कांग्रेस पार्टी से जुड़े और इन्होंने जाटव समाजों में भी तिरंगा झंडा लगाके कांग्रेस पार्टी का प्रचार किया । कांग्रेस के सेवादल की ट्रेनिंग लेना, पीपुलिंग एजेंट का कार्य करना आदि ।

पेच जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध जेहिन्द बारहमासी तथा मजदूर बारहमासी भी लिखी थी तथा वह प्रकाशित नहीं हो पायी थी । इन्होंने आल्हा, भजन, छन्द आदि की रचनाएँ की हैं । पेच जी आज भी जीवित हैं ।

3.9 "स्व० पण्डित श्री नाथूराम जमाँ शंकर"

सामान्य जीवन परिचय

उत्तर प्रदेश, जिला अलीगढ़ के हरदुआगंज उपनगर में सन् 1859 ई० अर्थात् विक्रम संवत् 1916 वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को प्रसिद्ध जिला में एक शिशु का इस धरिणी पर अवतरण हुआ, जिसने आगे चलकर इस कस्बे की कीर्ति दूर-दूर तक प्रसारित की। इनके पिता पण्डित रूपराम जी थे इनके पूर्वज मूलतः जिला गुडगाँव के निवासी थे। बाद में ये अलीगढ़ जिले के हरदुआगंज नामक उपनगर में आकर बस गये थे। उनके हरदुआगंज आकर बसने का भी एक इतिहास है। सन् 1739 ई० में नादिरशाह दुर्रानी के आक्रमण से हरियाणा दिल्ली से पहला आक्रान्त हुआ था।

शंकर जी के पिता पण्डित रूपराम जी थे, शंकर के पूर्वज मूलतः जिला गुडगाँव के निवासी थे बाद में ये अलीगढ़ जिले के हरदुआगंज नामक उपनगर में आकर बस गये थे। उनके हरदुआगंज बसने का भी एक इतिहास है। सन् 1739 ई० में नादिरशाह दुर्रानी के आक्रमण से हरियाणा दिल्ली से पहले आक्रान्त हुआ था। हरियाणा के अनेक परिवारों ने उत्तर प्रदेश में शरण ली। शंकर जी पूर्वजों का परिवार भी उसी समय अनेक परिवारों के साथ हरदुआगंज में आकर बस गया। उस समय तक "हरदुआ" ग्राम के निकट "हरदुआगंज" कस्बे के रूप में बस चुका था।

शंकर जी के पिता रूपराम जी पौरोहित्य जीवी सन्तोषप्रिय ब्राह्मण थे। उनकी पत्नी श्रीमती जीवनी देवी भी हरदुआगंज की ही थी। गृहस्थ ही गाढ़ी सामान्य गति से चल रही थी। जब शंकर जी द्वादश वर्ष के थे तभी इनकी माँ लोकोन्तरवास के लिए चली गयीं। माँ की भीतल छाया के

अभाव की पूर्ति पहले कुछ दिन नानी से मिली । इसके बाद इनकी बुआ अपने साथ अनुपग्रहर ले गयीं थी । नौ वर्ष की आयु तक रंकर जी अनुपग्रहर रहे थे तथा इसके बाद अपनी जन्म-भूमि हरदुआगंज आ गये थे ।

चिन्मय मेधा के चिकने पतलों में "होनहार बिबान" का पूर्व तैल दिया । अल्पकाल में ही इन्होंने श्रीम बोध, तारस्का चन्द्रिका, अमरकोष प्रभृति ग्रन्थों का बोध कर लिया । हिन्दी के साथ ही इन्होंने उर्दू, फारसी, संस्कृत भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया । हिन्दी के प्रति विशेष आसक्ति होने पर भी संस्कृत फारसी और उर्दू के अनेक सद्ग्रन्थों का अनुशीलन किया । अंग्रेजी न जानने पर भी उसके ग्रन्थों के प्रति इन्होंने जिज्ञासा एवं सम्मान भाव था, ये अन्य लोगों से अंग्रेजी के प्रसिद्ध ग्रन्थों का अनुवाद करवा कर सुना करते थे ।

तुलसी के प्रति रंकर जी विशेष श्रद्धा थी इन्होंने श्रीरामचरित मानस का अध्ययन घौदह बार किया था । इसके अतिरिक्त कबीर, तूर भी इनके प्रिय कवि थे । रीतिकालीन कविता के प्रति भी इनका अनुराग दर्शनीय था । देव पद्माकर बिहारी और केशव भी इन्हें प्रिय थे । साथ ही साथ उर्दू शायरी के प्रति भी इनका विशेष अनुराग था । गालिब, हासी, इक़बाल, दाग़ और जौक़ की कविताओं को ये बहुत सराहते थे ।

रंकर जी का विवाह हरदुआगंज के ही पं० घुन्नीलाल की सुपुत्री गुलाब देवी से हुआ था । रंकर नाम पाने के बाद इन्होंने अपनी पत्नी का भी नाम रंकरा बना लिया था । रंकर नाम से उन्हें इतना लगाव हो गया था कि उन्होंने अपने तमस्त पुत्रों के नामों में "रंकर" का समावेश किया, यहाँ तक कि अपने कुत्ते के नाम में भी उन्होंने इसी लय में "लेड्डी रंकर" रखा था । इन्होंने दिनों रंकर के पिता का स्वर्गवास हो गया था । अब रंकर जी को अपनी

पत्नी के उदर पोषण की भी धिम्ता हुई । पहले इन्होंने बच्चों को पढ़ाकर धनार्जन प्रारम्भ किया । इसके बाद वे अपने मौता के पात कानपुर चले गये । वहाँ जाकर इन्होंने नक्का नवीन का कार्य किया तथा वे पदोन्नति पाकर ज़िलेदार {तब ओवर सिवर} बन गये थे ।

वास्तव में कानपुर जाने से पूर्व ङ्कर, ङ्कर न थे बल्कि नाथुराम उर्मा थे । कानपुर में श्री प्रतापनारायण मिश्र ने इन्हें "ङ्कर" उपनाम दिया । कुछ दिनों बाद ङ्कर जी कानपुर के अमानवीय एवं अशुभ व्यवहार से आहत ङ्कर ने अखिलम्ब त्यागपत्र दे दिया । और कानपुर छोड़कर हरदुआनंज का भाग्योदय हुआ "निकुष्ट नौकरी" को लात मारकर ङ्कर ने स्वाम्भत व्यवसाय करने का इरादा किया । लोक-सेवा के भाव से प्रेरित होकर इन्होंने चिकित्सा अध्ययन किया उल्लेख बात यह है कि ङ्कर जी निःशुल्क चिकित्सा करते थे । वे धनवान् रोगियों से धनहीनों के लिए औषधि का प्रबन्ध करवाते थे । चिकित्सा उनका व्यवसाय न था । वह समाज-सेवा का व्यावहारिक रूप था और था देश सेवा का सर्वोत्कृष्ट साधन । इसके अतिरिक्त समाज में व्याप्त विधि बुराइयों के उन्मुक्तन के लिए वे जीवन भर तथेष्ट रहे । आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में इन्होंने प्राण पण से सहयोग दिया, उनके व्यवहार में उपयोग भी किया । कहा जाता है कि उन्हीं की प्रेरणा से अजीमूद जिले में आर्य समाज की शाखाएँ खुलीं । इन्होंने हिन्दू समाज में स्त्रियों की दुर्दशा पर वे विशेष रूप से दुःखी थे । इन्होंने बाल-विवाह को अस्वीकृति दी । ब्याक्कम की भी इन्होंने बाल-विवाह को अस्वीकृति दी । ब्याक्कम की भी इन्होंने विजहना की ।

ङ्कर जी ने ग्यारह वर्ष की अवस्था से ही यह काव्य रचना करना शुरू कर दिया था । समस्या पूर्तियों में वे उत्पन्न पद थे । कवित्त के सम्मान स्वरूप अनेक बाल, दुबाले, बगड़ियाँ, पुरस्कार और उपाधियाँ उन्हें

प्राप्त हुई । मृत्यु से पूर्व ही उन्हें आमात हो गया था । माद्रपद कुब्ज रविवार तंका 1989 वि० को उन्होंने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ईकर जी में अच्छे तथा प्रबुद्ध नागरिक के सभी गुण विद्यमान थे । उनकी सरलता, विमलता, कठ्ठा भयता, सहिष्णुता, निःस्वार्थी भाव समाज और राष्ट्र के प्रति उनकी दायित्व भावना उन्हें महान् पंक्ति में खड़ा कर देती है । ईकर जी ने बहुत सी कविताएँ राष्ट्रीय आन्दोलन और स्वातंत्रता से सम्बन्धित की है और इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन का आनंद भी अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से जन समूहों में जागृति उत्पन्न की थी ।

—

श्री इन्द्र वर्मा

सामान्य परिचय :

20वीं शताब्दी के जनकति सर्व स्वतंत्रता सेनानी श्री इन्द्र वर्मा का अलीगढ़ जनपद में विशेष स्थान रहा है। इन्होंने ब्रज-जनभाषा और ऊँची बोली में ग़ज़ल, कव्वाली, रतिया, भजन, लोकगीतों के माध्यम से तोड़ जन्ता की राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन चलाने के लिए प्रेरित किया। इनकी रचनाओं में क्रान्ति एवं विद्रोह के स्वरों से आजादी का बिगुल बजाया।

वर्मा जी का जन्म अलीगढ़ जनपद के गाँव नौहाटी में लगभग सन् 1890ई० में हुआ। इनकी बाल्य-शिक्षा हरदुआगंज साधू आश्रम में हुई। इनके पिता का नाम श्री नेकराम जी तथा माता का नाम श्रीमती जानुकी देवी था। इनकी दो भादियाँ हुईं। दूसरी पत्नी से इनका लड़का सुरेन्द्रपाल आजकल बुर्जा में निवास करता है।

वर्मा जी बचपन से राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित हुए। इनपर आर्यसमाज का गहरा प्रभाव रहा। ये जनपदीय राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर सक्रिय रहे और इन्होंने कलकत्ता, बनारस, नागपुर, झाँसी आदि आन्दोलनों में भाग लिया। इनमें इन्होंने अनेक उत्तेजक भाषण भी दिए। झाँसी से इन्हें कई बार तो - ती के इनाम मिले।

इन्होंने गाँधी जी, मोलाना अब्दुल कलाम आजाद,

सरदार भगतसिंह , लाला लाजपत राय , बिठ्ठल भाई पटेल तथा अलीगढ़ के सर्वप्रथम तत्पक्षक अहमद खान , डा० मल्लान सिंह , डा० भगतसिंह , मो० हाफिज उतमान , तोताराम राठी आदि नेताओं के साथ राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया ।

सन् 1921 - 22 में असहयोग और विनाश आन्दोलन में कर्मा जी को गिरफ्तार किया गया । 18 माह की सज़ा और तरह-तरह की यातनारें इन्हें दी गईं । जेल में रहते होने पर कर्मा जी देश की आजादी के लिए भाषण , लोकगीत , तथा सभाओं का आयोजन करते रहे । सन् 1935 में कर्मा जी की अचानक तबियत खराब होने पर इन्हें आगरा अस्पताल में भर्ती किया गया । बताया जाता है कि इन्हें वहाँ डाक्टर ने विष का इंजेक्शन दिया । इस प्रकार अलीगढ़ जनपद का यह राष्ट्रीय कवि और सेनानी इतिहास में अमर हो गया । विष के इंजेक्शन की पुष्टि डा० के इस कथन से हो जाती है - "यदि मुझे बहकाया गया न होता तो काब्र ऐसा न होता ।" बर होना या तो हो गया और भारत माता के इस सपुत्र की डाक्टर के हाथों बलि हो गई ।

चतुर्थ - अध्याय

4.1 अलीगढ़ जनपद में कवियों का राष्ट्रीय साहित्य :

राष्ट्रीय कवियों की संकलित रचनाएँ

4.2 श्री साहसिंह "मेहरा"

4.3 श्री वैद्य दीपचन्द आर्य

4.4 श्री नाथूराम शर्मा "शैकर"

4.5 श्री हेमसिंह नागर

4.6 श्री ठेकालाल मुद्ग

4.7 श्री रामप्रसाद पुजारी

4.8 श्री गजराजसिंह "सरोज"

4.9 श्री दयकन्ताल शर्मा

4.10 श्री नन्दासिंह चौहान "कंज"

4.11 श्री हन्त वरमा

चतुर्थ अध्याय

अलीगढ़ जनपद के कवियों का राष्ट्रीय साहित्य

अलीगढ़ जनपद के कवियों का राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतन्त्रता संग्राम में इस जनपद के कवियों एवं क्रान्तिकारी नेताओं ने अपनी जान की जोखिम में डालकर राष्ट्रीय साहित्य द्वारा उत्पन्न जागृति को अन्य प्रदेशों तक पहुँचाया। अन्य जनपदों से राष्ट्रीय आन्दोलन सम्बन्धी जो भी समाचार पत्र, बुलेटिन एवं पत्रिकाएँ छपती थीं उन्हें भी इस जनपद के साहित्यकारों और स्वतन्त्रता सेनानियों ने इस जनपद में तथा दूसरे जनपदों में पहुँचाने का कार्य किया। इस तरह से राष्ट्रीय आन्दोलन के साहित्य का प्रचार-प्रसार करने वाले लोग ब्रिटिश शासकों की दृष्टि छूकर तथा भेष बदलकर इस कार्य को करते थे। इस राष्ट्रीय साहित्य सामग्री का कार्य उन्होंने क्रान्तिकारी को दिया जाता था, जो स्वतन्त्रता आन्दोलन के विश्वास पात्र समझे जाते थे।

अलीगढ़ जनपद में भी दूसरे जिलों और राज्यों की तरह विदेशी शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय साहित्य से सम्बन्धित सामग्री प्रकाशित की। इस तरह की सामग्री जनता तक पहुँचायी जाती थी इसके लिए मुख्यतया कश्मिर के निर्मीक एवं साहसी आन्दोलनकारी रातों-रात प्रचार-सामग्री छोटने का कार्य करते थे। अलीगढ़ से यह सामग्री हाथरस, इगलास, खैर, आरौली, तिकन्दराराऊ, मुरसान व बैतवाँ आदि प्रमुख स्थानों को भेजी जाती थी। वहाँ से गाँव-गाँव में पहुँचती थी। इस तरह के समाचार निकालने वाले श्री गणपत चन्द्र केला एवं विजयगढ़ निवासी श्री रमेश चन्द्र आर्य मुख्य थे। ये दोनों पत्रकारिता में निपुण समझे जाते थे। साथ ही साथ देश प्रेम की भावना इनके हृदय में कूट-कूट कर भरी हुई थी।

आगे चलकर रमेश चन्द्र आर्य तो सन् 1942 की क्रान्ति में शहीद हो गये ।

सन् 1942 में कांग्रेस के सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री मोहनलाल सक्सेना बम्बई से राष्ट्रीय साहित्य सामग्री वितरित कराने के लिए अलीगढ़ चले आये । यहाँ आकर इन्होंने जनपद के कर्मठ नेता एवं स्वतन्त्रता सेनानी श्री तोताराम राठी जी को अलीगढ़ से प्रचार - प्रसार होने वाले राष्ट्रीय साहित्य से संबंधित सामग्री का उत्तरदायित्व का भार सौंपा था । राठी जी ने इस कार्य को बड़ी लगन और प्रसन्नतापूर्वक किया ।

अलीगढ़ जनपद के राष्ट्रीय कवि श्री हेमचंद्र नागर, श्री नवाचंद्र गोहान [कंज], श्री साहचंद्र मेहरा, श्री गजराजचंद्र सरोज, श्री ठक्करलाल शर्मा, श्री छेदालाल मुद्ग, पेश दीपचन्द्र आर्य, श्री रामप्रसाद पुजारी एवं नाथुराम शंकर आदि कवियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित अनेक रचनाएँ लिखी हैं, इनकी काव्य रचनाओं के अन्तर्गत ब्रिटिश शासक का शोषण उनके अत्याचारों, किसानों की समस्याओं, स्वराज्य प्राप्ति, विदेशी सरकार का बहिष्कार विदेशी वस्तुओं का त्याग, अंग्रेजी का विरोध, सामाजिक एकता व राजनीतिक चेतना आदि से सम्बन्धित आन्दोलनों की रचा अपनी कविताओं में की है । इन कवियों ने शहर तथा गाँव - गाँव जाकर कविताओं के माध्यम से पूरे जनपद में राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया । उस समय के समाचार पत्रों का मिलन बड़ा मुश्किल है । लेकिन कुछ पत्रिकाएँ जरूर मिली हैं : जैसे अलीगढ़ और सन् सत्तावन, स्मारिका [अलीगढ़ का गौरव] , सारस्वत, कलयुग आदि पत्रिकाओं में स्वतन्त्रता सेनानियों एवं अलीगढ़ के राष्ट्रीय कवियों के लेखों का उल्लेख मिला है । कुछ पत्रिकाओं के लेखों का उल्लेख निम्नलिखित है -

1. अलीगढ़ और सन् सत्तावन, दिनांक 16 अगस्त 1957, क्रान्ति में

अलीगढ़ का योगदान, पृष्ठ 3,4

2. अलीगढ़ और तन् सत्तावन, दिनांक 16 अगस्त 1957, लोकघर्षाओं
तन् सत्तावन, पृ० सं० 9, 11
3. अलीगढ़ और तन् सत्तावन, दिनांक 16 अगस्त 1957, तन् 1857 के
विद्रोह में अलीगढ़, पृ० सं० 10, 11, 12
4. स्मारिका, दिनांक 26 जनवरी 1986, स्वतन्त्रता आन्दोलन में अलीगढ़
का योगदान, पृ० सं० 3, 5
5. स्मारिका, दिनांक 26 जनवरी 1986, स्वतन्त्रता संग्राम में अलीगढ़ के
वीर शहीद, पृ० सं० 12, 15
6. स्मारिका, दिनांक 26 जनवरी 1986, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में
तन् 1920 से 1947 तक का इतिहास, पृ० सं० 18, 21 तक

4 • संकलित रचनाएँ

4.1 राष्ट्रीय कवि श्री साहबसिंह "मेहरा"

गीत - मल्हार 1942

सावन लागे बहन डरावनों जी, ऐजी कोई घर जंगना न सुहाय ।
 संग की सहेली भना मेरी झुलती जी, ऐजी कोई सावन रही हैं मनाय ।
 जीवन भया भना मेरी जेल में जी, ऐजी कोई विपदा रहे हैं उठाय ।
 दुष्ट जापनी भना मेरी देश में जी, ऐजी कोई बम्ब रहे बरसाय ।
 लाखनु भना विधवा है रहीं जी, ऐजी कोई केसे गान सुहाय ।
 करी री संगठन भना मेरी देश में जी, ऐजी कोई नेतृ लेउ सुहाय ।
 वीरेनु ते अब देश बचाओ जी, ऐजी गोरेनु ते लेउ छिनाय ।
 करी री हिफाजत भना मेरी देश की जी, ऐजी सबकुं एक कराय ।
 घुस न न देगे बीरेनु देश में जी, चाहे तिर धड़ते उड़ि जाय ।
 घर घर चरखा भना मेरी कातिये जी ऐजी कोई चतत्रनु लेउ बनाय ।
 लक्ष्मीबाई भना भनि कौजी, ऐसी कोई नाम लेउ चमकाय ।
 सुधर सदिगो भना मेरी देश में जी, ऐजी कोई घर-घर देउ सुनाय ।
 ले लेउ झण्डा भना मेरी हाथ में जी, ऐजी कोई भारत देउ जगाय ।

गीत सन् 1943

कहा कहा बात बताऊँगी - मेरी बारी मनदिया ॥
 जब मैं पनिर्था भरन जात ही - अवरज एक सुनाऊँगी ॥
 काऊ और ते मति कहि दीजौ - मन की बात बताऊँगी ॥
 हंसी खुशी पन्धट पे पहुँची - लोगनु देख लजाऊँगी ॥

जब मेरे झंडा लाल निहारो - तुन तुन गीत सिंहाउंगी ।
 जो कहूँ आज मरद में होती - ढूँढी ढूँढी पछिताऊँगी ॥
 हँसियों और हथोड़ा चारो - अब झण्डा मंगवाऊँगी ॥
 जो मेना मेरी कही करे तो - तोऊ संग ले जाऊँगी ॥
 "जीवन" की जब एक न मानू - छुँघटा में आग लगाऊँगी ॥

होली सन् 1945

यली मिल खेले होरी , रंगों प्रेम के रंग ॥
 ले ठप - टोल, मुरंग मजीदर - लेउ हाथ में संग ॥
 फूट गुलामी की होरी जराओ - वह प्रेम की गंग ॥
 गेहल गुलाल भरी झोरिन में - उमदि परो एक संग ॥
 एक होउ सबरे हुरि हारे - होय विदेशी दंग ॥
 झण्डा लाल लेउ हाथनु में, भरके नई उमंग ॥
 बहुत दिना "जीवन" तुम सोये - उठो बदल देउ दंग ॥

गीत-मल्हार

पग मति दीजो मेरे देश में, ऐसे तुन लेरे बेरी जापान ।
 तेरे बचन-न पावैंगि प्रान, पग मत दीजो मेरे देश में ।
 मन ललचायी तेरी देख के, मेरे देश में सोने की खान ।
 पूरव चीनी चीरा लड़ रहे और पश्चिम खुशी महान ।
 लाखो निपूतरी माँ ये है गई और लाखनु की गई जान ।
 आधेगी बीरन मेरे जेल ते , तब मारेगी तेरेउ मान ।
 संग लड़ेगी उनके समर में , और राखेगी भारत जान ।

भील और नागा मेरे सजि रहे, जिनके हाथनु तीर कमान ।

तोप तेरी फिर न चले और उड़ न सकेंगे विमान ।

मारि मजार्हे तेरे दलनु हूँ, मेरे वीरन मुगल पठान ।

जरमन भागे रण हूँ छोड़के, जिनके मारे है रुस्तिनुमान ।

देस बचाये मिल के सब जने, और गावेंगे मंगलगान ।

भेहूँ बुझाऊँ अबके तीर में, और ताल तलेयनु धान ।

हाथ उठायो ब्रण्डा लाल जी, वीरा सब मजदूर कितान ।

जीवन साथी अपने देश पे अब करहु निठावर प्रान ॥

मल्हार १ तावन 1943

तावन बदरा भेना मेरी धिर रहे जी - ऐजी मेरे घर नार्थे भरतार ॥1॥

रिमझिम - रिमझिम मेहरा बरसती जी, ऐजी कोई नन्हों नन्हों पड़त फुहार ॥2॥

कौन पे ओढ़ूँ भेना मेरी वुंदरी जी, ऐजी कोई कौन पे कसं भें सिंगार ॥3॥

चमक डरावे धेरिन बीजुरी जी, ऐजी छु मेरे जीयरा कुं रहो पजार ॥4॥

बाग विदेतिनु भेना उबर कर दयी जी, ऐजी जिन लुटी है फसल बहार ॥5॥

मोर पपिहरा जाने कित गये जी, और कोई उनके पालनहार ॥6॥

रेन ओघरी जियरा उड़ि रह्यो जी, ऐजी मेरे दुश्मन ठाड़े है द्वार ॥7॥

मो अबला की भारत देश में जी, ऐजी कोई पिय बिन मॉटी उवार ॥8॥

बुल न पाई तावन मास में जी, ऐजी कोई करी है कदम की डार ॥9॥

का विधि "जीवन" मेरो बचि सके जी, ऐजी भें तो हारी हूँ बाट निहार ॥10॥

"राष्ट्रीय रसिया" जनवरी 1943

सिर पे ठाड़ो है जापान ।

भूँसे मरें मजूर कितान ।

नार्ये रक्षा को सामान ।

उबका छुट रहे ॥१॥

देजी कपड़ा के द्योपारी ।

भूले अपनी जिम्मेदारी ।

तीरी कण्टरील सरकारी ।

जिन्ते लुट रहे ॥२॥

एक तो नेता पहुँचे जेल ।

दुजे नाँय देश में मेल ।

पाते बिगड़ रह्यो सब खेल ।

मुकददर फूटि रहे ॥३॥

देश में पड़ो अन्न अकाल ।

भूखे मरे रहे बूढ़े बाल ।

पूँजीपति उड़ाये माल ।

आनन्द लुट रहे ॥४॥

बोस सिंघापुर पहुँचो आय ।

देउ सब पाकू हाथ लगाय ।

हमें धीरे में रह्यो फंसाय ।

बोल सब झूठ कहे ॥५॥

देश की जन रक्षा को साज ।

निकम्मे हाथनु में हे आज ।

सँभारो अपने हाथनु काज ।

कैसे लूठ रहे ॥६॥

चट्टिके आधी हे जापान ।

निकारी लख संधानी घान ।

कौं हो अंगुन की संतान ।

लुटेरे लुट रहे ॥7॥

अंधी हो गई नीकरजाही ।

भेता दीये जेल पठाई ।

घर-घर परत हिम्मती छाई ।

साधन टूट रहे ॥8॥

अन्न को संकट है विकराल ।

देख कुं दुःख से लेउ निकाल ।

जेल में भारत माँ के लाल ।

मुँजे कूट रहे ॥9॥

कहि रहे कम्युनिस्ट सरदार ।

देख जिन घबराये गद्दार ।

नीची देख गई सरकार ।

मदती कूट रहे ॥10॥

मारो पग सिस्टनु को मान ।

मिट जाँय जर्मन और जापान ।

पावे जनता सुख महान ।

रस्ता लुट रहे ॥11॥

तुन लेउ भारत के सरदारी ।

जल्दी दुर्लभ नीति फितारी ।

"जीवन" कहे नगीला भारी ॥

बंधन टूटि रहे ॥12॥

बंगाल के अकाल आन्दोलन का गीत सन् 1943

विस्तुन्देवा "मिखारी" का गीत

और मई जागो जिजमान,
 चिहिया गा रही मंगलगान ।
 सुरज किरन पसारो आन,
 कैसे सोये चादर तान ॥ १ ॥ हरि गंगा, जय गंगा
 सीरी चले पड़ियाँ धार ।
 बालक पढ़न चले घटसार ।
 पीछे पहुँचे बम्बा पार ।
 देखो अपने छेत और बघार ॥ 2 ॥ हरि गंगा, जय गंगा
 जाग परी सब पीसन हार । गोबर कुटो करें विचार ।
 घर आँगन सब रहीं बुहार । पानी भरन चली पनिहार ॥ 3 ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 में गयी पाँच कोस ते आय । दीयी घर घर अलाव जगाय ।
 बाबाजी की भेत बनाय । चंदन छापे - तिलक लगाय ॥ 4 ॥ हरिगंगा, जयगंगा
 मेरी अरज सुनी घर ध्यान । साँची साँची करें बखान ।
 भैया में हूँ ठेठे किसान । ना जानू कछु पेद पुरान ॥ 5 ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 मेरे छोरे बैठो आय । तुम हूँ मतलब देखें बताय ।
 सब पंचन हूँ सीत नावाय । गंगा समनख हाथ उठाय ॥ 6 ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 यों ते पुरब में बंगाल । जामें परी अन्न की काल ।
 लाखनु मर गये बुढ़े बाल । ताँकी तुम्हें सुनाऊँ हाल ॥ 7 ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 सब दिन महन्त करें किसान । उपजाये भैंरें और धान ।

ताके घर पे रहे न छान । यह है कलियुग की वरदान ॥ 9 ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 जब सब फसल भई तैयार । पहुँचे कारिन्दा - कुटवार ।
 माँगे सुद-लगान-उधार । घर घर दीने डेरा डाल ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 हे गये सब कितान लाचार । आह गये आर्तियनु के थार ।
 ते गये सवरी नाज बजार । खास-बुजारी भरे संभार ॥ 10 ॥ हरिगंगा, जयगंगा
 कब कबु बाकी बची न नाज । दे दये - पीता बाकी व्याज ।
 भूखे कोई होय न काज । पाते बुरों न कोई राज ॥ 11 ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 नी रह गये दीन कितान । नाँय रह्यी खाइवे की सामान ।
 बिक गये धरती-उत-मकान । चूल्ही-पाकी-चामर-धान ॥ 12 ॥ हरिगंगा, जयगंगा
 बनियनु खोले चोर बजार । एक टका के कीने चार ।
 सब लैग मय गयी हा हा कार । भूखे मरन लगे नर नार ॥ 13 ॥ हरिगंगा, जयगंगा
 नाज चोर मन में मुक्ताय । दीये एक दम भाय बढ़ाय ।
 पा बेरी कूँ काल न खाय । मरी गथा तो फुलत जाय ॥ 14 ॥ हरिगंगा, जयगंगा
 इनकूँ सदा नफा ते काम । जे हे असली पैदुराम ।
 इनके कहा बरखाने काम । जे हे दुनियाँ में बदनाम ॥ 15 ॥ हरिगंगा, जयगंगा
 इनकी बातनु में गये आय । लिंगे सवरी नाज छिपाय ।
 बंगाली तो देयें कराय । इनै कबु न पार बतियाय ॥ 16 ॥ हरि गंगा, जय गंगा
 इतमें भूखे मरें कितान । उतन बम बरतावे जापान ।
 मुरदेनु खाह रहे कूकरुवान । काँ गये भूखेनु के भगवान ॥ 17 ॥ हरिगंगा, जय गंगा
 जो दुनियाँ के पालनहार । ऐसी कहा कही करतार ।
 जो तुम दीनी विपदा डार । माँगे मीख बिना घर बार ॥ 18 ॥ हरिगंगा, जयगंगा
 लावनु भई निपूती माय । जैसे दिन बहरा के गाय ।
 लाज शरम सवरी विसराय । दुखिया जीवन रही विताय ॥ 19 ॥ हरिगंगा, जयगंगा

कैसी है अन्याइं राज । यों न गिरि अब जा पे गाज ।

जो कितान उपजावे नाज । दाने दाने कूं मुहताज ॥20॥ हरिगंगा, जय गंगा
नहिं कहें कोय करो भगवान । नहिं छैन में विगरे धान ।

सबरो धर बैठे धनवान । उनकूं खुष लेउ पहवान ॥21॥ हरिगंगा, जय गंगा
जो होती अपनी सरकार । कबहुं न मँयती हा हा कार ।

वयों भूखे मरते नर नार । मिटते सुद खोर-गद्दार ॥22॥ हरिगंगा, जय गंगा
करता धरता भूखन मरें । छलआ बैठे मौज करें ।

हलुआ पुरिन पेट भरें । हम फिर कैसे सवर करें ॥23॥ हरि गंगा, जय गंगा
भिक्षु रोधे किलकारी मार । उनकूं भजो चामर - दार ।

झड़ी-झड़ी कुलवन्ती नार । अपने आँवल रही पतार ॥24॥ हरिगंगा, जय गंगा
जो तुम धीर धरोगे नाँय । तो फिर कितके द्वारे जाँय ।

काये तयारे भैया नाँय १ । काये तयारी बहना नाँय ॥25॥ हरिगंगा, जयगंगा
तयारी परीसिन दे रही धान । तुम दे देउ टुकरी को धान ।

तयारी होइगो पुन्य महान । तुम कूं खुस राखे भगवान ॥26॥ हरिगंगा, जयगंगा
जो तुम हो कुलवन्ती नार । हमकूं भिक्षा देउगी डार ।

कुल कूं अपने लेउगी तार । तयारी होइगो बेड़ा पार ॥27॥ हरिगंगा, जयगंगा
दुःख सुख टरती फिरती छाहें । सब पे सदा रहेंगे नाँय ।

अब मोषे फिर तुमपे जायें । इनकी याद भले रह जाँय ॥28॥ हरिगंगा, जय गंगा
जो विपदा में आवे काम । वापि कृपा राखें राम ।

वाकूं जाहो लगे न धाम । दुनियाँ लगी वाकी नाम ॥29॥ हरि गंगा, जय गंगा
मृती लगे घूँस ले जाय । चोर उचक्का छक ठग ले जाय ।

आग लगे, पानी भर जाय । सवरी माल अकारय जाय ॥30॥ हरिगंगा, जय गंगा

पाते कहन हमारी मान । भूखे नैन कूँ देउ दान ।
 सबते बड़ो पुन्य ले जान । कह गये गीता में भगवान ॥३१॥ हरिगंगा, जयगंगा
 भूखे तुम कूँ देयें असीस । तयारे रहैं भैंसिया वीस ।
 नामी बेल रहैं छत्तीस । नाती बेटा होगी तीस ॥३२॥ हरिगंगा, जय गंगा
 माँ-बहनों-बिटिया सुन लेउ । लत्ता पुन दार तुम देउ ।
 अपनी नाम अमर कर देउ । भूखे की रक्षा कर लेउ ॥३३॥ हरिगंगा, जय गंगा
 एक एक डेर ताल पटिजाय । पस-पस नाज हमें देउ लाय ।
 सब मिल बहु तेरी हे जाय ॥३४॥ हरि गंगा, जय गंगा
 असल मंगिता हमहूँ नाँय । जो तुम सौं ठगके ले जाँय ।
 चार छड़ी सूदे बतराय । सब दिन छटिया परकें छाँय ॥३५॥ हरि गंगा, जयगंगा
 मेल करी सबरे जियमान । हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-पठान ।
 अपनी धर्म लेउ पहवान । तयारों कहा करें भगवान ॥३६॥ हरिगंगा, जय गंगा
 जो तुम चाहो अपनी राज । पैदा करौं योगुनी नाज ।
 अपने आप संधारी काज । मत हो औरनु के मुहताज ॥३७॥ हरिगंगा, जय गंगा
 जापानिन कूँ देउ जताय । वीं तेरो काल रह्यो म्हराय ।
 तेरो दिगि वंश मिटाय । का तु बातें रह्यो बनाय ॥३८॥ हरिगंगा, जयगंगा
 लाज गरम सब तयारे हास । तिर पे आ पहुँची बरसात ।
 मैं अब अपने घर कूँ जात । याद राखियो मेरी बात ॥३९॥ हरिगंगा, जयगंगा
 मेरी साहबसिंह हे नाम । आऊँ सदा तुम्हारे काम ।
 मेरी खास नगोला गाम । ले लेउ मेरी लाल तलाम ॥४०॥ हरिगंगा, जय गंगा

जापान की येतावनी

॥ अधिक अन्न उन्नत उपजायी आन्दोलन ॥

रतिया सन् 1943

टेक ७ मेरी चौखट पे धरि पाँच अधरमी नफ़ा न पाविगी ।।

बालम तोय रह्यो अंगना में जो तुन पाविगी ।

लेके पेना हाथ मार तेरी बाल उड़ाविगी ।। । ।।

नाज, दार, चामर ते जो तु हाथ लगाविगी

देवर चतुर सुजान नार तेरी धरि कें दाविगी ।।42।।

जानति हूँ तु बुनी सबको खुन बहाविगी ।

परो न पाली तोड़ धींग ते हा हा खाविगी ।।3।।

देख पराई नार तिरों जो मन ललाविगी ।

मेरी "जीवन" पुत पकरि तोड़ मजा चखाविगी ।।4।।

तेरी दल कछु करि न सकेंगी पी० दिखाविगी ।

जित दम कारो नाग पीनियाँ पीछे छाविगी ।।5।।

तेरी संग संगती कोई बचन न पाविगी ।

डारि जाँय हथियार आज के पिण्ड छुड़ाविगी ।।6।।

नी भूखे जान हमें तु का डर पाविगी ।

मेरी एक एक बीर देश की लाज बचाविगी ।।7।।

में काटूंगी खेत संग पति लाई लाविगी ।

फसलि योगुनी होय मसीता खेत नराविगी ।।8।।

रतिया सन् 1943

॥अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन॥

टेक ७ पीतम अबकें फसलि कमाइलै दुनी हे जाय पैदावार ।।
 मूख मरें देश में बालक-बच्चे और नर नार ।
 धरि धरया कोइ नार्यें मँचि रह्यो हा हाकार ।।१॥
 तेरे ही कन्धनु पे भारी आज देश की भार ।
 विगरी में कोइ काम न आवे अपनी आप सँभार ।।२॥
 गुल्ला घोर अधरमिन अपने भरे खूब मँडार ।
 दुश्मन के रेजेण्ट गरीबनु लुटें ताड़ुकार ।।३॥
 धीरे कूँ पुचकार हाँकियो, कत्ताये नैक सँभार ।
 पेनाते मति हाथ लग्यो विगारि जाय घरवार ।।४॥
 जोती छै, लगाओ पानी, फसल करी तैयार ।
 नैक न देर कहें रोटि में तजि दूँ सब सिंगार ।।५॥
 कान डार के मैं हूँ लुंगी तेरी ती फटकार ।
 जुटे रही दिनरात काम में हे जाय छेडा पार ।।६॥
 जापानी कर रहे देश पे बम्बनु की बीछार ।
 देख रही भीगो बिल्ली ती जेगोर। सरकार ।।७॥
 ऐसी करो संगठन अपनी काँप जायें गद्ददार ।
 "जीवन" जग में नाम रहेगो गुन गाये संतार ।।८॥

...

रघेन्द्रपाल, अलीगढ़ के जनकवि - हेमसिंह नागर तथा साहबसिंह मेहरा,

पृ० सं० 97 - 100

॥ जापानी हमले की तैयारी पर प्रतिरोध के लिए छापेमार ॥

लाङ्गी सन् 1943

टेक० बनेगी छापेमार बनी मेरी झंडा लाल उठावे ।।
 यों नंदुलि कूँ समझावे - सासुलि कूँ बैठे मनावे ।
 कोई मति करियो तकरार - बनी - - - - -॥1॥
 बन्ना है जग उजियारी - लोढ़ा है लाल सितारी ।
 जिन मोहै सब नर नारि, - बनी - - - - -॥2॥
 मुखेनु कूँ अन्न दिबावे - बिदुरेनु कूँ कण्ठ लगावे ।
 कर रेका को परचार - बनी - - - - -॥3॥
 दुश्मन पे चोट करेगी - बिजली सी दूट पड़ेगी ।
 मँदायें मारामार - बनी - - - - -॥4॥
 रक्षा को पा० पढ़ावे - घर में अलाव जगावे ।
 सब सखियनु करे तयार - बनी -----॥5॥
 ना करे काल की रैका - पूँके धेरी की लंगा ।
 करेगी धुँआ धार - बनी -----॥6॥
 बन्ना के संग संग होले - मन में मित्रि सी घोले ।
 बन गई गले को हार - बनी -----॥7॥
 हाजिरा बहिन की प्यारी - जोड़ी की आकाकारी ।
 "जीवन" की तुने पृकार - बनी -----॥8॥

.....

गीत सन् 1943

टेक0 कहा कहा बात बताऊँरी - मेरी बारी नैनदिया ॥
 जब मैं पनियाँ भरन जात ही - अघरज एक सुनाऊँरी ॥
 काऊ और ते मति कहि दीजो - मनकी बात बताऊँरी ॥
 हँसी सुझी पनघट पे पहुँची - लोगनु देख लजाऊँरी ॥
 जब मैं ब्रह्मा लाल निहारो - सुन सुन गीत सिहाऊँरी ॥
 जो कहूँ आज मरद मैं होती - कड़ी - कड़ी पछिताऊँरी ॥
 हँसियों और हथौड़ा चारो - अब ब्रह्मा मँगवाऊँरी ॥
 जो भेना मेरी कही करे तो - तोऊ तंग ले जाऊँरी ॥
 "जीवन" की जब एक न मानू - घुँघटा में आग लगाऊँरी ॥

मल्हार १ तावन 1944

तावन सुखा बहना मेरी परिर गई जी ।
 रेजी कोई चलत पछिया ट्यार ॥
 धूरि उड़ति हैभना मेरी जेठ ती जी ।
 रेसी कोई पड़त न नन्हें नन्हें फुहार ॥
 धान बाजरा भेना मेरी सुखो जी ।
 रेजी कोई सुखे हैं बन और ज्वार ॥
 मोर पपिहरा भेना जाने कित गये जी ।
 रेजी कोई धोला कूकर ट्यार ॥
 कधुन सुहावे भेना मेरी या समय जी ।
 रेजी कोई गवत न गीत मल्हार ॥

तीज सनुने भेना मेरी अनमने जी ।
 ऐजी कोई मिलत न बाज बजार ॥
 वीर जवाहर भेना मेरी जेल में जी ।
 ऐजी कोई दुखियन केसरदार ।
 का दिन होइगी भेना मेरी देस में जी
 ऐजी कोई भूखनु की सरकार ॥
 हिल मिल बैठो भेना मेरी सब जने जी ।
 ऐजी कोई हरहु भारत को भार ॥
 "जीवन" एक दिन भारत वास के जी ।
 ऐजी कोई आवेगी फेरि बहार ॥

....

चौपाई । भादों १९५५ । इन्द्र दादगी का गीत

भ्रम -

धन - धन गाँधीजी महाराज - हमको लेने वाले तुराज ।
 सत्य अहिंसा के व्रत धारी - दीन गरीबों के हितकारी ।
 आजादी का प्रण हे ठाना - पहन लिया केसरिया वाना ।
 तीन रंगों का झण्डा प्यारा - हम सबकी आँखों का तारा ।
 हुत अहुत मिटाने आये - हमको यह बतलाने आये ।
 चरखा खादी को अपनाओ - फूट गुलामी शीघ्र मिटाओ ।
 भूखों को यह अन्न दिलाते - नंगों को कपड़ा बन वाते ।
 इनसे जापानी घबराते - घर चिमिहूँ चुपके हो जाते ।

ये भारत के सँत महान - वयों न करें इनका गुणगान ।
 आओ इनको बीश बुकार्यें - भारत को आजाद करायें ।
 बिछुड़े बन्धु मिलालें - बिछुड़े काज बनालें अपने ।
 जब हम सब मिल काम करेंगे - तदा येन आराम करेंगे ।
 पराधीनता मिट जावेगी - फिर न गरीबी रह आवेगी ।
 समता का आचार करेंगे - शिक्षा का प्रचार करेंगे ।
 आओ मिल कर करलें काज - जल्दी हम को मिले सुराज ।

....

गीत रसिया (जनवरी 1945)

एक दिन भारत की बगिया में - खिले अनेकन फूल ।
 रंग विरंगे फूल खिलेंगे - आम अनार, अंगूर फलेंगे ।
 मोर पपीहा करें किलालें - डाल डाल पर झूल ॥ एक०
 फिर न रहे कोई लुटन हारो - तुन हमारे को पुतन हारो ।
 बेइमान - नफ़ाखोरन की - उडि जाय सवरी धूल । एक०
 हिन्दू - मुसलम - सिक्ख - ईसाई - रहें प्रेम से भाई-भाई ।
 दीन धर्म के नाम लुहाई - हे जायें नष्ट समूल ॥ एक०
 बने पंच पर्यायत धारी - रहें न हाकिम अत्याचारी ।
 मिल जायें राजा और लुटेरे पाजी नामाकूल ॥ एक०



आजादी के वा उपवन में रहे न कोई झूल ॥ एक०

...

रघुचन्द्रपाल, अलीगढ़ के जनकवि - खेमसिंह नागर तथा साहबसिंह मेहरा,
 पृ० 101 से 110 तक

4.2 कवि धन दीपचन्द

आजादी का तराना : जिकड़ी मजन

साथी - जब ते आये फिरंगी भारत देश -

उत्पात सभी ते बढ़ रहे ।

करि रही जाति ते जाति द्वेष -

भाई ते भाई लड़ रहे ॥

गाइयो - जा दिन ते ये दुष्ट देश में बसे फिरंगी ।

ता दिन ते हो रही सभी बीजों की तंगी ।

मयि रह्यो हा हाकार । तबाह करि दियो देश को करि करि अत्याचार

करि रहे राज ललमुँहा बन्दर जे सात समुन्दर पार के

टेक - मुँह मुण्डन जुलम गुजारे ॥

गारी - बेकारी दी बढ़ा देश में बल्ला भेद धमाये ।

कर तात दिये , हाँ हाँ छेल उपवास किये ।

फूल - लाट साहब डलहौजी आया ।

गारी - सत्तावन का गदर हत्ती के जुल्मों ने करवाया ।

गददारों ने हाँ हाँ बिफल किया पारों ने ॥

झड़ - छीन-छीन सबकी जागीरें नये जमींदार बनवाये हैं ।

सभी रियासत और राज्यों में रेजीडेंट बिठाये हैं ॥

छन्द - हुकम डलहौजी ने दीया । बिना लिखी जागीर सभी का इस्तीफा लीया ।

इनामी मिली लिखी जिनकी ।

उनका दीया छोड़ और सबकी कीनी कुड़की ॥

जहाँ थी पैंतीस हजार ।

कुल दो ती ही बची छिनी सबकी कहे दलित गमार ॥

लाख कहे यह भरा मझ्या ।

कुछ हजार की बची मरी मानीं सबकी गझ्या ॥

छितायी के बारे निल्ले -

खान बहादुर राय साहिबी दे पाले पिल्ले -

तो परिदेशावात इन्हीं पिदुन ने रेंगे कान तुम्हारे ॥

मुँह मुण्डन जुलम गुजारे ॥१॥१॥

आल्हा - छोटे - छोटे देश विश्व में अपना चला रहे खुद राज ।

पर इतने विशाल भारत का चन्द विदेशी पहने ताज ॥

जात-पाँत और हुआ-सूत का हमको मिला यही उपाहार ।

दुनिया को मुँह दिखालते में हमको लाख-लाख धिक्कार ॥

फूल - अच्छी चीज सभी कबजा ली ।

गारी - गोरे मक्खन तोत उड़ावें हम सब देखर बाधें ।

केतन हारे हाँ हाँ मटर खाँय बेघारे ॥

झड़ - हीरा मोती ताल जवाहर नहीं कोहिनूर दिखाने हैं ।

पशु पक्षी तक के भारत से मार - मार ले जाते हैं ॥

छन्द - भेंदुका बन्दर तक तयारे ।

खरा, लोम्ड़ी, कुहूआ, गीदड़, तेगस हत्यारे ॥

हमारी छेती रखवारे ।

हिरण भेंदुवा तक ना छोड़े चीर फार मारे ॥

मूर्ति पत्थर की प्यारी ।

रतन जटित ले गए तस्करों के जरिया सारी ।।

तोड़ - सब घेदा दि कला कौशल के ले गये ग्रन्थ हमारे ।

मुँह मुण्डन जुलम गुजारे ।। ॥2॥

आल्हा - सिद्धि आदि किमियागीरी का जो था सब अनुभव का सार ।

लंदन संग्राहालय में पहुँचा सारा पांडुलिपि झंडार ।।

वीरह विद्या कला वीतरों में था जो भारत भरपूर ।

सभी सम्पदा गई विदेशों अब यहाँ मिट्टी धूर ।।

नमक मसाला तक नहीं छोड़े भई हाथ कैसी भगवान ।

आज फूट बेरिन तेन ही किया देश सारा बीरान ।।

पुल - कपड़े का व्यापार छीन लिया

झड़ - लंका ज़ायर मान घेस्टर के निज मील चलाते हैं ।

बो ही कपड़ा धिके यहाँ पर घमकीला लाते हैं ।।

छन्द = घमकीनी मलमल मक्खन जीन । रेशमी मलमल अह बज्जमीन ।।

बीस सौ बीस की धोती । कितान तनीचरा मोटी ।।

धिके नरडिबन का लदठा ।

टुकरी और जुलाहे से सबने खाया छुट्टा ।।

तोड़ - कोली और जुलाहे तरतें मूखों मरे विचारे ।।

मुँह मुण्डन जुलम गुजारे ।। ॥3॥

आल्हा - ऐसे पागल भए भारती मर्गि नहीं कोई रोजगार ।

रुखी-तुखी बाँध नौन की पैलें डंड बैठकर पार ।।

जुल्फ रवाँ में पटिया पारें बना रहे नारी रूप ।

पदटेदार घमकनी टोप। तिर पे पहन बनि रहे मृग ।।

गिल्ली डंडा खेलें पट्टे या फिर खेलें गोली टीच ।
 छली बैठ ये ही धन्या जुलूमिल खेलें मइयन बीच ॥
 चौतर या पौ छक्का खेलें सभी निठले खेलें तास ।
 भुंछे प्यासे मन बहिलायें या फिर उछे रंग फल्लास ॥

फूल - चल रहे भेद नीति की धारें ।

झड़ - नीकरबाही अपनी से ऐसी हरकत करवाते हैं ।
 हिन्दू मुसलमान दोनों को आपस में लड़वाते हैं ॥

छन्द - भगा बाजारों में गहवा ले जा रहे मुसल्ला काटन देख लेउ भइया ।
 मस्जिदों में सुअर डारें हिन्दुन की करतुन लड़वा दिस मतवारे ॥
 एक मत रहने मत दो इनको ।

मिलके ले लें राज भगादेभारत से हमको ॥

तोड़ - हम खुद बने त्रिकारी कुत्ता गोरों के लहकारे ।

मुँह मुण्डन जुल्म गुजार ॥१५॥

आल्हा - कभी आपने यह सोचा है कैसे भारत बना गुलाम ।
 सब पूछो तो जाति पाँति अरु ऊँच नीच का ये अंजाम ॥
 किसी समय सब ये आर्यकृत था एक जाति थी आर्य प्रवीण ।
 महाभारत से चार ही गयीं हमसे ब्रह्मणादि नवीन ॥
 सदी सातवीं की ये घटना भूत दुई यहाँ से तकरार ।
 देश द्रोही भये देश में भई विदेशिन की भरमार ॥
 क्षत्री तप विद्या में बढ़ि गये गुरुओं के तिर चढ़ि गया भूत ।
 अग्नि कुंड पे दीक्षा देकर बना दिस नकली रज्जुत ॥
 सभी बबंहर उठा देश में क्षत्रिन के संग मारामार ।

कमर धरपि बरबाद बहुत ते फिर भी ना समझी बलहार ।।

सामाजिक बहिष्कार कर दिया कई तरह किया अपमान ।

तब भी साहस को ना तोड़ा डट रहे क्षत्री अरमान ।।

में ऊँचा बेटी ना दूँगा ते लुंगा तुन ते कर कान ।

तु तो नकली में असली हूँ क्यों न करेगा कन्यादान ।।

आपस में यों बेर बंधि गया बनि गये रिस्तेदार जरूर ।

भुज बल की परिपाटी पड़ गई मर देत्य में बड़े-बड़े शूर ।

गौने ब्याह लड़े चिन तूने नाहि बल का बढ़ा सम्मान

प्रतिश्रीध की बढ़ी भावना ज़ेँ जौत पात का स्वाभिमान ।

मतलब की लड़े लड़ाई धीबी बट्ये मारे मुख ।

मरे कटे दे जान गुप्त में यों बल का गया विरख सुख ।

नये - नये धन्ये अपमान तेनिक जगत गई बहुत रुठ ।

परदेशीन को दाव लगगया भारती करन लगे रंग रुठ ।

बड़े -बड़े धीर परतपर लड़के पहिले ही गए विघटित शूर ।

शेष रहे पलटन में आँके धी भी हो गए चकना चूर ।

इस तारिमा मुगलान पठानी और फिरंगी कीना राज ।

यों सदियों ते गुलाम बन के अब मुस्लिम ते हे आयो ताज ।

फुल - तब अन्न ले गए विदेशी ।

झड़ - दो करोड़ मर गए भारती बिना अन्न के बेघारे ।

सदा कोट ताऊन ते गई बिना इलाज इननु मारे ।।

छन्द - जड़ी बूटी तक ना भाई ।

गई विदेशी में उनकी यहाँ पड़ गई कमताई ।

चिकित्सक कहाँ पड़े जाके

कहाँ कालेज स्कूल पेट के ही हो रहे फाके ।

भेद हमने ही डारे हैं ।

पढ़े न स्त्री शुद्ध सत्य ये बचन तुम्हारे हैं ।

तोड़ - तो फिर हम ही जेयन्द बने बुलाके तार दुग्मन तारे ।

मुँह मुण्डन जुलूम गुजारे ॥ १५॥

पूज - उज्जु गयी सोने सी धरती ।

झड़ - तीस तीस तक जोत लगायें तब ही मन बीछा भाई ।

होय बाजरा बीमें कैसी कम्बळती आई ।

छन्द - अरहरनु मार जाय पारो ।

सरसों और दुँआ ना छोड़े घेपा हत्यारो ।

तियाई का साधन थोड़ा ।

चना और जी का होना ये बरसा पे छोड़ा ।

तोड़ - चावल दे रंगून और भैंहें आस्ट्रेलिया वारे ।

मुँह मुण्डन जुलूम गुजारे ॥ १६॥

आल्हा - अर्थ व्यवस्था क्षीण देश की चहुँ दिश मय रही हा हा कार ।

फेला दमड़ी और छदमा कौड़ी तक पहुँचा कब वार ।

छेती बंजर मई देश की बंजर से अमर बटुवार ।

कूआ छेती या वर्षा पर नहर तियाई कहीं कमार ।

एक फसल मुश्किल से होवे जाको जाय मुकददर घेत ।

वरना बीज गों को जावे पानी के बिन सुखे छेत ।

बतीसा में छाल या गर बागड़ के गड़िया पुत ।

पड़ा अकाल बिना वर्षा के ऐसी सुख पड़ी अकृत ।

जन्म मजदूरा खेती कर रहे नम्बरदार बेच रहे घास ।
 ओँखों देखा हाल मेरा ये मत समझो इसको उपहास ।
 बेहो , कुरता , धोती पहिने मिरजमी या ठेक लिया कोट ।
 महिला अंगिया और ओढ़नी धरती पहिने लागी छोट ।
 गहने कड़े बरा या हंसली रागा काता डरी गिल्लिट ।
 बड़ी गरीबी बहुत देश में, कोई कोई लख बीहरा तेठ ।
 देशी टुकरी जुनाहा यही गरीबों का पहराव ।
 यत्र विदेशी चीज कीमती पहिने बर चातर या उमराव ।
 टका उँट बिक रह्या देश में बिना टका को पुँछें बात ।
 बेकारी ने बादर फारे सबकी बिगड़ गई औकात ।
 चाँदी का रुपिया ले जायें सालाना पिल्लासी कोट ।
 लूट करी सोने चाँदी की देय हाथ कागज का नीट ।
 डेरी खील दूध की दीनी सब मक्खन ले जाय न्कार ।
 बेजी ब टैबल अरु सपरेटा वो भी पल्ले पड़े न भार ।
 उभा डूँध करे ना मदी चिन दई भेज समुन्दर पार ।
 समाझार जंगल से लागे सब कहीं पेट उद्धार ।
 कारीगरी लुप्त भई सारी भए भारती सब बेकार ।
 सुई तलक बाहर से आवे भई देश की मिट्टी डवार ।
 ऐसी भयो फिरंगी जातन पैदा होत मरे संतान ।
 वरमा सहित देश भारत में कुल इक्कीस कोट हस्तान ।

पूज - ओँखें कुन न लगी भारत की ।

गारी - मिले स्वराज देश का हमको यह जिज्ञासा हमारी ।

कुछ अधिक नहीं हाँ हाँ बहुत ही कही ।

झड़ - स ओ ह्युम कलक्टर ने मिल मीटिंग एक बुलाई थी ।

बम्बई वाली टैंक जाय यह काग्रेस बनवाई थी ।

छन्द - अठारह सौ सन् पिछवासी दिसम्बर की तिथि अठ्ठाईस ।

फिर सन् पन्द्रह में आके मिले गाँधी जी आके ।

फतह जर्मन को करवाया ।

इस इनाम में भारत ने एक रोलट बिल पाया ।

विरोध उसका हुआ बेकारी ।

चोरा-चोरी आदि कांड किस जनता ने मारो ।।

तोड़ - तो परि चिड़कर जलियाँ बाग माहिं बहुजन मन से संहारे ।

मुँह मुण्डन जुल्म गुजारे ।। १७१

आल्हा - स काना गज टुकड़ी बिक रही डेढ़ तेर का बिक रहा घीय ।

तीस तेर की बेहर आधे मटरा सात थड़ी का जाय ।

पाँच तेर का तेल बिके और छः पत्तों की भेली जान ।

चार तेर की बिके जलेबी अस्ली ची की लो पहचान ।

चाँदी तीनाना को तेले सोना इक्कीस भाव बिकाय ।

मिले मजदूरी कुल तीनाना फिर भी कर बेठे - -

ये दुर्दशा देख भारत को सती कुपा करी भगवान ।

नीम जम गई काँग्रेस की होने लगी चीर बलिदान ।

फूल - काँग्रेस हरकत में आयी ।

गारी - माँगत दधी स्वराज न अब हमले पूर्ण आजादी जो

तिलक कही हाँ हाँ पाटी मान गई ।

बापू ने भी विरोध न कीना जो ये विरोधी मारी ।

अब मती हरो हाँ हाँ उठो बलिदान करो ॥

बड़ - मोतीलाल, जवाहर, गाँधी के आदि आजाद सभी ।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी आदि सभी ।

छन्द - मयी देहातों में हल्ला काग्रेस की फौज बन गई रल्ला के रल्ला ।

समय की देखो बलिहारी ।

जो ये नम्बरदार सम्हारी उनसे नम्बरदारी ।

सन् उन्मीत तो तीस जनवरी मास करी तैयारी ।

छब्बीस की तारीख अहिंसक युद्ध हुआ जारी ॥

तोड़ - तो फिर असहयोग का बिगुल बज गया गुँज उठे जिकारे ।

मुँह मुण्डन जलम गुजारे ॥ १०॥

आल्हा - बाई काट विदेशी शिक्षा स्कूलों से करी किनार ।

बाई काट जराब विदेशी नशा सेवन का बहिष्कार

कृषि कर मत देउ राज को सुनलो प्यारे वीर किसान ।

वरखा कातो खादी पहिनों देउ लेउ देशी सामान ।

नमक बनाम समाप्त देश में दीना तोड़ नमक कानून ।

घोहल्लतर हजार जेल गए इससे कुछ अधिक या न्यून ।

पुरुष ही नहीं किन्तु नारी भी असहयोग में रही सरकार ।

लालाओं की गाली सहती पिकेटिंग में रही अगर ।

धरना देकर जेल भर दई नीकरगडही रहे गुमार ।

पिता हमारे गाँधी लिख ले गाँव हमारा कृष्ण मन्दिर घर जेल हमार ।

अदम्य सदम नाम बताए नीकर गाह गए धबराय ।

पकड़-पकड़ के दौड़न लागे जगह जेल में डाली नाय ।
 एक लाख जेली भर जाते जाते छोड़ देत अंग्रेज ।
 सती थी अफवाह देश में राष्ट्र संघ का यह बंधन ।
 सन्धि कर ली बीच हाल के सन्धु जेकर करी न टार ।
 यथा पूर्व वही चाल चली बस ये सती झूठी ।

फूल - फिर आदेश भयो बापू को

झड़ - हाट, बाट, कल कोट, कचहरी हफ्ते भर हड़ताल करो ।
 करो व्यवस्था भंग राज की अब इसमें मत टाल करो ॥

उन्द - हुकुमत ने यह तुम्हाराह ।

अपने चमचो फौरन मीटिंग बुलवाह ॥

गुलामें से कही मत डरो ।

देखो दुकान बन्द उसी को फौरन मील करो ॥

गर छबराय सभी लाला ।

ये बीमार पड़े खटिया से खोल-खोल ताला ॥

बोध भारत की किल जाती ।

सन् बल्लतीस में हमको आजादी मिल जाती ॥

तोड़ - तो दूध पिलाय हमीं ने पाले घर के विधधर कारे ।

मुँह मुण्डन जुल्म गुजारे ॥ ११॥

फूल - ये चतुरंगी तेन हमारी ॥

गारो - जा धरती पर जन्म लियौ ये धरती मात हमारी ।

बस करो मरो हाँ हाँ देना आजाद करो ।

झड़ - एक अहिंसक सत्याग्रही दूजे बकरे माहँ हे ।

तीजी तेन समर्थक व्यष्टित तीनों तेन सजाई हैं ।

तोड़ - तो परि चौथी तेन गर्म दल वारे । क्रान्ति के मतवारे ।

मुँह मुण्डन जुल्म गुजारे ॥ १०॥

आल्हा - ये गद्ददार देश में बहुतक अपनी जनता में ही क्रूर ।

गाँधी टोपी देख मुँह पर उस व्यष्टित से रहते दूर ।

गाली देते काँग्रेस को अँग्रेजों की कर तारीफ ।

छोटी मोटी की क्या गिनती जिनको समझो बहुत गरीब ।

दिला गवाही इन दुष्टों ने फाँसी तक दीनी लगवाय ।

वे ऐसे जयचन्द भये देश में क्रान्ति वारे दिस मरवाय ।

फूल - ये आजादी के दीवाने ।

गारी - बहुतक फाँसी देकर मारे ।

बहुतक देश निकारे ॥

कारे पानी हाँ हाँ भयी आर्थिक हानि ।

छन्द - केस काकोरी में भाई ।

लाहिणी ने फाँसी खाई ॥

जहीद हुए अक्फाक उल्ला ।

भए विशिमला भी विसमिल्ला ॥

झड़ - राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह फाँसी देकर मारे हैं ।

चन्द्रशेखर आदि अनेकों मीते के घाट उतारे हैं ।

मुँह मुण्डन जुल्म गुजारे ॥ ११॥

तोड़ - नेता यतीन्द्रनाथ हमारे जेल में मूँछ मारे ।

आल्हा - तन् पेंतीस में विधान देकर प्रान्तीय सत्ता दई बनाय ।

कांग्रेस ने सत्ता लेकर दिया देश को सुख अधाय ।
 पर तन् उन्तालीस में जाके विग्न युद्ध छिड़ गया जहान ।
 जर्मन रूप ब्रिटेन झिड़ गए साथ ले लिया हिन्दुस्तान ।
 कांग्रेस से बात न पूछी देख देश का यह अपमान ।
 सब पद त्याग करो शासन से हुआ पार्टी का फरमान ।
 अतहयोग की बजा हूँगी बहिष्कार का बना प्रण ।
 एकाकी सत्याग्रह जारी कांग्रेस ने दिया कराय ।
 फिर भी शासन - - - - -
 गोरे कहाँ धर्म पहुँचाने राजनीति की पकरी राह ।
 कांग्रेस ने भी पथ बदला कूटनीति की पकरी बाँह ।

पुल - भारत माँ के उठो सपूतों ।।

गारी - कर-कर समझोता करकर धर्म की टाल अड़ाई मन फट जाये ।

हाँ हाँ देश यों बट जाये ।।

बड़ - अब तो जंग छिड़ो दुश्मन से महाभारत की नीत करो ।

गढ़ गया आज कर्ष रथ पहिया अब अर्जुन प्रहार करो ।

छन्द - सत्य, अहिंसा ये ना माने ।

धर्म को यह ना पहचाने ।।

फिरंगी भारत से भागो ।

नारा दिया लगाय राज्य को तोड़ देव लागो ।

घोषणा कर पीटा डंका ।

ये भारत के वीर लूट लो रावण की लंका ।।

तोड़ - तो परि तन् उन्तालीस अगस्त आठ को ये बापू के नारे ।

मुँह मुण्डन जुल्म गुजारे ।। §12§

आल्हा - गाँधी टोपी देख मुँह पे रौब खाय सरकार की खान ।
 उतमें भीगी भी झरिये तेज बनन दे पाकिस्तान ।
 दुम हिलाय आका से बोले ये हे कांग्रेस के दूत ।
 बघते रहने इन जालिमों से ये गाँधी बाबा की भूत ।
 पहिन -पहिन खादी के कुरआ जैसे धूम रहे गेतान ।
 कैसे राज्य लेगे गौरन से इनकी अकल भई खफान ।
 हज़ूर का धौंसा दुनिया में तारे भूमण्डल पे राज ।
 या खादी के यहाँ बंडा ही से कैसे जाय फिरंगी भाज ।
 जोड़ी मिल गई इन दोनों की मुस्लिम लीगी अरु हुक्काम ।
 मारे मार काग़िस्तिनु में वार फँद चंदे के नाम ।
 कभी आयकर आदि बहाने करे गरीबन को तंग ।
 ना देने पर मार लगावे मुर्गा बना करे अरु तंग ।
 आज मोरचा लगा देश का अंग्रेजों हो लो हथियार ।
 अन्तिम वार चुनौती तुमको भागी हिन्दुस्तान हमार ।
 होके गहीद स्वर्ग को जायें वरना भीमें भारत राज ।
 जन्म-सिद्ध अधिकार हमारा तुम भारत से जाओ भाज ।

- पें० दीपचन्द बारहमासी, पृ० सं० १

फूल - उत भिड़ गए गर्म दल वारे ।।

गारो - बन बीमार छूट नेताजी बानी पहिन पठानी ।

जापान गए हाँ हाँ होत जर्मनी भए ।।

लड़कर करे स्वतन्त्र देश को ये ही मक़्त में ठानी ।

सब ज़ान लिए हाँ हाँ भारती कैद भए ।।

बड़ - आजाद हिंद सरकार बनाके अपनी सैन सजाई है ।
 अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की दी हुली बजाई है ।
 आल्हा - सबको सपथ दिया भू माँ की माता तौय करें आजाद ।
 बोलो जे भारत माता की इन्कलाव जिन्दाबाद ।
 तेइस अवदुखर तैतालीस को युद्ध घोषणा करी उचार ।
 सिंधापुर से झोंती रानी ब्रैड भी करी तयार ।
 तीनों लाख लहं सब सैन नारी पुरुष सब साथ ।
 बड़े होसला सब जवानन के मानों लन्दन चली बरात ।
 बाँध-बाँध हथियार चलि दिस धौंसा खजत गगन आवाज ।
 अपनी-अपनी चमू से से चले सहगल दिल्लीबाह नवाज ।
 हल्ला बोल दिस भारत पे देश पतन सब रहे हुलसाय ।
 नागालैंड फिर निकोबार और अंडमान को लिया छिनाय ।
 फेर कोहिमा को आ घेरा वह भी मुक्त लिया करवाय ।
 घेर लिया इम्फाल आय के दुश्मन फौजें दहँ भगाय ।
 अब की बार मणिपुर चलके उसको दो आजाद कराय ।
 उसके बाद चली दिल्ली को देव किले पे ध्वज फेराय ।
 जे हिन्द सैन घुसत भारत में देशी फौज रही हुलसाय ।
 सन् सत्तावन के देखन को यह अक्सर अच्छा गया आय ।
 वहाँ की चर्चा फिर सुनायें अब यहाँ का सुन लो इजहार ।
 सन् ब्यालीस के आन्दोलन से मची देश में धूम अपार ।
 हिंसा का हथियार जीत रहा कर रहे लोस लड़ाई पार ।
 करो मरो का नारा देकर उठे महात्मा भी ललकार ।

अंग्रेजो छोड़ो भारत को मई बगावत के कुमार ।
 उधर हिन्द सागर पलटन अंग्रेजों के मई खिलाफ ।
 हम भारतवासी भारत से नहीं लड़ेगे कहते साफ ।
 छवके छुट गये गोरों के डाम डोल देव सरकार ।
 कर अधिप कांग्रेस पार्टी नेता दिए जेल में डार ।
 अहमद नगर किले पहुँचाए कार्यकारिणी सभी सदस्य ।
 अति व्याकुलता मई देश में नेताओं का कहा मविष्य ।
 बाढ़ दम्पति मूल भेजे सर आगा खों के पैतृज ।
 करो मरौ ताँडव मय रहा गद्दारी के मन ठेत ।
 कही तार कहीं ताड़ कटि रहे कहीं राजकीय तदन उजार ।
 बहुतेक वीर भरे जेलों में बहुतक लुप छिप भर फरार ।
 बहुतक वीर भूमिगत होके हल्ला करते रहे प्रचार ।
 जन्ता का उत्साह न टूटे तम् सत्ताधन जैसी मूल ।
 तोड़ फोड़ भी जारी रखी जिनकी जैसी मई कबूल ।
 भारी हलचल सुनि भारत की तन्दन गया सनाखा खाय ।
 उड़ि गये होइ मित्र देशों के दहया घाल मधि गया हाय ।
 देश सहयोग दे रहे वहाँ जवान हित लौटाय ।
 करी बगावत भारत सेना कौन काल से जुड़े जाय ।
 अब नहीं कुमुक मिले भारत से राजन परतु जवान हथियार ।
 है उस पर जन अपार शक्ति पाजा उलट जाय वा पार ।
 आगे पर्यन्त पीछे बाँह कैसा ठोंगा पार लगाय ।
 सौंप छुंदर जैसी गति मई उगलत बने न खात बनाय ।

कीया धमाका स्टम्ब का सब जापान गया धर्षाय ।
 टाई लाख मरे मानव तहाँ सब हिरोशिमा हुआ तवाह ।
 तीस बरस की पैज करी थी जापानी नहीं ह हटे पिछार ।
 मानस होता लड़ते उतते पर स्टम्ब तेनानी मार ।
 बन्दर, गाय पर पूँछें छोड़ो नागा सभी भयी विसमार ।
 यह टंग देख सभी फौजों से डलवा दिया हार हथियार ।
 हिटलर लोप भयी जर्मन से वहाँ कुछ जलती देखी राख ।
 विश्व युद्ध यों बन्द हो गया जर्मन की करदी फाँक ।
 तुमल हाल नेता जी बलि दिए अपना दिशा विमान उड़ाय ।
 लगाई आग गिरी धरती पर नेताजी कहाँ गये क्लाय ।
 तोड़ - तो परि कहाँ गए चन्द्र सुभाष नेताजी रहे या स्वर्ग सिधारे ।

मुझ मुण्डन जुलूम गुजारे । । §13§

आल्हा - यदि ये भेद नहीं कुल जाता है राजन हथियार अभाव ।
 तब तो सन् तैतालीस में कर लेते भारत मुक्त कराय ।
 गद्दारी ने करी गद्दारी दुश्मन को दिया भेद बताय ।
 राजन और हथियार नहीं है जे हिन्द तेना देउ हराय ।
 ब्रिटिश तेना भागत थम गई भारी लई भगवाय ।
 देश धर्म की बलि बेदी छब्बीस सहस्र भए बलिदान ।
 ऐसा खेल केला गद्दारन ने करी देश की क्षति महान ।
 विश्व युद्ध जब बन्द हो गया जेहिन्द तेन कैद हो जाय ।
 जर्मन और जापान हार गये इटली को भी दिया हराय ।
 राष्ट्र यों तीनों हारे मित्र राष्ट्र तीनों गये जीत ।

रूस और ब्रिटिश, अमरीका, फ्रांस को भी माना मीत ।
 चीन साथ ले इन पाँचों ने राबूट पुनि लियो बनाय ।
 साम्राज्यवादी बीती बदली स्वतन्त्रतावादी नीति चलाय ।
 जो जन जिस भूमि में जन्मों ताको जन्म सिद्ध अधिकार ।
 समर्थ होकर राज्य करें खुद उसको वहाँ स्वतन्त्र अधिकार ।
 अब ब्रिटेन गेट नहीं जग में दुनियाँ में था जिसका राज ।
 अमरीका उदय हो गया रूस देश का उँचा ताज ।
 जयहिन्द तेना के अधिकारी सहगल टिप्लोशाह नवाज ।
 राज दोह अपराध में फाँस अपराधी ब्रिटिश राज ।
 मोला भाई देसाई जी के वकील बोले ललकार ।
 देश भक्त पे अपनी मृ के लड़े देना हित स्वतः अधिकार ।
 राबूट सैन्य का ध्येय यही है स्वयं पढ़कर देखे सरकार ।
 जीत गई थी जयहिन्द तेना भाई देश में बुझी अपार ।
 कांग्रेस पार्टी पैदा भई सब ही नेता लिए रिहाय ।
 आजादी की चर्चा छिड़ गयी जिन्नाह दिए हाल झुकाय ।
 गाँधी जी को तुम राज्य दो इसके मानी हिन्दू राज ।
 हमें गुलाम बनाके रखें हमको प्रथम देव स्वराज्य ।
 पाकिस्तान दीया जिन्नाह को बाबा भीम दिए समझाय ।
 हम तुम सब है हिन्दू भाई कुछ दिन बाद भेद मिट जाय ।
 समझौता इस भाँति हो गया मिस्टर जिन्नाह माने नाय ।
 मये टुक दो इस भारत के बगड़े की जड़ दई जमाय ।
 भीमराय की कुटनीति को लेते मान जवाहर लाल ।

तो पाण्डे भारत ही रहता होता नहीं हाल बेहाल ।
 सन् उन्नीस ती सैतालीस में अगस्त पन्द्रह कर तो पाद ।
 सदियों बीते गुलामी भोगत इस दिन हुआ देश आजाद ।
 दीपचन्द मम नाम समझलो जमातपुर मेरा ग्राम ।
 भूल चुक की क्षमा याचना मानव की है तुच्छ ज्ञान ।
 हे इतिहास समीप बहुलका अति संक्षिप्त कीया अब व्याख्यान ।

403

स्व० श्री नाथुराम शर्मा "शंकर"

राष्ट्रीय रचना

बलिदान - गान

शंकर के प्यारे उठो, उन्नति का पुण ठान,
 तो स्वराज्य-स्वातन्त्र्य को, दो जीवन बलिदान ।
 ॥॥
 देश भक्त वीरो . मरने से भक नहीं डरना होगा,
 प्राणों का बलिदान देश की धेदी पर करना होगा ।
 लोकमान्य गुरु गाँधी जी का प्रेम-मन पढ़ना होगा,
 साथ सत्यधारी अंगुओं के अब आगे बढ़ना होगा ।

पेच दीपचन्द बारहमासी, अष्टकाक्षित

नोकरशाही के कुयक्र से जोड़-तोड़ उड़ना होगा ,
 नाँव नीयता की उन्नति की पीढ़ी पर चढ़ना होगा ।
 अत्याचार अगाध सिन्धु की गर्दमान तरना होगा ,
 प्राणों का बलिदान देश की बैड़ी पर करना होगा ।

॥२॥

सिंहो, सत्पामृत-प्रवाह में गोल बाँध बहना होगा ,
 पीत गोल छोटे कुराज्य की पुञ्जासन कहना होगा ।
 पशु बल लेगा जलों में वर्षों तक रहना होगा ,
 मार धाय निन्द्य हूटों की घोर कल सहना होगा ।
 जाति जीवन रक्त धार से कर्म-कुण्ड भरना होगा ,
 प्राणों का बलिदान देश की बैड़ी पर करना होगा ।

॥३॥

समता की प्यारी पलति में निर्विराम चलना होगा ,
 कुल भावना की विभूति की अंगों पर मलना होगा ।
 धूँसा के आर्तक-ताप से धातु-तुल्य गलना होगा ,
 सुदृढ़ सपाई के साथ में निर्मल हो चलना होगा ।
 इष्ट देव रवातन्त्र्य ध्येय का धन्य ध्यान धरना होगा ,
 प्राणों का बलिदान देश की बैड़ी पर करना होगा ।

॥४॥

कुटिला कुटनीति के आगे हेकड़ हो उड़ना होगा ,
 होकर हिंसाहीन न्याय के पीछे चल पड़ना होगा ।
 अधम आततायी हत्यारे ज़ुतुरों से लड़ना होगा ,

ले तुकड़े कोड़ा कुयाल के कुल्हू पे जूना होगा ।
 झँकर धों "भारत मात" का हास-नास हरना होगा,
 प्राणों का धनिदान देश की पेदी पर करना होगा ।

—
"स्वाग तप का प्रचार हो"

भारत स्वतन्त्र हो पड़ाई परतन्त्रता को,
 फूँक दे विगाड़ की धयीचित सुधार हो ।
 नीति का सँगाती न्यायकारी महाराज बने,
 सारे जगती तल पे पुरा अधिकार हो ।
 एकता की उन्नति लगा दे प्रजा-पालन में,
 भागै धेर-फूट प्यारे प्रेम का प्रसार हो ।
 भुतकाल ता अपनाते हान-गौरव को,
 झँकर कृपालु स्वाग-तप का प्रचार हो ।

—
स्वराज्य - स्वाधीनता

झँकर प्रेम प्रसार सुमति की ज्योति जगादो .
 धेर-विरोध विस्तार अधोगति मार भगादो ।
 छोड़ कुपन्थ अनेक एक पद्धति अपनालो,
 वीर टिका कर ठेक सुरक्षित राष्ट्र बना लो ।
 कर दूर बुद्धि दीनता भारत फिर उँचा चढ़े,
 सुख दे स्वराज्य स्वाधीनता विद्या-बल धैर्य बढ़े ।

शंकर काव्य में राष्ट्रीय चेतना

नीकरों की जाही सम्यता का गला काटती है,
 गाँधी के सँगाती अँधियों में खटकत है ।
 भारत को लूट कूटनीति की उजाड़ रही,
 न्याय के भिखारी ढोर-ढोर भटकत हैं ।।
 जलों में तन्देज भगत हिंसाहीन सज्जनों की,
 पेट पाल पातकी पिशाच पटकत हैं ।
 कौन पे पुकारें अब शंकर बधा ले हमें,
 गोरे और गोरों के गुलाम अटकत हैं ।

4.4 जनकवि - श्री हेमचंद्र "नागर"

1942

किसान धारहमासी

सुचना

चाहिँ सतयुग में बसो फिरो चाहिँ पुन्दावन काशी ।
 बिना भेल ना कटे किसाननु के कल की फाँसी ।।
 परधी है बड़ो छिकट फँदा, जुरे अनेकों राहु ओझो कहा करे वँदा ।
 आज हम यही बकतायेगि, नीर क्षीर को अलग-अलग कर के बतलायेगि ।
 नाहिँ हम घेद मन्ना बोले, न्याय तुला पे आज किसाननु ना चिता लोले ।
 ध्यान से सब सुनै रहियो, अपने घर की बात किसानी सब परअत जियो ।
 कथा एक तुम्हें सुनाते हैं, कैसे आज अमीर गरीबों को आ जाते हैं ।

असाढ़ ॥१॥

लाग्यी मात असाढ़ धिन्ह वरबा के दिखलाये ।

धुमक-धुमक वर्षाऊ वादर अम्बर में छाये ॥

रही मन बुद्धम से वीली, भलो नाज की भाव भरीगी कचपन से जोली ।

तुनी तुम नुरी के अब्बा, सब संकट कट जाय लगामेउ काहू में दब्बा ॥

करी अबकें भरी राजी, सम्बत अच्छी होइ दूट लेउ चौखी तो साझी ॥

रही मन ऐसे बतराई, यह साझे की बात खुब बुद्धन के मन भाई ।

और पत्नी की मुत्तकाये, नयी नारियल हाथ मुहल्लाजाटन के आये ।

लगाइये साझे की तुक्का, जहाँ फत्ता चौधरी आर पे डेयि रही हुक्का ।

खुशी हे के सलाम कीनी, ते हुक्का से घिलम और बुद्धन के कर दीनी ।

कही भैया कैसे आये, बहुत देर तक दोउ बात साझे की बतलाये ।

चौधरी बुद्धन से बोली, ज्वार बाजरा बीज बनीरे ठीक ठीक तोली ।

चली बनिया ते जाय मिले, साहूकारी बिना किताननु के नाहिं काम चले ।

चलेने बर्रिब्रम्रमे भेता के घर आये, हँस के लई सलाम सेठजी मन में मुत्तिकाये ।

खुशी कुछ ऐसी दरसाई, मरे कारक कूँ देख लार कुत्ता ने टपकाई ।

पिलादयी दोऊनु कूँ हुक्का, बात चीत के बाद लिखाइ लयी ऐसे की रुक्का ।

खुशी दोनों के मन भाई, जैसे मुहके भेड़ दोर के रेवड़ में आई ।

सम्बत के पुरन अमिलावा, दोनों घर कूँ चले लगावत आगे की आजा ।

न संकट रहने पावेगो, ऐसी ही रहो भाव टका सब की चुक जावेगो ।

बात तुम बुद्धन हर्षायो, यह आजा को पूरा दोउन के मन में लहरायो ।

कही यों फरता ने पानी, अब तुम घर कूँ जाउ कहे में भेसा कूँ सानी ।
 बात मावी ते कहि देयो, वीर बनीरे करे ठीक तुम हरको ठुकेयो ।
 कल्लि दिन अच्छो काम ब करी, पओवकत पे बीज जोत के झंडे में न परी ।
 नहीं पीछ पाछिता आगे समय वुँकि के बुद्ध न मझ्या नफा न पाओगे ।
 इत तरह बतराये साझी, ज्यों औंधी के बीच नाव को धेमि ली माझी ।
 खेत में जुट बैठे दोनों, माटी में बह बीज सदा जो उपजावत सोनी ।
 नराइये कूँ बुद्ध न पाकों, हर हारी बीधरी बधिया भेसा को ।
 कमी ना वर्षा की भाई, खेत-खेत कूँ फोरि पुस्तल औंधी उठ बाई ।
 फसल को देख तिहाते हैं, लागत, खाद लगात बीज नाप कराते हैं ।
 बँधेगी कम ते कम आधी, सब कर्जा चुक जाय करेंगे बेटिन की सादो ।

सयानी बुन्दी, कैताजी, बिना मेल ।।

॥सावन॥२॥

लरज लरज के घटा लुछड़ सावन की वर्षानी ।
 मेल प्यार में तिमिट-तिमिट के भर आयों पानी ।
 छाय रही यहुँ दिग्न हरियाली, जेते सुखे बाग आज कोई सींच रही माली ।
 घासु ने होइ लगाई है, जहाँ निमाने खेत फसल के उपर छाई है ।
 आइ गयी सावन जवानी पे, न्हैनी-न्हैनी चलत फुहार सुरपिया जले न पानी ।
 जवान रहे हैं कूद अबाई में, वर्षा ऋतु के मल्ल ताल रहे ठोक असाढ़ीन में ।
 कूक रही कोयल बागन में, रंग-बिरंगी मोर नचल हरियाले आँगन में ।
 पपीहरा पीउ-पीउ की धुन में, नहै-नहै उठत उमँग वियोगिन के सुने मन में ।
 सखी सब झुला झूल रही, गावत गीत मल्लहार दुख दुनिया के झूल रही ।

ढूँड़ी छोटीमँझली-हेटी, सब रही तीज मनाय किसानों की प्यारी बेटी ।
 कोई जेवर के बोझ में, पहरे चमकने वस्त्र कोई धेड़ंगी हँसी करे ।
 सबी एक ऐसे उठ बोली, जहाँ छोटा दे रही छड़ी केलाजी हमजोली ।
 फटी तेने चीँ पहनीं धोती, तीजन की त्यौहार वाय पे मगवाह लई धोती ।
 सकुच गई केलाजी मन में, सुनत सबी के बोल आह गये आँसु आँखों में ।
 तमल के फिर बोली ऐसे, बिना ब्याह के चीज बस्त्र भेना पहनूँ कैसे ।
 धोखती छोटा की लुगी, तोउ ते अच्छे एक दिन में जेवर पहनूँगी ।
 बापु तेरी हे तपया वारी, भागवान की कहा करे नित वारे की प्यारी ।
 चली घर अपने में लौंड, फुट-फुट के खूब बैठ माता के टिंग रोई ।
 बहुत धनिया में समझाई, बड़े-बड़े की होइन बेटी काऊ न कर पाई ।
 बाँध हिरदय के फुट करे, बेटी की ममता में आँसु माँ के फुट परे ।
 धार दोउन के बहन लगी, बेटी के आँसु पोंछ फिर ऐसे कहन लगी ।
 फसल पे चीज गढ़ाऊँगी, तेरे बाप के हाथ धोखती तुच्छ मगाऊँगी ।
 बात मेरी केलाजी सच्यी, बचारी कन्या की बेटी नाहि चीज लगे अच्छी ।
 गाम माऊ देखत होंगे, बुंदी कू ते बोलि तुम्हारी घाट नखत होंगे ।
 देखि धोपर हँस आयी, हर हारन कू आज कल तक नहीं पहुँचायी ।
 कोई पकवान न तीजन की, रुखी रोटिन में न त्यौहार सदा गरीबन की ।
 जो पैदा सरसों तरा करे, तोह किसान के घर में नाही दीये तलक जैरे ।
 अमीरन के पुरनमासी, बिना भेल ।

मादों ॥३॥

बेटा नाहि अमात बिना माँ के जीवन परतें ।

ऐसे ही प्यासी रहे भूमि बिना भादों के बरते ।
 औरों दिन में छाव रह्यो, बरत-बरत के मेह मुसलाधार बहाइ रही ।
 बीजुरी कौंधा बाइ रही, झुक-झुक कारी घठा नीर वहुँ ओर मचाय रही ।
 धनुष के अम्बर में डोरा, चिड़िया घर घुसी कुहक रहे जंगल में मोरा ।
 टपक रहे कुशन के परता, दोऊ हुक्का पी रहे झोंपड़ी में बुद्धन फत्ता ।
 चौधरी बोल्यो सुनि भैया, फसल चौगुनी होइ बरखि गई अब भादों भैया ।
 कुछ हम करें कमाई है, भादों की वर्षा ने दोऊ फसल बनाई है ।
 गौँठि मक्का में फूटि पड़ी, ज्वार बाजरा उदें मूँग में जाखिन फूटि परी ।
 फसल ते ऐसे घिपटैंगे, लागत खाद लगान बीज धन में ते निबटैंगे ।
 मरोता सब के मरने हैं, केलाजी के हाथ जल्द मोहि पीरे करने हैं ।
 ये चिन्ता रोज सताये है, रुपानी बेटी माँ-बापन कूँ मार दिखाये है ।
 आजु की बुरी जमानों है, अपने ओर पराये के कोने पहचानों है ।
 मरी फिर बुद्धन ने हामी, ठीक कही चौधरी बुरी दुनियाँ में बदनामी ।
 यही चिन्ता मोकूँ भैया, बुन्दी के बियाह की कैते पार लगे नय्या ।
 सियानी है आई छोरी, भी आदमी देख तीप देउ दोउ कन्या कोरी ।
 गरीबन के सब दुखदाई, झे-झेनु की बात नाहि काहु ने सुन पाई ।
 कहाँ तक पाप गिनोँ इनके, करे कुकर्म पाप हारि सिर देदे गरीबन के ।
 इस तरह दोनों बतराये, उधर अमीरन के घर-घार में रात-रँग छाये ।
 जो लोह दुखियन की घाटि, सुनी जित तरह गरीबन के घर जनमाये ।
 लोग सब चिन्ता भूलि रहे, ठीर-ठीर भगान कुष्म बूला में भूलि रहे ।
 ढेर लगि रहे मिठाइन के, लगे झुंड ये झुंड चौतरफ लोग-लुगाइन के ।
 संझ-छड़ियाल बजाय रहे, ठाकुरजी के द्वार भक्त मुखे हरधाय रहे ।

आजु झूत राखी धनिया ने, घुन घीउ ना मिला तेल तक दती न बनियाँ ने ।
 दोरि झुज घर कूँ आयो, माँ की लहगा पकरि अँखि में अँसु भरि आयो ।
 प्रगन यों बातक ने कीयो, ठाकुर जी को माँ हम कूँ परसाद नाहि दीयो ।
 खाहि रहे रामु और नुरी, तू यों न करहे याघरें हे रही सब के घर पुरी ।
 गोद में माँ ने ले लियो, बेटा की मुख घुमि जबाब यों धनियाँ ने दीयो ।
 करहेया बेग पढ़ाऊँगी, आज उपासे रही साझ कूँ बुझ सिमाऊँगी ।
 पुत्र को यों बहलाइ रही, अपनी अँखिन ले अँसुन की धार धुपाइ रही ।
 छड़ी केलागी यों लहे, भूखन कुँमगवान उपातो जबरन बगौँ राखे ।
 भली हे यह सत्पानागी, बिना भेल ।

बवार ॥५॥

वर्षा शतु गई भीत बवार की ठँही शतु आई ।
 नीले अम्बर में तारागण बिखर गये भाई ।
 मकाभक खिल रही उजियारी, छेतन फूल कौंस बनि रही चाँदी की धारी ।
 ब्राह्मन करि दये गजवाने, जिन्दी भूँछे मरें काग घर घर पे म्हराने ।
 निमिगी कबतक यों रैते, यह कागज की नाच बलैगी पटवर में कैते ।
 पछँयों के घमासान भये, सुखि न जाय उपार लोग करे हरतान रहे ।
 डहर में हॉँके हर फत्ते, बुद्धन छोरे डरे उड़ाय रह्योँ कुठराते लत्ते ।
 चाँदि पे सूरज चढ़ि आयो, बरसन लगे अंगार पछिया मन्दो परिआयो ।
 जेर सब गात किसानों का, बधिया बेकल भई चलि रह्योँ भेसा को हौँवा ।
 किसानन की पे ही जाने, मौज हरम्मा करेँ पराई पीर न पहवाने ।
 रहें जो ददितन के पीछे, लाखन हत्या छुपी धर्म की कदितन के पीछे ।

भेल हे जाय किसानों में, दुहे-हुमिले न खोज निकम्मेउ को तरबानों में ।
 मुफ्त के जो माल उड़ाते हैं कानूनी डाकू दुनियाँ का खून बहाते हैं ।
 तिरावर पे जब हर आयो, भैसा के चमड़े में सुरज पुरों धुति आयो ।
 पीछरा देखो भैसा ने, रहयो हर पगा छेँधि चौधरी बहुतरों ताने ।
 भौति हाथी की जाय झुली, बधिया हर ओर हरहारे तीनों पे नाहिं स्को ।
 कीच में लोख्यों जीतारी, पिटयो खूब ओर हरहारे को खूब तुनी गारी ।
 फिरी पुरख को परछाईं, धनिया और रहीमन दोऊ रोटी ले आई ।
 डोल दियो जोता जुआ ते, पानी लेवे गई छ्छा में धनियाँ कुँआ ते ।
 नाहिं कोई लोटा और लोटी, बिना हाथ मुँह धोये बेठि गये खाइवे रूँ रोटी ।
 भई फिर चटनी की झाँकी, हे रोटी सुरदरी छुमे भैसा के मटरा की ।
 दोउ भोजन ते पुढ करें, टुक टुक पे एक एक पानी को छुट भैं ।
 न जागे कहाँ माँग बोई, लगी रहीमनकहन कितानम की न तुने कोई ।
 तौति ले बोलि उठी धनियाँ, नाहि कहुँ भगवान निघुती झुट बके दुनियाँ ।
 नतीषा हम सब को हेटे, करत करत नित मरै होइ तोऊ मटरा ते भैटी ।
 चौधरी तुम्हीं मस्तिकायो, कुल्हा करि के चुगल पिलम के भीतर धरिलायो ।
 रहीमन ते बोली वानी, भावी अब्बे फसल हमारी होइगी मनमानी ।
 खूब आनन्द लहावैग, खून भैया और दुतरी खूब व्याह रचावैग ।
 तीति जब घर में आवेगी, मनुकरि खातिर करे तुम्हारे पाँव दबावैगी ।
 आइ गई भावी को हौंसी, बिना भेल ।

कार्तिक ॥५॥

आयो कार्तिक मास बवार में देके हे धक्का ।

बनके गुलर पके और पक कटि आई मक्का ।

तोमरा बेलिन पे झुमें, खेत - खेत में ज्वार बाजरा पके और फूले ।
 आइ रह्यो कतिकी की भेला, घर घर लगे उमाह ब तेत रहे पईसा और धेला ।
 न चिंता रोक रही काऊ, धनिया ने यों कही सुनी तुम बिरजू के दाऊ ।
 जाय रही रसुआ की ताई, भैं दे बीसी ते बड़ी गई पारि गंगा नाऊ न्हाई ।
 न्हावाइ देउ अबकें भेगा जी, तीन दिना की काम चलाय लगे तबतक ताड़ी ।
 चौधरी कहे न छबरेयो, अबकें गंगा न्हाय खुब तु मलि मलि हैं अइयों ।
 तेठ की कर्जा भरनी हे, लागत ही बेसाख व्याह छोरी की करनी हे ।
 जो कतिकी जान न पाऊगो, करनवास की जेठदबहरा तोई न्हावाऊगो ।
 बात सुनि के सकुचाइ गई, कटो बेलिकी तरह तुरत धनिया मुरझाय गई ।
 बड़ी कैलाजी कीरे ते, सुनत व्याह की बात चली गई मॉके झोरें ते ।
 पुछि रहीयों अपने मनमें, क्यों नाहि करत अमीर व्याह की बात गरौबन ते ।
 चौधरी जंगल कू धायो, घटा पछाई और उठी एक धवा बनिआयो ।
 कितानन की आज्ञा खीई, चली जोर की दाय फसल सब धरती पे तोई ।
 फूल मुट्टन को टूट परयो, ठौर ठौर कण्हूआ पकी बालिन में फूटिपरयो ।
 गिर गई फलता की कुटिया, गुलर बन के झरे टूटि गई मक्का की मुठिया ।
 छनक में कहा ते कहा भयो, यह कितान की बाग फल्यो फूल्यों और सब गयो ।
 रहि गयो सुने की सुनी, जमीदार और साहूकार की कोय बटो दुनी ।
 फसल जो कुछ भी खय पाई, धरो सुद पे सुद ठगमंसा के उग खाई ।
 कही ना पेसा छोड़गो, वाकी जो खय जाय फसल अगली पे ते लुंगों ।
 बखत पे फिर लेते रहयों, लगे अगूठा के स्वा की मूलि न तुम जइयो ।
 नाहि में झगड़े की हामी, हे आपस की बात करेगी दुनियाँ बदनामी ।
 कहीं कुछ-कुछ सुना ते मनाते, हो मातिक की दुआ छूट जाय तयारे पेसा ते ।

तेजी तुमही निभाओगे, दोनों घर की नाच किनारे तुम्ही लगाओगे ।
 लोटि के मेंना घर आयो, जो कुछ मिली समेट सुति ताहि गाड़ी ले भर लायो ।
 दूसरी विपता गहरानी, ज़िलेदार को बोलि कही कारिन्दा ने वानी ।
 कि जल्दी जंगल को जाओ, झुटा और फलता दोनों को संग लिवाय लाओ ।
 चली हे ज़िलेदार राजी, जहाँ कतिया आड काटि रही अहरे की साझी ।
 दोऊ साझिन कटवाइ रही, बुन्दी और केलाशी दोनों होसु लगाइ रहों ।
 पत्तीना सड़ी पे आयो, तबरे साझी लगे टुक नहिं रोटि को खायो ।
 पास ही थोड़ी सी दूरी, दोऊ बालक रहे खेल ठोंकरा तर विरजू नूरी ।
 भयो फलते जैसे ठाड़ों देखी निगाह उठाइ देखें चढ़ि आयो जाड़ो ।
 सामने ठाड़ों चपरासो, बिना मेल ।

अगहन ॥ 6 ॥

गई दिवारी भीत महीना अगहन को आयो ।
 मिटते रहे किसान न दर्शन लक्ष्मी को पायो ।
 ये ऐसी बाल दिवाई हे, करें निकामे न प्यार किसानों से कतराती हे ।
 फूट लखी कोसन भगि जायें, लेइ संगठन देखि तो दोरी अपुढ़ारी जाये ।
 मेल के हे ऐसे राते, दुट्टेहु मिले न खोज धने जो लोह के प्याते ।
 रुत की ओर निहारोगे, तुम अपनी तकदीर किसानों आप सवारोगे ।
 खेत ना साझिन के खाली, जो गेहूँ और चना मटर पे छाइ रही हरियाली ।
 दुबारा आगा हरियानी, फलते बुद्धन दोऊ धैधि रहे कूँआ ते पानी ।
 पैरि एक ज्वारे की टाकें, गहरे हिरदय के घावन कूँ आगा ते टाकें ।
 कही बुद्धन ने सुन भया, कौन किनारे लगे किसान की टूटी नय्या ।

ना हिं देखत बेपन हारो, जमींदार ओर सुदखीर ने बादर फाड़ा रियो ।
 दूध ढ्यो के हे गये तपने, देख देख तयोहार मटक रहे सब बालक अपने ।
 न कोई संग तगाती हे, यह ऐसी कानून कहो कैसे बनि जाती हे ।
 ये कैसी हे गोरख धंदो, बिके हमेशा तेज फसल पे नाजु होइ मंदो ।
 कमीना फसल विचारी में, ना जाने कितनी लिखी आजु तकदीर हमारी में ।
 लगायो फत्ता ने तुक्का, एक हाथ में खर्द दूसरे में ते पीधे हुक्का ।
 हसो और यों जवाब दीओ, सब पुरव ने भाग विधाता ने ऐसी लिख दीयो ।
 अगरि हमहुँ पावेगि, जमींदार ओर मेशा को फिर हाथ लगावेगि ।
 बात तुनि बुद्धन झुल्लायो, हे अनहोनी बात बहुत फत्ता कूँ समझायो ।
 और एक कथा तुनी भाई, इधर अगहन में ईद मुसलमानों के घर आई ।
 बुझी में फूल दीवाने, जदा और पुलाव उड़ रहे पचरंगी खाने ।
 झाड़ फानूस जलाइ रहे, ये बेरहम अमीर रात में दिन दिखलाय रहे ।
 दिवानी मजहब की टोली, चौराहे पे छड़ी घुन की खेलि रही होली ।
 दिवाये रंग समझीरों ने, कटि कटि मरे गरीब मनाई ईद अमीरों ने ।
 अमीरी के ऐसे धन्दे, जिनन गरीबन की गर्दन में डालि रहे फन्दे ।
 रही न हाथ में चोड़ी, माँ को यह चों पकरि रही मनते बोल्यो नूरी ।
 कि माँ हम जदा पावेगि, सबके घर में मनी तो हमहु ईद मनावेगि ।
 छिपा ना राख्यों परदे में, यह बालक के बोल समाय गये माँ के हिरदे में ।
 राह ते निकले आँखिन के, सदा ईद की भेंट चढ़त हे आँतु दुनियाँ के ।
 गोद में बेटा कूँ मेशा के घर जाय रही मन ने जवाब र दीओ ।
 रोय रहयो ये बालक तयारी, चामर बुरी धीउ तेठ नैके पल्ले में हारो ।
 कहू नाही मति कर देयो, जो कुछ जुरे हिताब जोड़ि ताहि पिछले में लेयो ।

सेठ ठेढ़ी परिके घूरयो, सब सीदा बि गयो निबट गयो घीउ और बुरी ।
 पावसर चावल दे दीजो, यों मुनीम ते कही बही के भीतर लिख दीजो ।
 लगी खासन तुखी खाती, बिना मेल ।

पौध १७१

पुत मास के लगत आग सबको लागि प्यारी ।
 इन्दराज के लिए पहुँच गयी मन्ना पटवारी ।
 दोरि के बुद्धन टिंग आयी, दयी पिछोरा डारि तुरत पटवारी पधराओ ।
 बट्टो टेढ़ों जाकी रस्ता, ऐनक लई लगाय खोलि लयी कागद की वस्ता ।
 भीड़ इत उत में जुड़ आई, कौन अंत में कौन जिन्स ये सब ने लिखाई ।
 बात सब अपनी पहिचानीं, दीवान जी ने कही मिल्यो ना अब तक फसलानीं ।
 तान जो करी तानीगे, मनु आवे तो लिख तुम्हारी तुम ही जानीगे ।
 कहन लाग्यो यों बनवारी, आमन देउ बेताब झाड़ ते फसल गई मारी ।
 तुम्हें हम बुझी करावेगि, हवकु और फसलानी सब एक संग चुकावेगि ।
 बुरी पटवारी की फन्दा, एक कलम में करे पटपरा यह पटपर वन्दा ।
 कितानन वारी हे तरकारी लोका और भिन्ही टैरत फिर गाजर की ब्यारी ।
 तोरई ते आयी तुजा, सब ने मिल के करी एक पटवारी की पूजा ।
 लदयी भेसा तो घर आयो, पटवारिन की ओर बड़े लहजा ते मुसिकायो ।
 कलम की वह जादू मारि, कुलुआ में धरि उँट तीप ते समुन्द्र भरि डारे ।
 लिखनित कस्ता को गढ़ा, चाही को पढ़ा लिखे और च्याहे को रहुआ ।
 पुनी हैं जमीदार याकी, इनको हेंकें रहे न पूछे कितान जन्ता को ।
 बात कदुई पर हे ताची, पटवारी की कलम लिखी तकदीर नाहि वाची ।
 बचे जा जहरी ते रहियो, गाँव गाँव के गोल एक धागे में बधि जियो ।

पार नहीं कबहु न पायोगे, फूट फूट के लड़े तो माटी में मिल जाओगे ।
 न पुछे कोई जमाने में, लाख कताइन बीच धिरे तुम कटटी खाने में ।
 लगाइ रहे सब चोटें गहरी, टींडी और सुखा वर्षा सब तयारे ही धेरी ।
 लुटेरे बहुत तुम्हीं दुखिया, पटवारी पतरील कारिदे जिलेदार मुखिया ।
 ज्यो तिथी मुल्ले और पण्डे रहो खूब होत्रियार बुरे हैं इनके हतकण्ठे ।
 परें चन्दा और जुरमाने, सुद खोर पे नाहिं मरीबन के तिर झुराने ।
 लाल झण्डा लहरावेगो, मिटे कटे बेगार मुफ्त में कोई न ले लायगी ।
 कितान की आँधी आवे, ढापर युग की तरह खोज कौरव को मिट जावे ।
 बताइ गयी ऐते ब्रजवासी, बिना मेल ।

माघ ॥८॥

माघ मास को देखि आइगयो ज्वानी पे जाइो ।
 ज्यों पेखेवर मल्हु अखाड़े के भीतर ठाडो ॥
 कूरी मटरा पे लगि आई जो गेहूँ की बालें कोय के बाहर हे आई ।
 लगी फूलन ऐसे सरसों, फूल सेठ की धौंद जाय लगे जैसे बादर सों ।
 बनाये धारी फिर आई, उचकि उचकि कैं यली ईस अम्बर तो अटकराई ।
 बरफ बर्षी व्याधा बनि कैं, ठिटर ठिटर के हाथ पाँव डठ रहे किसानन के ।
 पिले जाड़े की छानी में, घर-घर काँपत गात राति भर घोटुन पानी में ।
 वहाँ फस्ते बुद्धन दोनीं दिन भर हाँकत पेर पकरि के किरमत को कोनीं ।
 खाइ रहे दोऊ गाजर बासी, लगी गड़्हासी हाथ कूट रही सरसों केलाजी ।
 ओढ़नी पीछे कूँ डारी, लग्यो पामरयो हाथ खोल दई बुन्दी ने व्यारी ।
 धेठिकें रोटिऊ नाहिं खायें, जब ग्यारह बज जाँय रात कूँ चारों घर आयें ।
 रजाई एक न भरि पाई, बन की बीन कपात रोज मँगाके पहुँचाई ।

मार नित जाड़े को ढोवें, एक बाट पे माँ बेटी-बेटी तीनों सोवें ।
 इन्हें कोई रस्ता न सुझे, लहगा करिया ओढ़ि रात भर जाड़े ते जुझे ।
 लड़े ऐसे अपधाती ते, बालक ब्रिजु लिपट चुपट गयी माँ की छाती ते ।
 नींद नहि केलगी हे आहं, तोड़ अपनी विपत्त न अपनी माँ को बतलाहं ।
 परी पाटी पे सोच रही, करि करि लाख सवाल बाल होनी के नीच रही ।
 कहें कैसे कलपुग आयो, बनमें भई कपास टेंदु बाहि घर कुँ बधि ।
 न भेदु की रौटी खाई कर सोनीं ती रात्रि सदा औरन के पहुँचाई ।
 परे ना पेटन को पूरी, हम ही कमावत इंसन देखी ओँखिन ने बुरी ।
 जिनन नाहिं कबहु हक हाँकों, दुई नाहिं हतकड़ी न बरहा पानी को नाखी ।
 यही क्यों मालदार होवें, तीन रजाई ओढिमोज ते कोठे में सोये ।
 काम कोई देतन नाहि आटे में भरी माँ को नंगीगात रातभर कोपत जाड़े में ।
 जनम क्यों बिरजू कुँ दीयो, माँ की दुही छोड़ि आजक दुधनाहिं पीयो ।।
 दशा भैया की सोच रही, बड़ी बहन की ओँखिन ते आँसुन की धार वही ।
 देखि ममता की परछाईं रोके ते नाहिं स्की गले में हिलकी बधि आई ।
 ओँख धनिया की फूट गई, सपने की सुझड़ी कही अधर में टूट गई ।
 कही तू क्यों नाहि सोच रही, पौ फटिये कुँ भई बता बेटी क्यों रोह रही ।
 लगी आँसुन की और झड़ी, सुनि के माँ की बात और गह भरिके रोह पड़ी ।
 रंभावति घायल भैया ती, बिना भेल ।

अन्त

फाल्गुन १९१

झट वसंत को देख महीना फाल्गुन को आयो ।

सुमन लागी बालि नाजु खेतन में गदरायो ।

मस्त भई रतियन की टोली, मदमाती सी सुझ सहागिन आध गई होरी ।
 चले सब गाते झुलाते, रंग प्रेम के रंग न काहु यादि रहे नाते ।
 छड़े छोटे न गिनै कोई, दह कीच में गटि किती के हाथ परे जोई ।
 भेष भूतन के बनि आये, मोरिनु के पेसाब कहैं फिर दूटेहु ना पाये ।
 नन्द भावी ते टकराई, हँसि हँसि के रही तोरि कमरि देवर की भोजाई ।
 पायो देखि बहुतेरे हाथ मले, ये भावी की मार कर्महीननु कूँ ताहि मिले ।
 निघट गयो कूँअन को पानी झरैxरी होरी की छवि देखि आई गई कुहरन में ज्वान
 नाचि रहे दे दे के तारी टमु और टोल मृदंग बम्ब की घोर लगे प्यारी ।
 तनी त्यौहार मनाइ रहे, उड़े अबीर गुलाब ताल बादर ते छाइ रहे ।
 करहिया घर घर बटक रही, उड़ उड़ भीनी महक झुड़ छप्पर ते पटक रही ।
 यदूयो रंग होरी को दुनों जाके घर कहु नाहि बाहि तोहार लगे सुनी ।
 सुनी तुम साबेन के ब्योरा दोउ नीम तर बेठि करि रहे मटरा के होरा ।
 वीधरी ऐसे बतरानी, बघत न दीखे बुद्धन भेषा चाहये कूँ दानी ।
 कज बनिया को भारी, जमींदार के हाथ मोहि होती दीखे ठवारी ।
 राहना कोई दिखाये हे सायें कहा उपाय समझ में कहु न आवे हे ।
 विपत को कैसे टारैंग, दीख रहे आसार फल सबरी को हारैंग ।
 बीच ने चुन्ही और चाकी, केत बेदखल होय टूट रही दुश्मन की बाकी ।
 कही यों बुद्धा ने वानी, या विपता में फसे वीधरी ऐसे नाहि जानी ।
 समझ में जो पहिले आती, तेते ईश बुबइ मुसीबत हलकी हे जाती ।
 लगी तक नन्हें तेजाकी भेग फल बचाय ईश ते निघटावें बाकी ।
 बीज नाहि डारियो काहु को, जाके घर की लाग परेगो पुरी बाही को ।
 भाव चाहे कितनेहु चढ़ि जायें, छोटे किसाननु के पत्ते में कीड़ीहुँ नाहि आवें ।

बड़े नके हे रहे यी भरे डकठों नाज करि रहे बारे के न्यारे ।
 गरीबन नाहि मिले पाई बट्टि बट्टि भाय हमारे ही स्तिर पे सामत आई ।
 हे टोटी कपड़ा इंधन को, नुरी नेगों फिरे पजामा फटयी रहीमन को ।
 गृहस्थी के नाहि काम चलें, नौन मसाले मिर्च मोल चाँदी के हु ना हिं मिलें ।
 फिरे नित बुन्दी अबलाती, बिना मेल ।

घेत § 10§

घेत चोर की तरह घुरि के घर में घुसि आयी ।
 कली कली को घुस मधुर रस मक्खन अपनायी ।।
 धरि तयो ठोर-ठोर छत्ता, दोऊ हुक्का पीरहे मद्रक्या में बुद्धन जत्ता ।
 पाव पिछले की हे साते, सभी परीसी बेठि करि रहे आपस में बातें ।
 आयगी नीकर तेजा को, करे खेत में काम पार नहीं जाकि विपता को ।
 विपति की नेया को माझी, राम-राम के संग हे गयो हुक्का में साझी ।
 बात यों कही मजुरा ने, ऐते घुरे बहत को भया कारज हम पाधें ।
 हमारी कोई ना धीर धरे, दिन और रात कमाय पेट को पूरो पाहि परे ।
 मेहनति कैसे जी पिये, तहें कैसे छूट न जाने कब तक पीयेंगे ।
 जो एक दिन मेहनत नाहि करें, माँग मिले ना भीख सोंझें कुँ बालक भूख मरे ।
 भूख के सब ही कट्ये हैं, या दुनिया के बीय और सब हमते अच्छे हैं ।
 बने दुश्मन पैसा वारे, हे घर की सरकार कि जाने टुकनु पे पाते ।
 हिमायत इनकी रोज करें, दोनों पीधें खून हमें वो ऐसी ना नि परे ।
 खेर ना रही गरीबनु की, हे आपस में जान सर्वहारा मजदूरन की ।
 विपति को यों बरनन कीयी, धरि हुक्का पे चिलम जवाब तब बुद्धन ने दीयी ।
 अरे तुम कहा पूछो भैया, तुमते पहले आजु हमारी हूबि चली नेया ।

न जाये खाद बीड़ अपनी, लेके खेत उधार स्वर्ग को क्यों देखे सपनी ।
 रोज बाहिर उपजावे तोनों, साहूकार और जमींदार ते नाहि मल्ही होनों ।
 मई दस मन कपास भाई, सब जाड़े गये बीत तेर मरि रुअ न बचि पाई ।
 बच्यो न बुंदी को फूटा, दीयो तक ना जेरे हे गयो सब घर को झूटा ।
 लाग बिन ओठे खितहर की, दाउपन जाय गिर रहे नाहि घाट अरे घर को ।
 फेरि दयी हुक्का तेजा ने, बुदन भैया अपने घर की बात हमीं जानें ।
 कि कैसे काम चलाते हैं, सबकुछ पैदा होय पईसा बचा न पाते हैं ।
 रात-दिन मरते बहि-बहि कैं, कहा न पैदा करें फसल पे दुख सही-सही के ।
 पेटे सबते पहले बाकी, कपड़ा नोन तेल कुं चलि रही बाँदी पे बासी ।
 करे हम अपनी कहा घरवा, भया योगुनी आज करहिवा कोल्हू को क्या ।
 मराई और गुहाई हे, सब क्या लह जोड तो हमीं बीच न पाई हे ।
 ब्याह शादिनु में खर्च करें, बेठि चार भयन में कैसे नीची नार करें ।
 घले गाड़ी जेते-तेते, घर वारेनु की माँग हाथ पूरी डारें कैसे ।
 हमारी हम ही जाने हैं, दे हर की खेती में सबरे ताने-बाने हैं ।
 मुनाफा हे धनवानों को, जमींदार की नफा-नफा हे बड़े किसानों को ।
 यह न सरकार रही होती, हरगिज उल्टी नाँव किसानन की न बही होती ।
 जैप माला ऐसे अपनी, आपस में कर चुके बात सब जब अपनी-अपनी ।
 बीच नाहि काहु पे पैसा, नाथ तोरि के गयो खेत कुं फतता को भेसा ।
 ठौरि फतता ने होययो, कुँटा ते दयी बाँधि जेवरा करों करि आयो ।
 कमरि पे मारे दे मुक्का, गये हाथ ते छुट चौधरि की प्यारी हुक्का ।
 फसल लहराह रही जमुना ती, बिना मेल ।

बेताब § 118

आइ गयी बेताब लोग पेरतु में काम करें ।

कड़ी धूप में तपें नाहि पल भार आराम करें ।

बेठि के रोटिहु नाहिं बाधें, दोनों साझी जुरे दौंय हाकि और बरतायें ।

राति जितनी तैयार मई, लगान में बिक गई बची मंजा घर पहुँच गई ।

रहे बेवस और धबराये, धीर धीपर लुटे हाथ वाली घर हूँ आये ।

लुटे ज्यों बेवस में अन्धा, इतने में हु नाहि कदयी कताइन को फन्दा ।

कहि कारिन्दा ने वानी, ताओ जल्द लगान नाहिं तो होई बहुत हानि ।

न होइ कोई सायी-संगी, कलें जेत ते अलग बनाय देऊँ मारि मारि भंगी ।

कौप गये यो दोनों साझी, तुफानों के बीच कौपत ज्यों अनकर साझी ।

बहुत सोये और पछिताये, हाथ जोरि के दोऊ कोलु बाकी को करि आये ।

लोटि घर आमन नाहिं पाये, मंजा ने गहि हाथ गड़े के सम्मुखे बैठाये ।

लिखी तबका दिखलाई दयी, गिन-गिन के ग्यारह मास सुद पे सुद लगाय दयी ।

ममल-जरे-कर-जिन्दा-में-अइमरी-जरे-स-प्रजई-प्रदे-बरेस-प्रिर-सुझकरी-स-सि-बरे

माल जो कातिक में आयी, सब पूरा में दयी, तीन ते करजा दिखलायी ।

कही यों बुध समझ लीजो, जो न पाई पटे दोस फिर मुझको मति दीजो ।

मोहि चाहे कोई बुरो कहे, दऊ यौतरा बाँधि ठीकरा माटि को न रहे ।

कर्म में री रहन न पावगो, लीये को पाप बिना दिये कटन न पावगो ।

तहपि रहे ये दोनों ऐते, चुगी देखि अनजान कबुतर आप फँसे जैते ।

न मुँह ते एकहु बात बनें, पड़े जिकारी के बस में पक्षी की कौन सुने ।

तालवी तालव को माती, नाहिं दुनियाँ में निमि घुरी और गर्दन को गती ।

घात छोड़ा नाहिं बाधे, बँधयी यान पे सुखि-सुखि के भुठयो भरि जाधे ।

उठे चुपके और घर आये, अपनी-अपनी अर्धांगिन से दोनों बतराये ।
 चौधरी बोल्यो धनिया से, मुश्किल अटकी आय पार ना पायें बनिया से ।
 बुरी आदत कारिन्दा को, एक छमाही स्की रह गई लगान में बाकी ।
 भावई तिर पे गहराई, जाय झरकटा निकरि बालकनु फाँसी लगिन जायगी ।
 कही धनिया ने धीर धरो, बुरी बख्त गयी आय तो कोई और उपाय करो ।
 खेत नाहिं छूटेगो तयारी, लगत जेठ ही कैलासी की तुम मामर डारो ।
 दूँ तेऊ छोरी को छोरा, स्थानी बेटी को नहिं घर को दुनिया में तोड़ा ।
 रकम जो हाथ लगावेगी, होई ब्याह में खै, और बाकी चुक जावेगी ।
 बात सुनि कैलासी मन में, बार-बार रही रोइ आइ गये औसु औखि में ।
 लिखी होनि कैसे रोऊँ, कैसे होइगो ब्याह मिलेगी कैसे बर मोऊँ ।
 बाप किस और मुँह मेरी, को पकड़ेगो हाथ कौन संग गाँठि जुरे मेरी ।
 मिले मोहि कौन तास मों ती, बिना मेल ना ।

जेठ § 12 §

जेठ तेठ की तरह धरा के स्मर महरायो ।
 रह्यो किताननु फँकि मास मजदुरन को खायो ।
 सुनो कारिन्दा को साखी, बेनी अहीर के दे दयो पदटी बुद्धन फलता को ।
 खबर ना कोई ने सुन पाई, जेठ सुदी ताते को फलते के बारात आई ।
 परीतिन मंगल गाइ रही, दे-दे के आसीत ब्याह की खुशी मनाय रही ।
 स्त्रीलन बनी भयो चहरा, 60 बरस के रात्रि बाँधि रह्यो सुहाग की सेहरा ।
 धुती ज्वानी बुढ़ेपन में, सुख-सुख दोऊ अखिं चली गई गहरे गह्वरन में ।
 खिय रहे स्थानी के छोरा, देख-देख हँस रहे कितानन के अल्ला छोरा ।
 कहि नही यों गंगो मोती, दई मार में झोंक जेठ ने छोरी सोना सी ।

झनक में भौंभरि परन लगी, अपराधिन की भौंति उठी कैलासी फिरन लगी ।
 कर दो फत्ते और धनिया ने, कौपित हाथन देखे दुनिया ने ।
 बिक गई कन्या की काया, ताहुकार और जमींदार की हे ऐसी माया ।
 यली जब किस्मत की हेली, आपस में भरि जेट फुटि के रौंई मां बेटी ।
 मेहु जैसे बरस रह्यो छन ते, जरे हृदय की आग बुझाई तत्ते औंत्तन ते ।
 तुनी तुम कानूनी पदि, जिसके भीतर बँधे किसानन के तखते धँधे ।
 खबरि कारिन्दा ने पाई, फत्ते कुँ लयी बोलि रकम सब पूरी गिनवाई ।
 कहा तकदीर करे भाई, मांगी नाहि रसीद न हिम्मत किसान को आई ।
 लोटि फले घर कुँ आयो, दिन दस्तक गये बीत बुलाय के बुद्धन को लायो ।
 लिखी फरमान सुनाइदयो, खेत भेदखल भयो तुम्हें मजदूर बनाइदयो ।
 बनाई दिये दोनों सन्यासी । बिना मेल ।

रसिया

दे रही महु बगदती दुश्मन चौकस रहियो फारे पे ।
 हेटत हेटत चलि रहे, जाके हाथ पाँव और औंखि ।
 हटिची जब ही जानियो, जब फारे हे जाइ नाँखि
 अहो रहि कन्नी दाँवि किनारे पे ॥ ११॥ दे रही महु
 बट्टि किसान मजदूर तु रही देख कौन की आस,
 तेरे दुश्मन की गयी आज अथवर टूटि उलास ।
 मारि जाके चलती लात म्हारे पे ॥ १२॥ दे रही महु
 वह बैरी ने देस में दई घर-घर में विष की बेल,
 घर में घर के भेदिया रहे बुनी होरी खेल ।
 फूस ना छोड़ों तेरे उत्तरि पे ॥ १३॥ दे रही महु

तमुहो फारे पे छे, तेरे राजा और नवाब,
 बिना तुम के गुलाम, आज बिक बैठे बिन भाव,
 फिर गिया जाह पे ॥ १५॥ दे रही भू
 बीच भँवर में फँसि रही, तेरे घर की नाव
 नंगी मरघट में पड़ी, आज किलख रही पंजाब
 कफन ना बिना मोत के मारे पे ॥ १५॥ दे रही भू
 लड़ि-लड़ि आपस में लियी, तेने अपनी ही दिया बुझाह
 मंदिर मस्जिद दोउन पे देखि रही औरी छाह
 काग उड़ि रहे तेरे गुस्तारे पे ॥ १६॥ दे रही भू
 हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख मिल, चल ऐसी राज बनाह
 ठगियन कुँ फाँसी लगे, जामें कामु करे तो खाह,
 मरे मति जा झूठे बंदारे पे ॥ १७॥ दे रही भू
 रंग बिरंगे गठि कटा, भेष बदलि भेतान
 बिजली बनि के टूटि परि, ओ रेख उठन्ता जवान
 रहम मति भूरे और करे पे ॥ १८॥ दे रही भू
 अपनी ही फारी चढ़े चलि ऐसी भू झुकाह
 भूरी कारी कठि कटा, जामें दम छुटि के मरि जाय
 पर "नागर" "मुद्र" की चोट लगाड़े पे ॥ १९॥ दे रही भू

रसिया

तेरे घर में भूरे भैसा देखियो तेरा ही छत उजारेगि ।
 भूरे भैसा चुगत हैं निता जी भँदु और बाड़,
 बिना पुठ पे सींग के जे सब सरकारी साड़,

देखियो कैसे बादर फारिगि ॥ ११॥ तेरे घर के भूरे
 तेरे बूँटा ते गये ये बहुत दिना ते भागि
 अंगरेजन बधिया करे, इन्हें अमरीका रही पालि
 तो तेरी काहे कूँ काम निका रिगि ॥ १२॥ तेरे घर के भूरे . .
 उन्हें देखि रैकन लगे, और तोहि देखि उन्नाह,
 उनके बूँटा ते बधे, परिते तेरे कूँ खाह .
 फोरि तेरी लड़ावनी हे डारिगि ॥ १३॥ तेरे घर के भूरे

 छेमसिंह "नागर" अप्रकाशित कृति

4.5 श्री छेदाताल "मृदु"

हरराज्य संगीत

धूप सही तन सुखि गयो बरसा सहि भीत को दुःख उठायो
 जोती भूमि परिराम ते फिर बीज दयो और पानी लगायो
 निरुवासर काम में लगी रहो नाहि घेन ते बैठि के भोजन खायो
 दुख संकट व्याधि अनेक सही तीजु दुष्ट कमीन अमीन हे लायो

कवित्त

आठ-आठ आंसुन तो रोह रोह मुख धोह, भारत माँ विलख करे पीर सही जाती ना
 30 कोट भरे होत हाथ संतान गोद, डोलु पराधीन भई कोई संग साथी ना ।
 पीर को धरिया दुख दद को हरिया, नेक बात को पुछिया हाथ बेटा और नाती ना ।
 ऐसे कपुतों ते निपुती ही मली यी राम, होते जो ना देखीही कोख को लजाती ना

कवित्त

गाढ़े देत जिन्दा जमींदार जमीन ही में, ब्याज पर ब्याज बेरी वीहरे बढ़ाये जात ।
 मुँसे लेत मुन्गी घुँस ले ले खेत घुँस लेवे, चुकत ना खपराती नटई दवाये जात ।
 दीये लेत प्राण पटवारी घटवारी करि, बाकी वये पिंजर को पुलिस माँ चवाये जात ।
 दोरी-2 दीनबन्धु अवसर यही है हाइ, कुटिल कुशासन किसान को आवे जात ।

रसिया

टेक • सुन्नी मित्र लगाकर कान किसानों के हालात को
 फीसदी दस को दीजे त्याग-जो अपने आप लगावे लाग-सुनी जाती 90 का राम
 छंद - घर जादू साहूकार के करते बुझा-मद नाज को, वस कह दिया उल आम्ना

देख ले अंदाज को ।

घर जा कुन्वा सहित तो गये भूखे रात को ।। सुन्नी मित्र लगाकर कान
 दूसरे दिन फिर पहुँचे जाइ - वीहरे जो बोले बुझलाइ-गये तुम तरके ही तरके आइ
 छंद - लड़का नुमायश को गया आजायगा वह शाम को -ले पूछ उससे धियोँ कि करता
 वही हस काम को ।

कहाँ तक दशा घरनन कलें तो पे करी ना जात है, लाचार आयो लीट

जी में बड़ी छच्छात है ।

दो दिन भूख भये सुनना कोई बात को ।। सुन लो मित्र लगाकर कान

—

तीसरे दिन का सुनी बयान, काम तज करके चला किसान,

बीहरे के घर पहुँचो आन,

दोहा - बड़ी नम्रता से कहा दिलवा दीजे नाज ।

बोले ऐसे बीहरे ठहरा लीजे ब्याज ।

छंद - हे ध्याज एक आना स्वया मंजूर हो ले जाइये
 कमती न पाई हो सके, इस वक्त बड़ी तबाइये
 फिर बधा करे मजबूर हो दीनी है खीर पिका के ।
 तोलन को बैठे नाज, लये धिसे वाट मगवाइ के ॥
 कुछ वो तो कह सकता नहीं घर भूखे बालक रो रहे ।
 देवी निठुरता आपकी , मन में बड़े बुझ हो रहे ॥

मन की तो लिख दई मगाकर कलम दवात को ॥ सुन लो मंत्र लगाकर.....

देश भारत की यह गत आज, भेट भर मिलता नहीं है नाज
 फूट ने कर दिये मुहताज
 अब तो समलो जग पड़ो भारत के वीर किसान हो ।
 उन्नति करो निज देश की बंधियों की तुम संतान हो ॥
 सब मिल के खोली धैक, पंचायत करो तैयार है
 प्रेम से मिलकर रहो होइ सब देश सुधार है ।

अब तो सब तजि देउ अर्वाचा के उयालात को ॥५॥ सुन लो मंत्र लगाकर

कवित्त

वाकी नहीं पाकी तक राखी दिन कुर्क किये
 रुखी हूँ रोटी को लगान तक न वाकी है
 वाकी नहीं वस्त्र जंग टॉकने को घीफड़ाऊ
 धूप छाँह ट्रकने को ठंठर तन वाकी है
 घेय चुके वाकी में वाइन बेटियों को आज
 वाकी नहीं लाज जमे इज्जत खाक वाकी है
 वाकी है किताब बेईमानी बदमाजी की
 जुल्म करे कोई तो "मुद्र" की एक जान वाकी है ।

गजल

कमी हैं तीर के टुकड़े , कमी जमजमीर के टुकड़े ।

ये कुछ है मयस्सर मेरी तकदीर के टुकड़े ॥

किये जिस तरह तुने भगततिह आदि के टुकड़े ।

कमी ऐसे ही हो जालिम तेरी जमजमीर के टुकड़े ॥

न रखो जेल में हमको चाहे सुली पे लटका दो ।

ये दीवाने न कर हारें कहीं जंजीर के टुकड़े ॥

में पैदा हो गया हूँ अब बतन की जा निजारी पर ।

खटकते हैं मेरे दुश्मन के दिन में तीर के टुकड़े ॥

॥ यह सब स्वराज्य संगीत में वर्ष 1931 में छप चुके हैं ॥

गजल

छोड़ दे सैयाद बुलबुल का तताना छोड़ दे ।

अब तो जालिम कम तराना आवोदाना छोड़ दे ॥

जेल लाठी गो लियों से खूब लीन इस्तहान ।

अब तो जालिम "मुद्र" को तु आजमाना छोड़ दे ॥

गुल व गुये सब चुने और जाव भी मुरझा गई ।

गुलजने बरवाद में बिस्तर बिछाना छोड़ दे ॥

आरजू हम पे कसों की बेरहम सैय्याद तुन ।

जा चला जा हम बुलबुलों का आशियाना छोड़ दे ॥

ठुमरी

टेक - भारी भीर पड़ी भगवान कैसे अपने प्राण बचाये ।

सहते शीत घाम और मेह हरदम हर ते रखौ नेह
 सारी सुखि गई है देह, चलते फिरते चक्कर आये ॥ ११ ॥
 पीछे होइ फलत तैयार, पहले वाकी होइ तवार
 दे के पंजरोजा की मार, चक्की कुड़की हाल कराये ॥ १२ ॥
 वाकी वये अगर जमींदार, फिर हो ना लिज को तैयार
 डिग्री जारी करके यार, फौरन 59 दफा लगाये ॥ १३ ॥
 जब हम लेवे जाये कर्ज, वहाँ पर लगे अनौखा मर्ज ।
 देखी साहूकारो का तर्ज, आना स्वया ब्याज लगाये ॥ १४ ॥
 सब छेती की पैदावार, ते जाइ जमींदार साहूकार ।
 आखिर हो बैठे लावार, भुखे बालक स्दन मायाये ॥ १५ ॥
 पूरी पटवारी की मार, हममें मयवाये तकरार ।
 इनको है पूरा अठपार, कापिज चाहे जिसे दिवाये ॥ १६ ॥
 हमतो महिन्त करें कमाई, बैठे रंडी मद्दुआ खाई ।
 कंजर और कजार व्यवसाई, मुफ्ती और माल उढाये ॥ १७ ॥
 राजा प्रजा साहूकार, सबके हैं हम ही आधार ।
 हैं हम जग के पालनहार, पदवी हाथ "मुद" की पाये ॥ १८ ॥

वरना

वारी तो वरना असहयोग कूँ मेरो ठोके छाती
 भारत माता ने मे लयी गोद प्रह्लाद वरना
 दीनी है अग्नि जलाइ हवाना लागी ताती ॥ ११ ॥ वारी तो वरना .
 घेता में राम ने कैसे असहयोग साथी
 तेज राज के काज बाँधि लई तन में गाती ॥ १२ ॥ वारी तो वरना . . .

बापर में द्रौपदी ने कैसी असहयोग साधी

दीनों हे वीर बढ़ाई भये पाके दुख में साधी ।। ३३॥ वारी तो वरना . . .

तुम तो जाओगे व्याहन जवाहर वरना

हम हूँ बनेंगे जलखानि में खेत वराती ।। ३४॥ वारी तो वरना . . .

रतिया

टेक - घूमकर देखा हे भेन सब मुक्की का दीदार

अरब देखा अफ़ग़ानिस्तान जार लगजाई पिलो घिस्तान

शहर देखा हमने ईरान जर्मनी हे पेदों की खान

दोहा - अत्याचार में बढ़ रहा अंग्रेजी दरबार

सब दुनियाँ में बुझनुमा हे पेरिस का बाजार ।। ३५॥ घूमकर देखा . . .

देख इटली का भारी काम फैल्ट पिकती हे मुल्क तमाम

बिगड़ गयी बेल्जियम की नाम शहर और बचा न कोई गाम

दोहा - सबसे बढ़कर बढ़ रहा अमरीकी व्योपार

कारीगर जापान में हे गये बेबुझार ।। ३६॥ घूम कर देखा

हे नाहिल काहिल हिन्दुस्तान बिगड़ रहे हैं सबके ओतान

ये पहिले या इल्मों की खान हो रहा तो अब थकू समान

दोहा - किसी जमान में यहीं था विद्या का मंदार

इस भारत में हे चुके रामकृष्ण अवतार ।। ३७॥ घूमकर देखा . . .

भये सत्यवादी इसके बीच मोरध्वज, त्रिव, हरीशचन्द्र, दिधीच

पगाती दशरथ न हुए मारीछ, यहाँ प्रगटे अब ऐसे नीच

दोहा - जिससे ये भारत हुआ हे गारत पैवार

अपनी -2 तानते पं० छिददा कहे पुकार ।। ३८॥ घूमकर देखा हे

रतिया

टेक - यदि कलम तेरी जब छूटे जब यारी जुड़िजाय घरवा ते

घरवा कति बुनाइ लेउ कपड़ा सवरे घर की वनि जाय सपड़ा

में तो हतनी करें कलम तुम हेतु लगाइ लेउ करघा ते ॥ १॥ यदि . .

हतनी कही कलम मेरी कीजो, करघा ते धीती बुनि दीजो

में कातू तुम बुनीं कलम सब काम चली जाइ बकइ टरकाते ॥ २॥ यदि . .

ये सरकार जुल्म करें भारी कैद किये छड़े - छड़े बुद्धमयारी

जो पगलन में भेवा खाते वो जेल में दानीं दर खाते ॥ ३॥ यदि . .

हतनी कलम करो मेरी कहनी रंदा में दे देउ मेरा गहनो

हम तुम दोनों बने घालेन्टियर तारी दे चली बिरका ते ॥ ४॥ यदि . .

कवित्त - दिन ही में रात है

देखो कितान की मतान के समान टूटे

लुटिये की बातन में मिठाई सी मिठात है

घर-2 लार्थे ला दुकान पे बिठाये फेरि

भरिहें चिलम प्याये करि देत करामात है

हारि -2 हाथन पे रुमात फिर दलाल कहें

हतने और हतनी पाई चित्त में समात है

बो अन्जान सी कितान हूँ न दीछे कुछ आदत की दुकान पे तो दिन ही भरात है ।

जान हू न पाये जब हजारेन में होत बात

पूछ हू न पाते कीन भाव में चिकात है

लेउ लेउ तुम हूँ लेउ थोड़ी देर जू तो टट्टी सी लुटात है

जनम ना देखी रामशाला-कृष्णशाला-पाठशाला की कटोतरी कटात है ।

बैठो अनजान तो किसान कू न दीछे कछु आदत की दुकान पे तो दिन ही में रात है।

संसार×दुःख×संसारमे×संसार

देखी जा अदालत पे दिन ही में रात होय

बी०ए०एल०एल०बिन की बैठक जमात है

देखी तलवाना महन्ताना झुकराना फीस

मुहर्निर को दो अघरे भई जात है

पाँच स्मया तीन आना सुतफकत

बुँठ बीलपे की इनकी जीम विलविलात है ।

"मूढ" हेरान चौर लुटत अधिरे में परिर वकील और मुकदयारन की तो दिन ही में रात है

कोट लुट पेन्ट लुट बगमा छड़ी को देख

मूढ कवि को कालर पे दृष्टी ठहरात है

छाती ना सुहाती खाती नारी हू विचारी जमे

मोटे है नितम्भ फटी कुर्ती हू जात है

नाथ है कुल्हाड़ी कान ज्यों छोटे सुपारी

देह देख बड़ी भारी मन पूतना लजात है

ऐसे हू सपुत पाइ भारत माँ स्वतंत्र बने, बाधरी हुकरिया करे दिन ही में रात है ।

॥ लेखक छै छेदालाल "मूढ" सन् 1936 ॥

कवित्त -फूस नाहि सन् 1924

रात दिन कमयेन की मटयेन पे फूस नाहि

आलसी हरामी न की बंगला झुक पर है

कारन में बैठि जिनके कुररा जेबो खाइ ,

हम जाइ तो जड़ाइ और खाइये कू मटर है

हाकिम की डाली में लावन की हलाली होत

मजदूर और किसान की तो मौत पर भी कर है

ऐसे घोर अन्याय को कहा लों बखाने "मूट"

नीकरन की कोठी और मालिक बेघर है ।

बारहमासी

येतख़ यतुर ले सोय नाहि जग में तेरो तावी

एक ही सगो मजूर और सब मतलब के घाती

रात दिन तुही करे धंधो

तो हूं तेह लुटेरे लुटि बनाइ के आवन को अनघो

गाँठि आढ़तिया कटवामें

तेरो नमती तोले माल तोऊ पल्ले घर ये आधे

नाव तेरी गहरे पानी में, अब कसिमें कमर किसान घेन ना आस विरानी में

बेसाख

लागत ही बेसाख ताख़ तेरी करे नाहि कोई

साहूकार धनी व्यापारी लुटत है तोही

राज्य के लू-टत अधिकारी

जमींदार पतरीलि करें तेरी कारिंदा बवारी

बुरी इनकी है बीमारी

करिमें जल्द परहेज पहुँच गई कोटन पे नारी

लगे तेरी बेधा तानी में , अब कसि ले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

जेठ

जेठ जरावत गात बात तेरी पूछत नाहिं कोई
 बदल बदल के भेष देत ठग द्वारन पे फेरी
 गाँव के मुखिया पटवारी
 इन्हें पूरी भेदी जानि कराहें मिलके ये ठवारी
 ठेर ठवा बुझाह्मी टट्ट
 करे दलानी माल मारिके बने फिर लट्ट
 लुटो इन्की चिरानी में कसिले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

आधाढ़

आधाढ़ आता छोड़ काम खुद कर होख्यारी ते
 अब तक ठवारी भई दगा काजन की पारी ते
 अदालत में अत्याधारी
 तोते ओं खूब झिकार झिकारी बने न्यायकारी
 बात ना तीह कोई रखी
 चमकि रहे हैं हाड़ मास तब योला की सुखी
 नकें भोगे जिन्दगानी में। अब कसिले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

सावन

सावन में संगठन बिना संताब सहे भारे
 तरह - 2 के जुलूम गुजारी पापी हत्यारे
 हरम्मा निरुद्धिन बहकामें
 सुधी भैज स्वर्ग गिरह कोई आइगई बतलायें

पाप सब तो ही पे टूटे
 मीयाँ पीर पितुर चामुन्डा सब तोपे रुठे
 माँगते सब तो पे खानों
 तेरे पीछे पड़े नितक तु सबही ने जानी
 चुकाइ दे इनको नजरानों
 दे स्थानेन की भेट रहे ना घर में एक दानों

आगि दे जा महमानी में । अब कतिले कमर किसान येन नाहि आत चिरानी में ।

भादों

भादों भरिके पेट मिलतना तोहि कबहु रौटी
 वाकीक ब्याज आपणी खेत हैं चोटी
 घुस बेगार धर डोलै
 कुछ हमें देउ दक्षिणा तिपाही तेनन में बोलै
 बात तोहि लाखन घेरागी
 ज्वारी घोर लवार उबका छतिया और वाघी
 पिलौ इन्की तु धानी में कतिले कमर किसान येन ना आत चिरानी में ।

बवार

बवार में कर्म प्रधान विषय रचिराखी करताने
 जब तक जिन्दी रहे धून तेरी हत्यारे चाटे
 ठगन वह काइ दीयी सै
 तेरे लिखी भाग्य में नाहि जुँगी घर में धन कैते
 गुरु प्रोहित कहलाते हैं

ठेकेदार धर्म के बन्कै मौज उड़ाते हैं

धरो कहा आस विरानी में । कसिले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

कार्तिक

कार्तिक कहाँ तक कहे न सावित तन तेरे तनियों

यद् छाती पे छुन विदेही पीका है बनियाँ

मुफ्त के माल उड़ाते हैं

ठेकेदार धर्म के बन्कै मौज उड़ाते हैं

बनाइ लये मील और कोठी

तेरी कुनवा बूझी मर छीन्नाई मुँह की सब रोटि

लगे तेरी नाब निजानी में, । कसिले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

अगहन

अगहन ओँछे डीच यीं तेरी कम्बळी जाई

रही गिरह गहराई बनीयर को-पो दुखदाई

धुरी तोते लगि गई बीमारी

करिले जल्द परहेज पहुँचि गई कोठन पे नारी

साह सराफ कहा ते हैं

अबल कताई छीन विदेहन में पहुँचाते हैं

भयी नैगा नादानी में । अब कसिले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

पूस

पूस में पारी पर तेरी डेती कुं मारे है

तु बम्बा के पानी में ठाढ़ी रात गुजारे है

हरम्मा लौरिनु में तीधे

बालक तेरे िठुर - िठुर के वुल्हेन पे रोधे

कड़ाकड़ जब दौती बाजे

दुख में करे न तहाय देखा जोरे ते माभे

पास खुद गजन आते हैं

पड़े - पड़े बगलन में बाबुजी चाय उड़ाते हैं ।

हुपे तु खीर पुरानी में कसिले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

माघ

माह मास मगदार नाव तेरी जब गोता खाये

धरवा बनि के बादर आइके ओले बरसाये

होइ ऊऊ खेती पाड़ी

राजा रानी जाइ छिपे महलन के अधिकारी

न छोड़ो ब्याज ब्याज वाकी

नाज बिना चाहे बन्द पड़े रहें वुल्हे और चाकी

बयो कहा तेरी घरवारी में । कसिले कमर किसान घेन ना आस विरानी में ।

फागुन

फागुन फँदा पड़ो कटे ना बिन तेरे काटे

जब तक जिन्दों रहे वुन तेरो हत्यारे वाटे

काटि लें खुद अपनी बेड़ी

माखन निकरे नाहिं उमरिया बिना करे टेड़ी

काट ले खुद संकट सारे
 किनके पहुँ रहे रात्रि हथेली पे भी धरि के हई हरहारे
 गाढ़ि ले झंडा आगन में
 स्वर्ग स्वर्ग मिले न मौति के बिना रार ठाने
 यही हे बुद्धमा की वानी
 ले भारत की सुमिर सुमिर ले विद्या महारानी
 परी कहा बुढ़ी वानी में । कसिले कमर कितान घेन ना आस विरानी में ।

सन् 1927

कवित्त

राज्य पुकार सुनी खिरका ते
 पंचन में खुद गर्जी भरी हे
 नित दिन दीन सताने की
 नित नई लोग रघिय देत जवरी हे
 न्याय न भावन रोक न टोकन
 देन प्रजा उलटी सवरी हे
 घोर गवार लवारन की
 आज एसी भवरी में भली सवरी हे

कवित्त

मांगने से मिथारी को भीख हू मिलत नाहि ।
 भूख को न दाना मिले लाख कुसम आने से ॥
 मांगने से अमीर कुछ गरीबन हूँ देत नाहि ।
 दूसरों के द्वार हाथ अपना फेलाने से ॥

धीरे धीरे मांगने से कठोर माँ भी दैत नहीं ।

टुकड़ा तक छेदे को पूछली जमाने से ॥

तो फिर बुद्धिमानी आज आप ही बतादो हमें ।

आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी क्या दाँत छिछियाये से ॥ 1936

सवैया

जीविका कितने दिन बँदि जाय जिय मग़र करे ।

एक दिन धर्मराय के आगे जाना तुझे जरूर परे ॥

पूछिगा क्या किया काम फिर बतलाना मजबूर परे ।

छिदा कहे थोड़े जीवन को क्यों कसूर भरपूर करे ॥ 1923

कवित्त

राज्य पुकार भेज तुने खिरका ते पंचन में छुद गरजी भरी है ।

निश्चयिन दीन सताने का नित नई लोग रख्य दैत जवरी है ॥

न्यायन भावन रोकन टोकन देश प्रजा उलटी सवरी है ।

चोर गवार सवारन की ऐसी भवरी में भर्ता ववरी है ॥

रतिया

दोहा - श्री प्रहमान कुमारी ने बंती लई चुराह ।

कहन श्याम ऐसे लगे राधा की समझाह ॥

टेक - राधिका यों तेने रे मेरी बंती लई है चुराह

जानिकें मोहि यशोद लाल - चुराह बंती कीनीं जाल

तुनाऊ में अब अपनी हाल

दोहा - हाल सुनाऊ आपनी सुनि राधा घितलाइ

सतयुग के दरम्यान में जो दीनीं खेल खिलाइ ॥ राधिका यों तेने

भयो एक हरनाकुञ्ज बलवान, देव्यकुल में था दुष्ट महान

कुमर ताकी प्रह्लाद सुजान

छंद - प्रताप मेरे नाम का, उस समय भारी भक्त था

इस वजह से वह देव्य गठ नाराज उससे सक्त था

कहने लगा मम भक्त से मत रूट तू उस राम को

गिर से गिराया दुख दिया, छोड़ा नहीं मम नाम को

दोहा - गर्म बम्ब करवाइ के, दीयो उसे चिपटाइ

प्रगट बम्ब से अरि हनी, नरसिंह रूप धराइ ॥ राधिका यों तेने . . .

सुनी अब त्रेतायुग की बात, बनी में दजरय नृप की तात

नाम था राम जगत विख्यात

छंद - पृथ्वी का भार उतारने, दजरय नृपति की सुन वनी

संतार भर की सुख दीयो, उस दुष्ट रावण को हनी

लावनी - दापर युग के रही खेल देख तू प्यारी

यसुदेव पिता यशुदा मेरी महतारी

सुन सबी कृष्ण मम नाम, कहे सब देख

हनु कंस के प्राण सकल कुंज के मिट जाय क्लेश

दोहा - यहाँ तक की सब हाल में कहूँ तोइ सम्झाइ ॥ राधिकार यों तेने . . .

मानियो ठीक कहूँ जो आज होगी अंगरेजन की राज

करें वो भारत की मोहताज

छंद - मोहताज भारत की करें, अंगरेज अत्याचार कर

हलचल मयेगी देश में आऊंगा फिर अवतार धर

मैं नाञ्ज करनी खल न की ना कुमर बाबा नंद को
 धंती हमारी दे हमें वयों काम कियी पंद को
 दोहा - नाञ्ज खलन को मैं करूं, फिर कलयुग मैं आइ
 भारत के सब दुख हल, कोई गांधी नाम धराइ ॥ राधिका यों नेने . .

ठुमरी

टंक - हिन्दु के हैं हम दुक्ति कितान
 कर में हर, हरदम रहता, हरदम हर का ध्यान
 कल्यानिधि कल्या कर स्वामी काटो दुःख महान ॥ हिन्द के हैं . . .
 रुस, चीन, जापान, जर्मनी, इटली, इंगलित्तान
 अमरीका आदि के स्वामी, कृषक सभी धनवान ॥ हिन्द के हैं हम
 राजा और रहीस हिन्द के, करें न दुख का ध्यान
 रंडी मधुर भाइ मतखरे, हैं जिनके महमान ॥ हिन्द के हैं हम
 पैदा करे अन्न न पावे, क्या माया भगवान
 तारे जग के पालक होके, मुखे खोपें प्राण ॥ हिन्द के हैं हम

गज़ल

मेरे दिल में क्या है अंतर देख लेना ।
 तवाली हमें मरा कतर देख लेना ॥ १॥
 दवाते घलो हम न बोलेगि लेकिन ।
 जमे अब ती चींटी के पर देख लेना ॥ २॥
 हमारी हत्ती मिटाये ते पहिले ।
 जरा अपनी हत्ती मगर देख लेना ॥ ३॥
 दिखाते हो नाहक हमें मीत का डर ।

हथेली पे रखा है तर देख लेना ॥ ॥५॥
 रही जेल की अब तो है किसको परवाह ।
 हर एक मर्द कतता कमर देख लेना ॥ ॥५॥
 जिसे आप कहते अमन है अमन है
 भरा है उसी में जहर देख लेना ॥ ॥६॥
 तुम्हें आज झुकत समझती है केता ।
 मेरे वाक्यों का अंतर देख लेना ॥ ॥७॥

—

डेदालाल मुद्द, अप्रकाशित रचनाएँ

—

५०६ कवि - पं० रामप्रसाद पुजारी

बन्दना खण्ड

गाइयी - जगत पिता जगदीश ईश तुम्हें भीत नवाउं,
 देहु बुद्धि बरदान राष्ट्रीय आल्हा गाऊं ।

आल्हा

जेल जालिफा तुमको सुमिलें, तुमरी शरन लइहे आइ ।
 बकसो बल बुद्धि विद्या की, हमको तिकड़म देउ बताइ ॥
 ताहब जेलर अरु बाबुन की अब छुड़ किन तौ ते देउ बताइ ।
 वोडर पक्के लम्हरदारन, के दिल देउ दया अम्हाइ ॥
 भारत माता तुमको सुमिलें, नितदिन धर तुम्हारी ध्यान ।
 दादा माई और गोखले, पुना वारे तिलक महाराज ।
 बरखा बारे गांधी बाबा की, नहिं जग में जानत आज ॥

बल्लभ बिदल पटल दोऊ जैसे अंगद अरु हनुमान ।
 तय्यब बाबा डाढ़ी वारी, ताला तय्यब के उनमान ॥
 अब्दुल गाँधी तरहद वारी कलि की वाल्मीक तेउ जान ।
 नेहरू कुल में वीर जवाहर, जाकू जा मे सकल जहान ॥
 अमिमन्यु सुभाष भट मानी प्रगटी बंगाले में जाय ।
 अंसारी देहली में हे गये धुर पंजाब लाजपति राय ॥
 भगतसिंह, सुबेदर, राजगुरु, भये यतीन्द्र वीर बलवान ।
 विस्मिल वीर चन्द्रशेखर मे अर्पण करे देश हित प्रान ॥
 बनी लक्ष्मी मोती आयके, सब अग्रेज गये दहलाय ।
 कर्हू सरोजनी और कस्तुरी माता रूप बनायी आय ॥
 तरुण रानी बनके एक दिन प्रगटी इलाहाबाद में आय ।
 कमला बन्कै तेने तिरियन को पुरन पतिव्रत दयी बताय ॥
 कैसे भारत गारत हे गयी तो सब कथा कहो समझाय ।
 कैसे जगत गुरु भारत को गोरन लयी गुलाय बनाय ॥
 कैसे पेदा कांग्रेस भई तो सब कारण देउ बताय ।
 अग्रेजी शासन के अधरम अत्याचार और अन्याय ।
 देश भवत नेतन की करनी अब अरुबलिदान लिखियो आय ।
 हत्याकाण्ड बाग जलियाँ के करनी कर गुरण्डन वयार ।
 भारत माता के नाते ते तुम सब मझ्या लगत हमार ॥
 करी संगठन मिलि के बेठो बेड़ा होय ममर से पार । ।
 अब भारत की कांग्रेस पे गोरन मांगी आइ सहाइ ।
 तिलक गुरु गाँधी के पाँहन टोपी धरी लाठिने आइ ॥
 अबके पक्ष हमारी करि देउ तिहारी गुन भूलिन्ही नाइ ।

जीति लड़ाई स्वराज्य दे दें बिल्कुल उजर करेगि नाह ॥
 दुखी देखिके जब गांधी के दिल में दया गई है आह ।
 छाती ठोकि दई हुकरा ने अब तुम मती करी परवाह ।
 जाहके पहुँची ये लेनिन में जहाँ पर परे वीर सरदार ।
 आका देखी लंगोटी धारोमुष्टि वीरनु ने करी जुहार ।
 जब ललकार दई जवानन को भाईयो करमें लेउ कृपाम ।
 पिता समान राजा हूँ समझी परजा बेटा के फनुमान ।
 एकन मानी गांधी जी की रीलर पिलकू दयी चलाय ।
 कात ग्यार को जब आवतु है, भजिके गाँव तिमने में जाय ॥
 सेतेई रीलट किल अंगरेजनु धुर पंजाब धरीये जाय ।
 तार देदयी तब गांधी ने भाई दड़ाताल दई करवाय ॥
 कारे झंडा निकरन लागे रीलट किल दीना ठुकराय ।
 यह गति देखि विदेशी गोरे गळ्ळर बहुत गये खिसियाह ॥
 करफु ओडर जारी करिदये फीजी शासन दिये बिटाह ॥
 अमृतसर जलियान बाग में बेरिन बादर हारे जार ।
 जुरी कचहरी जहाँ पब्लिक की अंधा धुन्ध लग्यो दरवार ॥

दादरा

उड़ाते चलो प्यारा झंडा तिरंगा ।
 भारत माँ के पूत कहाओ, सच्ची सेवा कर दिखलाओ
 मिल जुलकर सब आगे आओ,
 आगे कदम बढ़ाते चलो, प्यारा झंडा तिरंगा ।
 हे जिन्को आजादी प्यारी समारोहमें भी बढ़ी अगारी,
 बन जननी के प्रेम पुजारी ।

हैंसि - हैंसि मीश बढ़ाते चलो , प्यारा झंडा तिरंगा . .

सत्य अहिंसा का सूत धारी काम क्रोध मद मोह बिसारी ,

पराधीनता का गढ़ तोड़ो फूट पापिनी से मुक्त मोड़ो ,

बैर भाव का झण्डा फोड़ो ,

गीत पुजारी के गाते चलो प्यारा झंडा तिरंगा . . ।

—

जब लाहौर जवाहर लीयो पुरन स्वराज की रेलान ।

मारी ठोकर ऐमेम्बली में जब सन् 29 के दरम्यान ।।

सन् 1930 आय गयी बीरन धरने दये लगाय ।

गाँव - गाँव में तैन्क बनि गये झंडा लीने हाथ उठाय ।

जान हथेरीन पे धरि-धरि के देवी हटी तमर में आय ।

उः अप्रैल महात्मा गांधी धावा करो नमक पे जाय ।

जवान उनासी संग में लेके दई नमक की लुट मचाय ।।

झाँसी देके तब लंदन से रीते गांधी दये लौटाय ।

गिरफ्तार बम्बई पे करिलये बस नेता दये जेल पठाय ।।

तब गांधी जी ने भारत कूँ दोनों मूल मंत्र सम्झाय ।

करी संगठन चरखा काती अरु पंचायत सेउ बनाय ।।

बूढ़े बापू वर्धा धरि ता दिन ताज देय पहिराय ।

वीर जवाहर और पटेल जी सरहद वारे अब्दुल खान ।

टन्डन जी राजेन्द्र पन्थ मिलि पालीवाल सिंह मलखान ।।

पुरि के नेता सब भारत के बैसे दिल्ली के दरम्यान ।

मोला आजाद राष्ट्रपति जा दिन करि दिगे रेलान ।।

उड़े तिरंगा माल किले पे , तैन्क करे विजय के गान ।

आल्हा तुने पुजारी छवि की हो स्वतन्त्र सब हिन्दुस्तान ।

23 अक्टूबर 43 चल दये भारत वीर महान ।

4 फरवरी 44 में होने लगा युद्ध घमसान ॥

अमरीकन अँगरेजी भेना और आजाद हिन्द के जवान ।

फटि - वीर लड़े खेतन में गाम सुरङ्ग के भेदान ।

जाह कोहिमा की बाड़ी में जंडा दिथी तिरंगा गाड़ ॥

भजन

उठो मातृ भूमि की आँखों के तारे ।

तुम्हीं राष्ट्र के प्राण आधार प्यारे ॥

बड़ - सभी मिलके गावो यही तुम तराना ।

हमें अपना आजाद भारत बनाना ॥

बता तुर तैमिक समर में जुआरे ॥ उठो मातृ . . .

ओ हिन्दु मुसलमां सगे भाई भाई,

रुसी, पारसी, सिख पेनी, ईसाई ।

यमकते हुए जग मगाते तितारे ॥ उठो मातृ . . .

अटल प्रेम का पाक दरिया बहादो ,

ये सब आपस के सब भेद झगड़े भुला दो ।

लगा दो भवर से ये नैया किनारे ॥ उठो मातृ . .

करी देश भवती बनो प्रिय पुजारी

हो जीवन की ये ही पुनीती तुम्हारी ।

समय को न बूझो उठो गुल हजारे ।

उठो मातृ भूमि की आँखों के तारे ॥

रामप्रसाद पुजारी, अप्रकाशित रचनाएँ

4-7

स्व० श्री गजराज सिंह "सरोज" की काव्य रचना

अहिंसा

हम आग बुझाने आए हैं,

हम आग लगाना क्या जानें ।।

भोले हरिणों के युगल - नयन,

उस दुष्ट वधक से यों बोले ।

मेरे आँसु की सरिता में,

तू अपने पापों को धोले ।।

तेरा इसमें कुछ दोष नहीं,

हम तो स्वर पर दीवाने हैं ।

हे आजादी जिनकी प्रेयसि,

हम थे मजदूर मस्ताने हैं ।।

मृदु तानों पर मरने वाले,

हम चीन बजाना क्या जानें ।

हम आग बुझाने आए हैं,

हम लगाना क्या जानें ।।

अब आये मस्त फकीरी में

दुनियाँ के बन्धन तोड़ दिये ।

दानवता की क्षलि-बेदी पर,

अरमान सकल बलिदान किये ।।

फिर भी दुनियाँ की नजरों में,

हम कोई त्याग न कर पाए ।

निर्झर ज्यों निरु-दिन छर-झर भी,

हम छाती तिन्यु न भर पाए ॥

सीमित काम में घेसव के,

हम साज सजाना बया जायें ।

हम आग बुझाने आए हैं,

हम आग लगाना बया जायें ॥

हृदय समझान में क्षण प्रतिक्षण,

अनगिनत चिंतारें धधक रही ।

जलते दिल के अंगारों में,

जग की आगारें चमक रही ॥

देखी केसा अद्भुत जादू,

हे उनके मीन निमन्त्रण में ।

सीना खोले बढ़ते जाते,

मद होन स्वर्ण आकर्षण में ॥

सकितों पर मरने वाले,

हम शीर मथाना बया जायें ।

हम आग बुझाने आए हैं,

हम आग लगाना बया जायें ॥

हम वह सागर गंभीर नहीं ,

जो मर्यादा में रहते हैं ।

हम तो वह खुनी दुनियाँ हैं,

जो झोंघ तोड़कर बहते हैं ॥

तलु होकर अपने कुतर्कों को,

हम कैसे स्वयं कुचल डालें ।

आजादी के उद्गारों को,

हम कैसे स्वयं मतल डालें ॥

मानव हैं दावन के आगे,

हम कीज सुकाना क्या जानें ।

हम आग बुझाने आये हैं,

हम आग लगाना क्या जानें ॥

दुनियाँ आती अपने दर पर,

फिर हम कितने फरियाद करें ।

जितको पूछा अपना पाया,

कितने विपरीत जहाद करें ॥

मरकर नर - भोजी दावन में,

मानवता का तयार करें ।

जलकर उन सूखी आँखों में,

बहती गंगा की धार भैं ॥

हम मरघट के रहने वाले,

नव विश्व बसाना क्या जानें ।

हम आग बुझाने आए हैं,

हम आग लगाना क्या जानें ॥

कोई कहते अनुराग लिखी,

कोई कहते हुंगार तरत ।

कवि , कव तो यों बरखाद करे,

निज की उत्तर में बरत - बरत ॥

अथ कटु तट्यों के नग्म धिन्न,
हमने ज्यों के त्यों खींच दिए ।
तब नीरस बतलाकर उनकी,
दुनियाँ ने लीचन मींच लिए ॥

अटपट स्वर में रोने वाले,
हम ताल तराना बयाजाने ।
हम आग बुझाने आए हैं,
हम आग लगाना बयाजाने ॥

तुम विश्व जलाने आये हो,
हम भरे दुर्गों में भेज ठंडे ।
अपने युग की तीगन्ध तुम्हें,
हम भी जलने की मयल पड़े ॥

हम भी दो आँहें रखाते हैं,
हम भी दो बाँहें रखते हैं ।
तलवारों से तन तुहलाकर,
हम अपना धैर्य परखते हैं ॥

कौमी परवाने जलते हैं,
ये दीप जलाना बयाजाने ।
हम आग बुझाने आए हैं,
हम आग लगाना बयाजाने ॥

x x x x

हम आग लगाने आये हैं,
हम आग बुझाना बयाजाने ॥

इस पिजड़े में रहते - रहते,

हम अब गये हैं नदियों से ।

हे रोते - रोते अब गई,

अबिं ओतु की नदियों से ॥

जंगल के भीले हिरनों ने,

अब सींग चलाना सीखा है ।

मुझे भारत ने दुश्मन का,

अब मौंस घसाना सीखा है ॥

फिर हिंसा और अहिंसा का,

हम पाठ पढ़ाना क्या जानें ॥

उन जलते चिक्कन सहीदों की,

जब मुझे आ रही थीं यादें ।

दुनियाँ ने दी मददोजी में,

कुछ मुझको जोन भरी यादें ॥

चिढ़कर तय्याद कह रहा था,

यह बुलबुल आग उगलता है ।

में बोला धधक रहे दिल से,

रह-रहकर धुँआ निकलता है ॥

हम काले हैं विष के प्याले,

फिर अमृत पिलाना क्या जानें ॥

अब तो लोहू से लिखते हैं,

हमको स्याही दरकार नहीं ।

हम तो लोहे से लड़ते हैं,

ओतु हमको दरकार नहीं ॥

हर बूँद हमारे शीर्ष की
 हर पीठ हमारे तारों की ।
 जय हिन्द कहें जय हिन्द कहें,
 हर स्वाँत हमारे प्राणों की ॥

आजाद हिन्द के सैनिक हैं,
 हम पीछ दिखाना क्या जानें ॥

हम पानी उसको कहते हैं,
 बिजली बन रिपु पर गिर जाये ।
 वीरों के तेवर पर चढ़कर ,
 फिर तलवारों पर चढ़ जायें ॥

हम पानी उसको कहते हैं,
 जिसको पी-पीकर प्यास जगे ।
 हम पानी उसको कहते हैं,
 जिसको छूते ही आग लगे ॥

हम खून चढ़ाने आए हैं,
 फिर फूल चढ़ाना क्या जानें ॥

नेताजी अब भी जीवित हैं,
 हम हाथ कर कहते हैं ।
 जज्बात हमारे जीवित हैं,
 हर दिल में हलचल करते हैं ॥

जो लड़कर फिर विजय करे,
 हम उसको वीर नहीं कहते ।
 दुश्मन पर आये तरस जिते,
 हम उसको तीर नहीं कहते ॥

तनु सत्तावन की तलवारें,

ये ध्यान बताना क्या जानें ।।

हम जल-जल कर अंगारों में,

हे आज स्वयं अंगार बने ।

हम तूफानों से लड़-लड़ कर,

हे आग स्वयं तूफान बने ।।

पहिले तुम करलो बार नहीं,

फिर पीछे पछिताना होगा ।

यह भरे तर का कफन मुझे ,

फिर तुमको पछिनाना होगा ।।

हम छोट लूँ के पीते हैं

हम अब बहाना क्या जानें ।।

गजराजसिंह "सरौज" अहिंसा, 9 - 17

- - - - -

गाँधी

मैं जीवन के तूफान छिपानुँ कैसे ।

तूफानों में अरमान छिपानुँ कैसे ।।

सोती पीढ़ारें आज उमर आई हैं,

छालों की परिखा तोड़ निकल आई हैं ।

झौंसी की रानी और अवध की बेगम,

मेना की आँखें आज मधल आई हैं ।।

गुल्लू जल में जल-पान छिपानुँ कैसे ।

मैं जीवन के तूफान छिपानुँ कैसे ।।

खण्डहर की ईंटें आज बिधे हृदयों से,
 उपवन की झूमरी आज पिकल प्रणयों से ।
 रोती कड़्यों से कितनी बिछड़ी गायें,
 हल्दी के पीले हाथ लिए विधवायें ॥
 भारत माँ का बलिदान छिपातुं कैसे ।
 मैं जीवन में तूफान छिपातुं कैसे ॥

युवकों की कितनी कंकन सजी भुजारें,
 हे तड़प रही उर लगा उन्हें लतनारें ।
 मैं पड़ा हुआ हूँ कब से याद दवार ,
 सूखे पंजर में यह करियाद छिपाए ॥

कोमल उर में पाषाण छिपातुं कैसे ।
 मैं जीवन के तूफान छिपातुं कैसे ॥

कल आने वाली कितनी सुहाग रातें,
 कल कलने वाली प्रिय पुष्पों की पातें ।
 दृग में होली का रंग भरे राधारें,
 बहिनें राखी में भरे मधुर आभारें ॥

ऐसे जलते अमजान छिपातुं कैसे ।
 मैं जीवन के तूफान छिपातुं कैसे ॥

बया कहूँ किसी से अपने दिल की बातें,
 हे देख रहे सब अपनी-अपने घातें ।
 जल-जलकर मेरी प्यासी अभिलाषारें,
 अंगारों के तंतार तलाकर लारें ॥

उन अंगारों में प्राण छिपातुं कैसे ।

में जीवन के तुफान छिपातुं कैसे ॥

लिख प्रकृति हृदय पर अपने प्रस्तावों को,
कर चित्रित व्याकुल नमक भरे घावों को ।
हों, लो अब मैं तो चला अगर तुम चाहो,
दुहरा लेना इस युग अब अध्यायों को ॥

अभिशापों बरदान छिपातुं कैसे ।

में जीवन के तुफान छिपातुं कैसे ॥

गजराज सिंह "सरोज" अहिंसा, 18, 19

कमला नेहरू के प्रति : "जिसकी अब याद भर रह गई है"

कमला रही न विश्व में पर याद रह गई ।

औं मकान टह चले बुनियाद रह गई ॥

धूँधली सी याद है कभी आया बसंत था,
कोकिल ने कूक-कूक कर रिझाया सतत था ।
लेकिन उसी प्रारम्भ में मुतकाया अन्त था,
आनन्द में ही शोक का सागर अनन्त था ॥

माया मिली न राम ही पर साथ रह गई ।

कमला रही न विश्व में पर याद रह गई ॥

हँसते हैं देख-देख भरे दिल के दाग को,
हे सीधेमे वाला न कोई जलते बाग को ।
ताली से उड़ा देते हैं खण्डहर के काग को,
पागल का गीत कहते हैं, अनुराग राग को ॥

दुनियाँ से दाद उठ गई फुरियाद रह गई ।

कमला रही न विश्व में पर याद रह गई ॥

अपना ही तीना बीटा तो तीनार क्या करे,

अपने ही छोड़ जायें तो बेगाना क्या करे ।

जब छुद ब्रमा बुला रही परवाना क्या करे,

दीवाना ही चुका तो फिर जल जाना क्या करे ॥

सागर में ज्वार आ गया मर्याद रह गई ।

कमला रही न विश्व में पर याद रह गई ॥

मैं ही न तिफ रीया जमाना ही रो गया,

अरमान राख हो गये यह प्यार बी गया ।

तकदीर तुट रही थी पहरेदार तो गया,

जग देखता ही रह गया, आया न जो गया ॥

झोता रहने किन्तु, कोरी याद रह गई ।

कमला रही न विश्व में पर याद रह गई ॥

गजराज सिंह "तरीज" अहिंसा, 26 - 27

"कल्प - कहानी"

"सुनी तहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प - कहानी"

अब वे स्मृतियाँ जाग उठी हैं तारी दुनियाँ तोई,

जिन छहियों में, मैं माता से लिपट-लिपट कर रोई ।

रो-रो कर मैं बापू की तारी यापट धोई,

भया भरत पड़े आँगन में तारी सुध बुध धोई ॥

दुलहिन बनकर ही मैं ठगिनी दुनियाँ पहिचानी ।

सुनो सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प - कहानी ॥

फूल खिला था अभी-अभी मैं बुल-बुल बनकर आई,

मधुर गन्ध पर ही दीवानी मैं तान सुनाई ।

निर्दय गुलघी ने गुल तोड़ा, की ऐसी निरुराई,

हँस-हँसकर खिल-खिलकर गुल ने अपनी मोत बुलाई ॥

इन्हीं अँधड़ियों के आगे वे श्रमस्त्री पखड़ियाँ बिखरानी ।

सुनो सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प - कहानी ॥

हाथ सुहाग रात में उनीं मेरी माँग भरी थी,

उन कोमल हाथों ने मेरे हिय की पीर हरी थी ।

जलते दीपक को साखी दे मेरी बाँह गही थी,

मैं भी मुक किन्तु यह आशा कोमल कूक रही थी ॥

तब कहा प्यार से घूम, अरी ओ, हृदय-मदन की रानी ।

सुनो सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प - कहानी ॥

उस अथ मैं हति छिपी हुई थी मैं न उसे लखपाई,

जो मुझको सहकर मिला था उसे न मैं चखपाई ।

गिरफ्तार वे हुए कहीं बस इतना ही सुन पाई,

इन बजमारे कानों पर मैं कुछ विश्वास न लाई ॥

उनके कर की लिखी हुई पत्री मैं पहिचानी ।

सुनो सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प कहानी ॥

जा देहलो के लाल किले में मैं उनको देखा,

अब भी उनके चन्द्र बदन पर हँसती थी विधु-लेखा ।

उनके पेरों में झड़ी थी हाथों में हथकड़ियाँ,

मेरे उनके बीच अड़ी थी लोहे की दुद्र छड़ियाँ ॥

हाथ न पृथ्वी फटी, अभागि मैं उसमें न समानी ।

तुनी तहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प कहानी ॥

ये कारा की उन्हीं भयानक कोठरियों में रहते,

तावन भादों की गर्मी को तड़प-तड़प कर सहते ।

भैंस पौछा, बया सोने को मिल जाती वरपय्या,

बोले, पगली यहाँ जेल में यही भूमि है ज़प्या ॥

केवल कम्बल बिछा फल पर पड़ रहता हूँ रानी ।

तुनी तहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प - कहानी ॥

घर आकर भैंस भी कम्बल और कोठरी लीन्हीं,

मुझ अबला पर मच्छर दल ने कठिन बढाई कीन्हीं ।

वेध-वेध कर मेरा मुद्दु तन मुझको याद दिलाई,

उन्हें नींद कब आती होगी विधि कैसी निरुराई ॥

युक्त जाती जिसमें युक्तों की उठती हुई जवानी ।

तुनी तहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प कहानी ॥

अबकी भैंस पुनः जेल में चंद्र दोज का देखा,

मुझे देखकर उनके मुख पर दोड़ी जीवन रेखा ।

पूछा कहने लगे एक ही बेरा भोजन पाते,

रोटी भैंस लेकर देखी कैसे इसको खाते ॥

तब कहा इस तरहही मर - मरकर स्वतन्त्रता लहरानी ।

तुनी तहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प - कहानी ॥

आई अपने साथ वही रोटी का टुकड़ा लाई,

भेंटें बने पीसकर भैंस घेती और घनाई ।

उन्का दुख बटाने को भैंस यह साथ लगाई,

सिर्फ तब पर तेक-तेक कर बड़े प्रेम से खाई ।

एक समय रौंटी पर बीता दूजी बेरा पानी ।

तुनी सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प कहानी ॥

पुरजन , परिजन सबने मिलकर खूब मुझे सम्झाया ,

आशाओं का लहराता सा कल्पित बाग दिखाया ।

आ जायेगी छूट जेल ते यों मुझको बहकाया ,

उत षड्यन्त्र केत का मुझसे सारा हाल छिपाया ॥

उत दिन सहता तुनी सात के रौने की सी पानी ।

तुनी सहेली दर्द भरी मेरी यह कल्प कहानी ॥

वे आपस में बिसक - बिसक धीरे-धीरे कहती थीं ,

टूटे दिल पर बज्र गिरा था वे कैसे सहती थीं ।

फौंसी को आशा है , तुन्कर मुझको ज्वर चढ़ आया ,

हाथ पिघाला तुमने मुझसे मम सौभाग्य छिनाया ॥

फिर अन्तिम दर्शन को पहुँची भरे दुगन में पानी ।

तुनी सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प कहानी ॥

मेरा दिा कहता था उनसे मैं कुछ बातें कर लूँ ,

अन्तिम क्षण में पुष्प बढ़ाकर उनकी पीड़ा हरलूँ ।

पर होठों ने कोरा उत्तर दे , मुझसे मुँह मोड़ा ,

तब कहा उन्होंने , मेरी रानी , बिछड़ रहा अब जोड़ा ॥

अरी तुहागिन , आज देश पर आहुति तुम्हें बढ़ानी

तुनी सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प कहानी ॥

रिश्तेदारों में लगे बरतने गहरी झड़ी लगाई,
 एक न तके थे एक फलक में जी भर देख न पाई ।
 स्वप्न भंग होने पर मैं निज को बाहर पाया,
 हाथ सदा के लिए किसी ने या हमको बिलगाया ॥

तब मैं भी उनके पथ पर की जाने की ठानी ।

तुनी सहेली दर्द भरी , यह मेरी कल्प कहानी ॥

तुधा पिये थे आते होंगे लोग प्रतीक्षा करते,
 उर अन्तर में धक रही ज्वाला को कैसे सहते ।
 किन्तु वहाँ से लोग लौटकर जाती हाथों आर,
 दामन ने कोमल पीड़ा पर भी पत्थर बरसाए ॥

तब से अब तक छोड़ा मैं जन्म और यह पानी ।

तुनी सहेली दर्द भरी यह मेरी कल्प कहानी ॥

अरमानों की झोली में भर व्यथा लिए जाती हूँ,
 तेरे उर अन्तर पर अपनी कथा लिखे जाती हूँ ।
 यदि अवकाश मिले तो सुन्दरि , इसे कभी पढ़ लेना,
 मुझ जैसी दुखिया बहिनों की पीड़ा यों हर लेना ॥

औसु बरसा तुमको तारे जग की आग बुझानी ।

तुनी सहेली दर्द भरी अब मेरी यह कल्प कहानी ॥

x

x

x

“प्रयाण”

“ले आज बहीदों की टीली,
हम तुफानों को चीर चली ।”

x x x x

दानव ने रोड़े अटकार, पर हमने कुछ परवाह न की ।
तिल-तिल पर हमको ब्रेख देथ दिया पर फिर भी हमने आह न की ॥

दुश्मन को आज निजाना कर,
हम बनकर तीखे तीर चले ।
हम तुफानों को चीर चले ॥

जीप्ला की नदियाँ लॉघ चले, ज्वाला मुखियों को प्यार किया ।
हाथों में कोई शस्त्र न ले, सीधा दुश्मन पर वार किया ॥

पेरों की बेड़ी तोड़ ताड़,
रथ शंख बजाते वीर चले ।
हम तुफानों को चीर चले ॥

कर दीवारों को पात-पात्र, हल चल कर दी दीवारों ने ।
देख अब कोई रोक सके, कह दिया आज अरमानों ने ॥

बापु का आशीर्वाद लिए,
पी भारत माँ का क्षीर चले ।
हम तुफानों को चीर चले ॥

हम रिपु के बल को तोल चुके, सीमे के बन्धन खोल चुके ।
चालीस कोटि औ त्वर में, भारत माँ की जय बोल चुके ॥

रथ में शत्रुओं को डाल-डाल,
ये राजे, राव अमीर चले ।
हम तुफानों को चीर चले ॥

“जेल जाते समय”

जब अवधि निश्चित नहीं तो

क्या बताऊँ कब मिलूँगा ?

पार जाना है क्षितिज के और घींटी की सवारी,
लाधना है पर्वतों को तरने हैं सिन्धु नारी ।
तामना उन दानवों का मानवों के जो शिकारी,
काम आते हैं विपत्ति में मित्र, धीरज धर्म, नारी ॥

तब तुम्हारी याद करके ही,

हृदय को धाम लूँगा ।

जब अवधि निश्चित नहीं तो

क्या बताऊँ कब मिलूँगा ॥ १॥

देखकर तुमकी सिसकता रो पड़े जब सार्वभौमार्थे,
पलक पत्रों में छिपे जा प्रेम प्यासी आरिक्तार्थे ।
जब विरह दव से झूलत जाये तुम्हारी वासनार्थे,
फिर तता डाले उन्हें अनगिनत पतझड़ की व्यथार्थे ॥

तब तुम्हारी वाटिका में,

फल बनकर मैं खिलूँगा ।

जब अवधि निश्चित नहीं तो -

क्या बताऊँ कब मिलूँगा ॥ २॥

एक एक करके जबकि साथी छोड़ जायें साथ मेरा,
मृत्यु तप्या पर पड़ा हूँ मैं तामने हो रूप तेरा ।
और कोमल कर तुम्हारे भेंटन की बढ़ रहे हो,
प्राण तजकर देह तारी आँख में आ अड़ रहे हो ॥

तब जड़-जगत के प्रस्तरों पर -
 बूँद बचकर टल चलेगा ।
 जब अवधि निश्चित नहीं तो -
 क्या बताऊँ कब मिलेगा ॥ ३३॥

—

गजराज सिंह "सरोज" अहिंसा, 40

"धनवालों की नगरी"

मजलूम यहाँ ते बचकर चल,

यह धनवालों की नगरी है ।

आधार शिलाओं के नीचे,

कुन्दन करते कंगाल दफ़न ।

कितने जलते -जलियान दफ़न,

कितने भूखे बंगाल दफ़न ।

कट -कटे विगद कमाओं के,

रोदन करते कंकाल दफ़न ।

सरदार भगत, बिस्मिल, कितने,

कितने भेखर, आजाद व दफ़न ॥

बख़्श घायल हिरनों की तड़पन में,

इन तपस्यादों की तफ़्फ़री है ।

मजलूम यहाँ ते बचकर चल,

यह धनवालों की नगरी है ॥

तेरा यौवन बिक रहा आज,
 इस अलना के बाजारों में ।
 तेरा नैतिक बल क्षीय हुआ,
 इनके निन्दित अभिचारों में ॥
 तेरी हस्ती टल चुकी आज,
 इनकी मस्ती के प्याले में ।
 या तो ईश्वर बलहीन, या कि -
 दम नहीं तुम्हारे नालों में ॥

हे तेरी कल्प कराह और
 इनकी सुख निदिया गहरी है ।
 मजलूम यहाँ से बचकर चल,
 यह धनवालों की नगरी है ॥

इस वैभव के अन्तर में भी,
 कोई सह-सह कर घोर जीत ।
 कटु क्षुधा-पिपासा से पीड़ित,
 या जिस का जग में नहीं मीत,
 हे जाने कब से चला गया ॥
 नव-रचना के अरमान छोड़,
 प्यारे परिवारी दुःखों से,
 निज के सारे सख-धन तोड़ ॥

हे कोई पन्थी भूल गया,
 यह गठरी है या ठठरी है ।
 मजलूम यहाँ से बचकर चल,
 यह धनवालों की नगरी है ॥

तेरी अँखें बुझ चुकी और,
 उनकी कूबरों पर दीप जले ।
 तेरी आत्मा मिट गई और -
 उनकी तुष्णा पर फूल खिले ॥
 हे तेरे पहलू पीर -मरे
 उनके पहलू में परियों हैं ।
 हे उनके कर में राज दण्ड,
 तब हाथों में हथकड़िया हैं ॥

तेरी सच्ची फरयाद और -
 उनकी पेहाद कचहरी है ।
 मजलूम यहाँ से बचकर चल,
 यह धनवालों की नगरी है ॥

"माँ मुझे बरदान दे दो"

लण्ड लण्डों में बटा है,
 आज भारत देश मेरा है ।
 मैं स्वयम् पहचान पाता हूँ,
 नहीं यह रूप मेरा ॥

एक होने को तड़पते -
 उमड़ते अरमान दे दो ।
 माँ मुझे बरदान दे दो ॥

मर न पाया बया अभी,

खप्पर कही माँ कालिका का ।

विश्व के इतिहास में,

अपमान लिखना कालिका का ॥

यदि न हो पूजा कि,

बीड़े और भी बलिदान दे दो ।

माँ मुझे बरदान दे दो ॥

राष्ट्र को दे दो तुधा.

जितने अमर हो जाये प्राणी ।

गूँजने लग जाय क्षिति से.

नभ ब तलक घिर अमर वाणी ।

उस अमर वाणी के हृदय में.

विश्व का भगवान दे दो ।

माँ मुझे बरदान दे दो ॥

x

x

x

x

"इस भूख को कुछ देजा,

ओ । चादी सोने वाले"

मेरी किस्मत आज अकेली,

टुकड़ों से करती अठेली ।

पीने वाले पीते होंगे -

हम हैं खोने वाले ।

ओ चाँदी सोने वाले ॥ ६

जग ने कितने पाप कमाये ।

जग ने कितने सुन धहाये ।

रंगी हुईं बूनी दुनियाँ को,

हम हैं धोने वाले ।

ओ चाँदी सोने वाले ॥

गवान -सबा को जन्मोत्सव है,

हधर दीन का मरणोत्सव है ।

दर दर ये कंगाल मटकते,

बाली होने वाले ।

और चाँदी सोने वाले ॥

x

x

x

x

x

"बन्दी की होली क्या है ?"

कितनी दीवारों के भीतर,

कितने तालों में रहता हूँ ।

"पीर पराई" कितने जानी,

अपनी ज्वाला में जलता हूँ ॥

होगे जीवन और जवानी,

कैसे दरिधा और खानी ।

अब वह बातें भूल चुका,

मैं राजा था, थी मेरी रानी ॥

तपस्याद कभी पहचान सका ?

बुलबुल की खोली क्या है ।

बन्दी की होली क्या है ? ॥

वही तलवा और कटोरी,

हे मेरे निश-दिन के तंगी ।

फटी कमरिया ही तब कुछ है,

भूल गया मैं रंग बिरंगी ॥

बीठ रही घबकी के स्वर में,

अब सीमा की याद न आती ।

रौने वाले की कस्मा में

मेरी स्वर लहरी लहराती ॥

मैं न अभी पहिचान सका,

मेरा हम जोली क्या है ।

बन्दी की होली क्या है ॥

तुन्ना हूँ होली का दिन है,

किन्तु मुझे विश्वास कहाँ है ।

किसके हृदय में रंग छलकेगा -

रानी का मुह हास कहाँ है ॥

अरे ! यहाँ वह राग नहीं है,

मरनी थी वह बाग नहीं है ।

जो कसन्त छिड़का करता था,

अब वह मधुर पराग नहीं है ॥

यह तुना जीवन भूल चुका,

माथे की रौली क्या है ?

बन्दी की होली क्या है ॥

“गौंधी की गाड़ी”

धीरे -धीरे चली जा रही , है गौंधी की गाड़ी ।

धीरे -धुरी पर धैर्य, क्षमा के हैं दो चक्र तजार,

इन्द्रिय -निग्रह, जुबा, अटल-प्रण मन दो बृधम जुटार ।

विद्या और बुद्धि की दोनों बाग डोर ले कर मैं,

आत्म बुद्धि का कोड़ा ले कुदे संसार समर में ॥

लिय हृदय में सत्य -सत्य के भीतर मरी अहिंसा ।

अपनी रक्षा हेतु अहिंसा ने कब त्यागी हिंसा ॥

वधों कि चक्र गति और खुरों से मर जाते कुछ प्राणी ।

मानव-हित पर कीट-मृत्यु की बलि है तुच्छ कहानी ॥

दिनकी पल्लव विराम न लेना अभी दूर है डाँडी ।

धीरे - धीरे चली जा रही है गौंधी की गाड़ी ॥१॥

घूम चक्र काल भी घूमा बनी भाग्य की रेखा

घूम उठे परमाणु सितारों को हलचल में देखा ॥

दिया सूर्य ने तेज चाँद ने अमर तुषा बरसाया ।

नये बने दिन-रात मानवों ने नवजीवन पाया ॥

मुदठी भर हड्डी का ढाँचा शस्त्र बिना कर खाली ।

चला दनुज का दुर्ग तोड़ने लोग हँस दे ताली ॥

पर दधीचि के अस्त्रि-बज्र से वृत्त नहीं बच पाया ।

जल, थल और गगन में माया जाल नहीं रच पाया ॥

देखे कब तक छिपा सकेगी यह नफरत की माछी ।

धीरे - धीरे चली जा रही है गौंधी की गाड़ी ॥ ४२॥

जब तेरी आँखें तात हुई,

दुनियाँ भर में लग गई आग ।

तेरी आँखों से निकल पड़े,

काले-काले विष भरे नाग ॥ ३३॥

जल में, धूल में, नम मण्डल में,

हे चीत्कार, हे चीत्कार -

जब मैं तेरी गरम उतालों से,

निकली मर-मर या मार-मार ॥ ३४॥

झूकरी प्रसक्ती तात पाँव,

घूरों पर चरते फिरते हैं ।

गिदड़ा के गीदड़ भी लाठी -

वन - वन में छिपते फिरते हैं ॥ ३५॥

तिंहीनि जन्ती है एक शेर,

जिसकी दहाड़, जिसकी पछाड़

जिसकी थापों से गिर पड़ते,

मज मस्तक अति उंचे पहाड़ ॥ ३६॥

हम प्रहार उसकी कहते हैं,

पर्यंत में होकर पार जाय -

हे वह ही सच्चा राजपूत,

जो लाठी में कर वार जाय ॥ ३७॥

हे उसकी माता पुत्रक्री,
जो खुद मरकर भी मार जाय ।
मल्लाह पही जो खुद तर कर,
तारे धेड़े को तार जाय ॥ १८॥

जिसमें न कभी तूफान उठा,
वह जीवन और जीवनी क्या ।
जो चट्टानों में रोक लिया,
वह दरिया और रवानी क्या ॥ १९॥

जब ईश्वर जिनको दुनियाँ को नालों में,
ऐस दिखे में पानी क्या ।
तुनकर न मुँह पर हाथ पड़ा,
तो कवि की वाणी-वाणी क्या ॥ २०॥

जिसमें न निशाँ ही गोली का,
उस नर का सीना सीना क्या ।
दुनियाँ में जिसका भान नहीं -
गीदड़ का जीना जीना क्या ॥ २१॥

जब विश्व के प्याले हों आगे -
पानी का पीना पीना क्या ।
तुनकर न जिते मस्तों आस -
तन्त्री को दीना दीना क्या ॥ २२॥

जब तेरी आँखों के आगे -
 तेरा ही भाई जलता हो ।
 फिर भी न तब ते लड़ने को,
 पत्थर का हृदय पिघलता हो ॥ §13§

फिर बया होगा इन प्राणों का,
 फिर बया होगा अरमानों का ।
 जब दीप बुझा आजादी का,
 फिर बया होगा परवानों का ॥ §14§

धन जोड़ - जोड़ कर बया होगा,
 भामाता ता धन वाला बन ।
 यह तो मरीर है माटी का,
 तु ताना ता तन वाला बन ॥ §15§

मत बन तु कायर का आँसु,
 तु जलता जलियाँ वाला बन ।
 राणा कुम्भा बनकर डट जा -
 तु आफ़स का पर काला बन ॥ §16§

बच्ये भाले की नौकों पर -
 तु उर में आह लिये बैठा ।
 तलवार लटकती है तर पर -
 तु कल्प कराह लिये बैठा ॥ §17§

बाहर बाहिनों की लाज लुटे -

तु घर में प्राण लिए बैठा ।

तेरी माता अपमान लहे -

तु दो भुजदण्ड लिए बैठा ॥ §18§

माता न जनेगी रोज़ तुझे -

यह दिन भी रोज़ नहीं होगा ।

तलवार उठेगी रोज़ नहीं,

यह रण भी रोज़ नहीं होगा ॥ §19§

मिलती न जवानी मित्रा में,

तलवार मिली कब माँगि ते ।

प्राणों को प्राण मिला न कभी,

यों पीठ दिखाकर माँगि ते ॥ §20§

बिन माँगि मोती मिलते हैं,

माँगी तो भीख नहीं मिलती ।

मरने को दुनियाँ मरती है,

पर रण की मौत नहीं मिलती ॥ §21§

ओ नी जवान रह त्वाभिमान

कुछ कर सम्मान जवानी का ।

तलवारें प्यासी मरती हैं,

फिर क्या होगा इस पानी का ॥ §22§

वह पानी ही बया पानी है,
गन्दी गलियों में पड़ता ही ।
वह नौ जवान ही बया जितके,
तीन से छेँ , न टपकता ही ॥ §23§

वह बून नहीं पानी है,
जितको गीदड़ पी जाते हैं ।
वे अछू नहीं हैं पानी ,
डर के मारे टल जाते हैं ॥ §24§

जिन्ना साहब की हस्ती बया,
जो पाकिस्तान बना लेते ।
भारत के टुकड़े टुकड़े कर -
दुश्मन भेतान बसा लेते ॥ §25§

यह तो तेरी कमजोरी थी,
बैठ गया हिन्द आसानी से ।
तुझ को कलंक बुद धोना है,
अपनी कृपान के पानी से ॥ §26§

अब भगतसिंह भेखर जैसे,
कुछ घेस कीमती लालों की ।
माता को आज जरूरत है,
आजादी के मतवालों की ॥ §26§

जिसकी रक्षा में राना ने,
 तिनकों की रौटी खाई थी ।
 जिसकी रक्षा में नाना ने -
 भारत में आग जगाई थी ॥ §28§

वीर शिवाजी ने जिसके,
 परणों में शीश धकाया था ।
 हँस - हँसकर जिस बलिघेदी पर,
 बँदा ने शीश चढ़ाया था ॥ §29§

यह अन्न तुम्हें भारत माता ने,
 इस दिन के लिए खिलाया था ।
 हर रोज हिमालय की बेटा -
 गंगा ने नीर पिलाया था ॥ §30§

भारत माँ ने तेरे नीचे,
 यह कोमल धूल बिछाई थी ।
 तेरे होठों को चूम-चूम,
 जो मधुर तुषा बरसाई थी ॥ §31§

हे कमल काल के हाथों में,
 इतिहास उमै ही लिखना है ।
 तुमको तो अक्षर बनकर ही,
 आजाद बदन में लिखना है ॥ §32§

अब तोड़ो ज़ादी का कंगन,
 कंगन बाँधी सम्बन्धी का ।
 कोमी दीवाने बढ़े चलो -
 पैगाम लिये आजादी का ॥ ३३॥

- - - - -

“सीमा संघर्ष पर राष्ट्रीय धेतना”

अब क्या और पिये हम कितने -
 विश्व के घूँट पिये बैठे हैं ॥

तुमने मन में सोचा होगा,
 दूना है विस्तार तुम्हारा ।
 दुने हाथ, कंठ, पग, दुने -
 दूना है परिवार तुम्हारा ॥
 तुम्हें कितनी निर्दय दानव ते,
 निरुद्ध प्रेरणा मिलती रहती ।
 शेतानी बसती है उलझी -
 डोर तुम्हारी हिलती रहती ॥

हमको शपथ महामानव की,
 कर तल शीश लिये बैठे हैं ।
 अब क्या और पिये हम कितने -
 विश्व के घूँट पिये बैठे हैं ॥३४॥

हे मरजाद महा-मानव की -
 हमको तुम मजबूर न समझो ।
 आसानी से निगल सकोगे,
 ये मीठे अंगूर न समझो ॥
 वीर प्रवेश कर सकें घर में -
 ऐसी काली रात नहीं है ।
 तोहा लेना भूल गये हम,
 ऐसी कोई बात नहीं है ॥

फिर भी आज न जाने क्यों हम
 म्यान कूपान किये बैठे हैं ॥
 अब क्या और पिये हम कितने -
 घिब के घूँट पिये बैठे हैं ॥ १२॥

तिब्बत के बड़े ताजे लोह में,
 रंग हुए हैं हाथ तुम्हारे ॥
 इधर ज्ञान्ति के दुर्ग बंधन में,
 बंधे हुए हैं हाथ हमारे ॥
 हिन्दी चीनी भाई-भाई,
 किन्तु न दो दिन प्रीति निभाई
 सोते भाई की गर्दन पर -
 भाई ने तलवार उठाई ॥

रोक रोक इन मुजदगहों को
 दिल के घाव सिये बँठे हैं ।
 अब क्या और पिये हम कितने
 दिव के घूँट पिये बँठे हैं ॥ १३॥

माना तुम आगे हम पीछे,
 पर दोनों की राह एक है ।
 मंजिल तक पहुँचाने वाली,
 मन के भीतर याह एक है ॥
 पीछे मुड़कर पीट करी मत ,
 नशा नहीं अब होना सँभालो ।
 अपनी फिर करो बचने की,
 मेरी तरफ निगाह न डालो ॥

भूल गया दुस्तानों की,
 हम भगवान दिये बँठे हैं ।
 अब क्या और पिये हम कितने
 दिव के घूँट पिये बँठे हैं ॥ १४॥

x x x x

"तीन - मुकतक"

अगर तन पे बन जाय तो धन निकावर,
 प्रतिष्ठा अगर जाय तो तन निकावर ।
 धन पर अगर कोई आस मुसोबत,
 तो तन भी निकावर औ धन भी निकावर ॥

x x x x

जिन्दगी आई अमन के वास्ते -

मौत आई है कफन के वास्ते ।

श्रु सीमा पर चुनौती है दे अगर तो -

जिन्दगी औ मौत दोनों है वतन के वास्ते ॥

x x x x

हमें अब अपने पैरों के सहारे चाहिए,

अपने ही तारों पे अपने दिन गुजारे चाहिए ।

मौंगना अच्छा नहीं यों तिर हुआ हथियार गैरों से,

हमें तो अब जवानी और हिम्मत के दुतारे चाहिए ॥

गजराज सिंह "सरोज" उद्बोधन, । - 77

xxii

पेच गजराज सिंह "सरोज"

मजलूम यहाँ से बचकर चल, ये धनवालों की नगरी है ।

इस बेमव के अन्तर में भी कोई सह-सहकर घोर शीत ।

कटु दुधा पिपासा से पीड़ित या जिसका जग में नहीं मौत ॥

ना जाने कब से चला गया नव रचना के अरमान छोड़ ।

प्यारे परिवारी स्वजनों से अपने निज के सम्बन्ध तोड़ ॥

हे कोई पन्थी मूल गया ये गठरी है या ठठरी है ॥ १॥

टल-टल कर तेरा सुधा कलश इस चन्द्र मुखी का चाँद बना ।

सारी बुझियाँ मधु मुस्काने मिट-मिटकर ये आल्हाद बना ॥

तेरी फुल बगियाँ अब उजड़ गयी उनका नन्दन आदान बना ।

तेरी कुटिया पर फूस नहीं उनका ऊँचा प्रसाद बना ॥

हे तू कर पात्री और वहाँ चाँदी सोने की नगरी है ॥ २॥

उनके कुत्ते बिल्ली भी तो घोंदी के टब में नहाते हैं ।

हे तुझको घास नतीब न , ये माछन मिथी ठुकराते हैं ॥

जब बालाओं के मुद्दल कमल उनके अंगों को सहलाते ।

तब तेरे जिगु मूँछ रहकर कंकड़ काँटों पर तो जाते ॥

यदि धर्म तुला पर तोले तो ये रो रब से कुछ उगरी है ॥ §3§

तेरे ही भ्रम निकलवाकर ये विद्युत दीप जलाये हैं ।

तेरे ही भ्रम के रवेत बिन्दु मणि मुबता बन नहराये हैं ॥

तेरे ही प्रोषित से उनको सुन्दरियाँ मणि मरती हैं ।

तेरे ही प्राणों के बल पर उनकी कुछ साँस चलती है ॥

हे तेरी दुनियाँ नग्न और उनका संसार तुनहरी है ॥ §4§

तेरी आँखें मुझ युकी और उनकी कड़ों पर दीप जले ।

घेरी बुझियाँ मिट गयी मगर उनकी तुच्छता पर फूल खिले ॥

हैं तेरे पहलु पीर मेरे उनके पहलु में परियाँ हैं ।

हे उनके कर में राजदण्ड तेरे हाथों में हथकड़ियाँ हैं ॥

तेरी सचयी फरियाद और उनकी घेदाद कयहरी है ॥ §5§

x x x x x

स्वः श्री गजराज सिंह "सरोज" जी ने इस रचना के माध्यम से जनता में अंग्रेजी शासन का जो दुर्व्यवहार हिन्दुस्तान के अन्दर था उसका वर्णन किया है हिन्दुस्तानीयों को हर तरह से मुहताज रखा जाता था इसके अलावा जो कीमती वस्तु थी उन सबका इस्तेमाल खुद करते थे तथा इंग्लैंड भेजते थे वहाँ की जनता भूखी, नग्न और तड़फ - तड़फ कर जी रही थी ।

गजराज सिंह "सरोज" अप्रकाशित कृति ।

4-8 रव) श्री पण्डित टक्कन लाल शर्मा : काव्य रचना

"किसान राज की कल्पना"

न तो गनिकन के ही रहेंगे अटा, न जटधारी ढोंगी यहाँ प्यरेंगे ।

जमींदारी प्रथा की बुलेगी धता, और सामन्तशाही के पंथ जरेंगे ।

तेरे न तूद की मुँद बढ़ाहें, बँक तिजोरी न नीट भरेंगे ।

"शर्मा" सब कष्ट मिटेंगे तभी जब देश पे राज किसान करेंगे ।

दीन के खूनरें घृति के शीपक जोश की ने भाँति नहीं सतरेंगे ।

छाय के घुँसन फूलिगे सुँसिते, साहब और पेन्नकार डरेंगे ।

अंगरेजन के लट्ठआ टट्टआ, राघ खान सिताव न दृष्टि परेंगे ।

"शर्मा" सब कष्ट मिटेंगे तभी जब देश पे राज किसान करेंगे ।

x x x x x x

बगावत का सन्देश

तेरी ताकत है बहुत बढ़ी, भूमण्डल थरा जायेगा ।

आसन होंगेगा माहों के, जिस दिन हुँकार लगायेगा ।।

हन गढ़ किलों और महलों में, सम्नाटा सा छा जायेगा ।

अंग्रेजों से तु असहयोग का, जिस दिन बिगुल बजायेगा ।।

तु मासिक अपनी भूमि का है, हरगिज मत देय लगान जाग ।

भारत के वीर किसान जाग ।।

इन बीब के ठेकेदारोंन, तुझको निजीब बनाया है ।

तेरे बीबी और बच्चों के मुख पर प्रतिबन्ध लगाया है ।

तुझे गरीबी का कारण, ईश्वर की देन बताया है ।

शर्मा तु लगान बन्दी का, कर गाँव-गाँव एलान जाग ।।

भारत के वीर किसान जाग ।।

जेल पचासा

क्यों करता है बन्दी तोय प्यार रे इस जेल में ।
 कैदी है क्या हुआ देश भारत का तो तु प्यारा है ।
 जननी जन्म भूमि पर तुने सब कुछ अपना धारा है ।
 स्वतन्त्रता देवी तेने का तुने दृढ़ प्रत धारा है ॥
 यह स्कूल परीक्षा का है समय इसको कारा है ।
 शेर कठोरे में दहाड़ता बिल पर रोष तयार रे ॥
 कटवी और कितमिती रौटी हँसते हँसते खाये जा ।
 लड़े हुए पत्तों की भाजी खायेजा हर्षाये जा ॥
 दो फिट चौड़े दूले पर तु मुँज का फाँ लुछाये जा ।
 तस्ते के तकिये पर तिर धर तारा जित्तु बुजाये जा ॥
 मच्छर, कटमल, जुओं से कर प्यार रे इस जेल में ।

x x x x x

देक-मवित्त

हिन्दू, मुस्लिम, सिख एक रहें, बापू की बात यह काम की है ।
 मन्दिर, मस्जिद पर लड़ना बया, यह जगह खुदा और राम ही है ॥
 गुरु ग्रन्थ, कुरान, पुराणों का श्रद्धापूर्वक सम्मान करो ।
 यह उँच नीच का चक्कर भी दूँगा है मन में ध्यान धरो ।
 हम सभी भारतीय भाई हैं, यह हाव उठा शैलान करो ।
 तरकार प्येदबी नहीं रखनी, सब मिलकर यह गान करो ॥
 मजहब के दीवानो तोची, बया होती कौम गुलाम की है ।
 मन्दिर, मस्जिद पर लड़ना बया, यह जगह खुदा और राम की है ॥

भाई-भाई को लहवाकर, कर रहे हकूमत मुदौी भर ।
 कंगाल बनाकर भारत को, धनवान बनाया मान्यतर ॥
 टाँके के पीग्य जुलाहों के, हाथों के अंगूठे लिए कतर ।
 जो पूरा मतमल धान सक, सुन बाँत नली में लेते धर ॥
 मुहताज तुझ तक के हैं हम, जो होती नहीं छदाम की है ।
 मन्दिर, मस्जिद पर लहना क्या, यह जगह खुदा और राम की है ।

असुरों के प्रति

सच्चे समाज के सेवक हैं, क्यों कहते इन्हें असुर हैं ये ।
 अपने हैं इनको अपनाओ, भारतमाता के पुत्र हैं ये ॥
 जो लोग गन्दगी करते हैं, वह तो उधे कहलाते हैं ।
 जो नित्य तफाई करते हैं, वह भीवा दर्जा पाते हैं ॥
 ब्रह्म बिन्दु बहाकर जो अपने क्षेत्रों में अन्न उगाते हैं ।
 बेगारी कहलाये जाकर अनखाये ही रह जाते हैं ॥
 सहकर सब कुछ, कुछ कहे न ब्रह्म - सेवा के सच्चे दूत हैं ये ।
 अपने हैं इनको अपनाओ, भारत माता के पुत्र हैं ये ॥

--

निरंजनलाल "सदो" पादों की अंजुरी में ब्रह्मा के पुत्र, 43 - - 46.

4-9 स्वामी श्री नवाब सिंह चौहान

"बुझा न दीप प्यार का"

"उद्बोधन"

सुरभित हो संसार पुल बनकर बागों में फूली,
 इतने औं उठी कि जाकर उच्च गगन की छली ।

धैर्य बढ़ाओ प्रेम प्रीति की धूम-धूम कर दूँ लो,
 किन्तु मैं भूलै भी अपनी भारत माता को भूलो ।
 उठो जीव ते अँगड़ाई ते अपनी ओँखें खोलो,
 मुरझाये प्यासे प्राणों में प्रेम सुधा रस धोलो ।
 भ्रम के पावन भुवि सीकर ते मन के धब्बे धोलो,
 दुका नीम ब्रह्मा ते भारत माता की जय बोलो ।

x x x x x

उठ - उठ भारत के नौजवान

कट गई दासता की रजनी, हो गया, तुम्हें स्वर्णिम पिहान ।

व्याकुल कलिकाएँ मुत्काई,
 मद-मत्त हुए हैं दिये फूल ।
 किसकी बाँटे किस पर जाये,
 हो गया भ्रमर भी दिशा-भूल ।
 भर गया ओस-मुक्ताओं से,
 सुन्दर हरियाली का दुकूल ।
 बढ़ चली लताएँ लटक-लटक,
 तेरे जननी की वरण धूल ।

हँसती-हँसती आ आई, हो गया गुलाबी आसमान ॥ ११॥

रंग गई सुनहरी रंगों से,
 सब प्राची की प्राचीर है ।
 किरणों के कुंतल जालों में,
 कुछ उलझी हुई समीरें हैं ।
 प्यासे प्रेमी को मिली आज,

जीवन जल की जागीरें हैं ।

किंच गह्र निराशा के नभ में,

आशा की ललित लकीरें हैं ।

उर की वीणा पर झंकृत हैं, मादक भगवत्-मय सुखित-गान ॥ १२॥

तम गया और प्रगटा प्रकाश,

चल दिये पकैरु नीह छोड़ ।

हैं नाच रहे मंजुल मयूर,

गर्वित ग्रीब को मोड़ -मोड़ ।

हैं मान भरी मुगियाँ खाली,

धीरे-धीरे तुष तोड़-तोड़ ।

तौन्दये-तुधा रस पीने को,

प्यासे नयनों में लगी होड़ ।

जीवन के झटके खा खाकर, तन उठी आज जर्जर कमान ॥ १३॥

कतरव करता वह घला आज,

सरिताओं का उच्छ्वसित भीर ।

तो गह्र निशा धारण करके,

हे चन्द्रकला का चारु भीर ।

उपजा हृदयों में विमल प्रेम,

कर गह्र प्यथा मिट गह्र भीर ।

कण-कण को रंजित करता है,

गिरता गुलाब उड़ता अभीर ।

कारा के मुक्त कपोलों ने, हे भरी आज उंची उड़ान ॥ १४॥

उठ-उठ आदर की ओँखों ने,

तु मुक्त जननि का देउ हाल ।

हे धाव हरे पद-पदमों के,

हाँ दूट गई कड़ियों करान ।

हे भाव-मग आकुल -उमंग,

सु प्रमित और मयभीत माल ।

तुझ को संतप्त तरीयर हे,

मुरझाया सा मानव-मराल ।

हे आँकड़ों का आँखों में उददाम उदधि लेता उफान ।। १५१

उठ ताहत का तबल लेकर,

आगे पथ हे कंटकाकीर्ण ।

तदियों के जीव्य दोहन से,

तारा तमाज हे जीर्ण जीर्ण ।

हो गया विधमता पावों से,

हे मानवता का उर विदाम ।

हे निर्धनता का नग्न नृत्य,

तब कूट विकृत विघटित विकीर्ण ।

अमृत की उज्ज्वल आशा में करना हे तुझको गरल पान ।। १६१

हे आज राउ की टैरी से,

निर्मित करना उद्यान तुझे ।

नत नत में निर्बलताओं की,

भर देना हे तुफान मुझे ।

बढ़ना हे तुझको द्रुत-गति से,

करना हे निज क्षतिदान तुझे ।

ते चुका बिजलियों ते टक्कर,

क्या रोकेगी चढ़ान तुझे ।

करना है भ्रम की छाया में, मानव पवित्र मानव महान ॥ ४7४

है त्याग तपस्या ते रचना,

ऐसा अद्भुत तैत्तार नया ।

हो जहाँ जीव के जीवन की,

गति नई और आकाश नया ।

हो जहाँ व्यवस्था में विकास,

विधि नई और व्यवहार नया ।

हो जहाँ राज तुव का अनंत, सब हो समृद्ध सब हो समान ॥ ४8४

x x x x x x x

"बहीद भगतसिंह"

जन्म जहाँ अनेक छानी बलिदानी गुर,

रक्त बही और बही धरणी का कोना था ।

प्रगटा वहाँ था एक वीर पुतधारी वरत,

जितते आ उदय माल भारत का होना था ।

पुत्र के समान दुद्र कुटिल कुयालियों को,

प्रेमियों को किन्तु मित्र कोमल सलीला था ।

आग तप त्याग की ये तप के हुआ पवित्र,

ऐसा, झुचि स्नेह की सुगंध-युक्त सोना था ।

x x x x x x x

"कैसा बसन्त कैसी बहार"

सो गये प्राण, रो गये नयन, सुन भारत माता की पुकार ।

कलिकार्थे वयों मुसकाती हैं,

वयों हँसते हैं यह निरुर फूल ।

लख कुम्हलाये बच्चों का मुख,

भैं जानता हूँ सब इन्हें भूल ।

कोकिल का मधु कृजन कैसा,

हे दुःखी हृदय की चीत्कार ॥ कैसा - - - -

कैसी सुगन्ध कैसा सुन्दर,

कैसी उत्की सुन्दर समीर ।

बधा करे प्यार जिस उर में हो,

भूखे प्यासों की अकथ पीर ।

वयों मन में आ आकर उमंग,

यों छोड़ रही है बार - बार ॥ कैसा - - - -

जब भारत को हो मेरा समूह

उत दम तुम फिर आना बर्तत ।

पावेगा तुमको घर घर में

उत्साह और आनन्द अनंत ।

तुम हो जाओगे धन्य बन्धु,

पाकर के सबका विमल प्यार ॥ कैसा - - - -

x

x

x

x

x

"धन्य-वीर"

पढ़ पढ़ पंडित हुआ तो कौन बात हुई,

देख रहे तोता मैना भी पढ़ जाते हैं ।

क्या हुआ भरा जो रहे धन ते कुबरे - कोष,

जिसमें कि दुखियों के प्राण कट जाते हैं ।

क्या हुआ जो कुंभकर्ण जैसा तन पाया तुने,

विषय-विषम जिसमें कि बढ़ जाते हैं ।

देख धन्य हैं वे वीर जो कि निज देश हित,

शूली पर झर ते समोद बढ़ जाते हैं ।

x x x x x x

"बढ़ता चल कौमी दीवाने"

तेरा स्वागत देव किया है,

झुक झुक कर डाली डाली ने ।

प्रेमामृत दे डाला कुत्र हो,

तुझको अँखों की प्याली ने ।

तब पथ पर गुलाल बरसाया,

विहँस उषा की प्रिय लाली ने ।

सुरमित तुमनों ते डा डाला,

वन उपवन की वनमाली ने ।

धुन माता की हार बना ते,

बिखरे हैं जवनम के दाने ।। बढ़ता चल - - - -

कारागृह में बन्द पड़ा है,

फिर भी है तु निधि निधन की ।

ताहत लख जरमा जाती है,

शैकाथें सब तेरे मन की ।

प्राणों में है जागृत ज्वाला,

नयनों में झड़ियों तावन की ।

लगी हुई तुझ पर है कब से,

उत्सुक आँखें हैं जन जन की ।

मिला कीकिसा ते स्वर अपना,

गाता चल स्वदेश के गाने ।। बढ़ता चल - - -

जाने कितने आशाओं में,

प्रलयकर अरमान भरे हैं ।

मन में माता की स्मृति है,

उर के तेरे धाव हरे हैं ।

पेश वियोगी का है तेरा,

जबेर वस्त्र केम बिखरे हैं ।

बड़े भाव जो गौरव गिरि पर,

झूले भी न कभी उतरे हैं ।

छलक उठे हैं पुरित होकर,

तेरे पुण्यों के पैमाने ।। बढ़ता चल - - -

क्राहित है मादक मुत्कामें,

अधरों पर हल्की हल्की सी ।

नवल नयन भीगे ते हैं,

है आँसू की गगरी छलकी सी ।

पीवन की उमंग की आभा,

उज्जवल है नम-निर्मल की सी ।

अटल साधना साध रहा है,

धक्कल प्रबल ध्रुव-निश्चल की सी ।

अपने को खींचकर निकला है,

देश प्रेम की निधि को पाने ॥ बढ़ता चल - - -

सागर की लहरों से लड़ता,

टक्कर लेता तूफानों से ।

निर्बल पर बलि देता अपनी,

लोहा लेता बलवानों से ।

आनन के श्रम-बिन्दु पीछता,

पुण्य पवन के परिधानों से ।

जाता है तू हुआ सुतज्जित,

विप्लव के सब सामानों से ।

तू अमृत्यु मणि है स्वदेश की,

तुझे पारखी ही पहिचाने ॥ बढ़ता चल - - -

जाते दम भी निकल रहे हैं,

तेरे स्वर मुख से स्वर भीने से ।

मुत्तयु मनीरंजन है तेरा,

खेल रहा है तू जीने से ।

वह अमरत्व मिलेगा तुझको,

मिला न जो अमृत पीने से ।

लगा रहा है प्रमुदित होकर,

कुली को अपने सीने से ।

तेरे बलिदानों को लखकर,

तज्जित होते हैं परवाने ॥ बढ़ता चल - - -

धन वाला समझें कैसे,

निधन ही समझे निधन की ।

धिरहिन ही समझे चौंटों को,

जीतल मंद-तुंगध पवन की ।

हे सपूत ही अनुभव करता,

पीड़ा माता के बन्धन की ।

रमेही उर में ही होती है,

उज्ज्वल आभा अपनेपन की ।

जिस पर पड़ती है विपदा आ,

उसका हाल वही बत जाने ॥ बढ़ता चल - - -

तेरी मंजु मधुर मस्ती पर,

तभी सिद्धियाँ बतिहारी हैं ।

तेरे अंगों को जगपति ने,

अथक उमंगें उपहारी हैं ।

धूम रहे हैं तब चरनों को,

बेड़ी के बन्धन भारी हैं ।

हाथ जोड़ती हैं हथकड़ियाँ,

मुग्ध देख तब तंतारी हैं ।

तब अर्पण को निर्मित की हैं,

तारक माला निर्दिष्ट निशा २ ॥ बढ़ता चल - - -

तु अनंत की ओर चला है,

भ्रमंडल में धूम मचाता ।

मानस मानसरोवर में,

आका के सुन्दर कमल खिलाता ।

नवयुवकों को साहस देता ,

नवयुग का तन्देश सुनाता ।

तुम पर ही भविष्य निर्भर है ,

हे भारत का भाग्य विधाता ।

जाता है जा वीर बधाई ,

जा तुरपुर में ज्योति जगाने ॥ बढ़ता चल - - -

x x x x x x

“ भारत माता के सपूत ”

बढ़कर दुश्मन पर बार कर

चढ़ जा तु दुष्टों के ऊपर, हट - हट कर हूँकार कर ।

आज बज उठी है रेण-भेरी, लीना क्या आराम क्या ।

बढ़ना है आगे ही आगे स्कना क्या, विक्राम क्या ।

टकराना है चट्टानों से, अब हटने का काम क्या ।

माता के गौरव के आगे जीवन क्या धनधाम क्या ।

सज्ज समान दृढ़ पर, रिपु पर, जननी का उद्धार कर ॥ भारत - - -

तेरी झुकुटी के तन्त ही, आ जाता भूयाल है ।

गिर जाता है अम्बर नीचे, उठ जाता पाताल है ।

प्राणों पर बलि देने वाला, तु ही सच्चा लाल है ।

सदा रहा भारत माता का, तुझसे उँचा भाल है ।

लगता है कैसा प्यार केशरिया बाना धार कर ॥ भारत - - -

बरसेगी बिजली जब तेरी, तलवारों की धार से ।

बच न सकेगा कोई बेरी, इनके तीखे बार से ।

भागैगा दानव दल तारा, धबड़ा करके मार से ।

गूँज उठेगा भ्रमण्डल, वीरों की जयजयकार से ।

पोस्व का परिचय दे इसका, अब मत सोच विचार कर ॥ भारत - - -

श्री नवाब सिंह बोहार, बुझान न दीप च्यार का, 94

• ओ देश प्रेम के मतवाले •

तेरे उर में अभिलाषा है,

तेरी आँखों में पानी है ।

निज प्राण निछावर करना ही,

बस तेरी राम कहानी है ।

हे दिये माग्य ईश निर्माता ने,

तुझको केवल पुरियाँ भाले ॥ ओ देशप्रेम - - -

तेरी चालों में मस्ती है,

ब्रह्म तन पर वियोग का बनाना है ।

हे कौन दिव्य देवी जिस पर,

तु बना वीर दीवाना है ।

तय बता किस लिये पढ़ने हैं ,

तुने कर में कंकन कानि ॥ ओ देश प्रेम - - -

केसर है बया यह मली गई,

पड़ गया रंग क्यों पीला है ।

यह नीलम अंगों पर जड़ना,

कुत्तिल कीड़ों की लीला है ।

मुख पर मुसकान बनी कैसी,

है तेरी जिष्ठा में छाले ।। ओ देश प्रेम - - -

बलिबेदी पर बलि देने की,

तु आगे बढ़ता जाता है ।

तिर की गर्वोन्नत किये हुए,

कुछ गुन गुन गाता जाता है ।

बया छम छम करता जाता है,

पावों में झर पाजिये डाले ।। ओ देश प्रेम - - -

स्क जा आरती उतारेगी,

वह आती है उभा बाली ।

रोली के रंग में रंजित है,

हाथों में दिनकर की बाली ।

वह कहती आती है पीछे,

ले कर्मवीर बीड़ा खालें ।। ओ देश प्रेम - - -

ओ धुन के धनी धन्य है तु,

है धैर्य धन्य तेरा प्यारे ।

तुझसे ही नर बन जाते हैं,

माता की आँखों के तारे ।

जल्लाद बुलाता है तुझको,

जा वीर अमर पद की पाले ।। ओ देश प्रेम - - -

"स्वदेश पर मरने का अरमान"

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ।

मैं अंधरों पर विप्लवकारी मुस्कान लिये फिरता हूँ ॥

सर से रुफन बाँध निकली भारत वीरों की टोली ,

लगा रही जिनके मस्तक पर बहन रक्त की रौली ।

हैंस हैंस बाईं आज जिन्होंने हे सीने पर गोली ,

मरते दम भी जिन वीरों ने भारत को जय बोली ।

मैं ऐसे वीरों का उर मैं सनमान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

चले धुमले हैं नाहर से तरकज तीर तैमाले ,

लय-लय करती हैं तलवारें घम-घम करते भाले ।

देश प्रेम की मदिरा से है जिनके मन मतवाले ,

रहेह -सलिल से छल-छल करते हैं नयनों के प्याले ।

मैं जिच्छा पर उनके गौरव के गान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

उफन पड़ा सहसा भर करके आज जीव का प्याला ,

ज्वार उठा है जीवन में प्राणों में धधकी ज्वाला ।

अंधकार हट गया गगन में छाया अमित उजाला ,

देख रही है बाट जधानों की , रण में जयमाला ।

मैं निःश्वासी मैं प्रलय और तुफान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

आता है जिनकी मिटकर मानव हृदयों को हरना ,

पथ भूलों को बलिदानों के जादू से घुड़ करना ।

झरता जिन पर है निमिषांतर प्रेमासूत का झरना,

झेते नर नाहर पाकर के रिपु ते कैता डरना ।

मैं इनके लिए देश भर का बरदान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

तोते भरों को यदि कोई आकर झुकायेगा

मिट जायेगा दुनिया से, वह पीछे पछतायेगा ।

कौन हमारे तन्मुख आ, बल-पीरुष दिखलायेगा,

पूर पूर हो जायेगा जो हम से टकरायेगा ।

मैं अहिम हरादों की ऐसी बदतान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

मार्ग रहा बलिदान, देश का मिट्टी का कण - कण है,

हे पुकारता बली तुम्हें बुरों, सीमा का रण है ।

रखना है आजाद देश की यह वीरों का प्रण है,

मातृ-भूमि पर सब कुछ अपना तन मन धन अर्पण है ।

मैं प्राणों में प्यारा गीता का ज्ञान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

जहाँ बु. गाँधी अकतारे नानक ते गुरु बानी,

राजगुरु तुखदेव भगततिह ते अनेक बलिदानी,

जिवा और राजा प्रताप नेताजी ते तेनानी,

झौंसी वाली रानी जैसी तुमट बुर मरानी ।

मैं घर घर में मोती लालों की खान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

कतना रोष उमड़ आया है भारत के जन-जन में,

गमी है बढ़ गई आज हिमगिरि के भीत पवन में ।

हे किसकी अब ताब रहे जो माता की बंधन में,

फहरायेगा तदा तिरंगा उड़कर दिव्य गगन में ।

जो झुक न सका है मैं भेता अरमान लिये फिरता हूँ ।

मैं प्रिय स्वदेश पर मरने का अरमान लिये फिरता हूँ ॥

मैं अधरों पर विप्लवकारी मुस्कान लिये फिरता हूँ ॥

x x x x x x x x

"आज नया तुफान उठा है"

आजादी की अँगड़ाई से,

सीता हिन्दुस्तान उठा है ।

जाने कब से सीते सीते आज अचानक झुक उठे हैं,

जहमी दिल के ताजा टाँके आज जोड़ में तड़क उठे हैं ।

चूटे कमरों पर है जिये चूटे खंजर खड़क उठे हैं ,

गिरते पड़ते पठते बादल आतमान में कड़क उठे हैं ।

फड़क उठे हैं बाजु फिर से,

धूल में एक उफान उठा है ॥ आज नया - - -

बजा बिगुल आगे बढ़ने का बीत गई है रातें काली ,

सीते हुए तिपाही जागे अंबर में छाई है लाली ।

सुखी धरती की रग रग से उठी उमड़ कर है हरियाली ,

हवम हवाओं से क्या पाया झुम उठी है डाली डाली ।

अरमानों की ओंधी दिल में,

लेकर हँसान उठा है ॥ आज नया - - -

बचपन और बुढ़ापा जागा और जगी है आज जवानी ,

चट्टानों से सरने फूटे दरियाओं की बढ़ी रवानी ।

देने लगे पतंग जुड़ मिल हँस - हँस दीपक पर कुर्बानी,
ज़र्रे ज़र्रे के मुँह पर हँस करो - मरो की आज कहानी ।

होने को कुर्बान वतन पर,

ले शमशिर जवान उठा है ॥ आज नया - -

उड़ते हैं आज़ाद परिदे खुली हवा में पंख पतारे,
घारों और दीब पड़ते हैं आजादी के आज नजारे ।
राह दिखाते हैं जुड़ मिलकर आसमान के झिलमिल तारे,
भूली भटकी कशती अपनी आ पहुँची है आज किनारे,

हक की आज हिमायत करने,

हम क्या उठे जहान उठा है ॥ आज नया - -

जित जालिम को देते थे हम भर भर उत्पन्न का पैमाना,
उतने ही अब रंजर मारा कैसा है बेदद जमाना ।
धोके को पहचान न पाया ऐसा है यह दिल दीवाना,
अच्छा है जो खत्म हो गया ऐसी उत्पन्न का अफ़साना ।

ठोकर खा बाकर ग़ैरत की,

अब अपना इंसान उठा है ॥ आज नया - - -

बाँध न सकती है अब हमको कभी गुलामी की जंजीरें,
देख रहे हैं आगे अपने ज़र्री कवाबों की तस्वीरें ।
कर न सकेगी कुछ अब अपना ज़ालिम की तोपें शमशीरें,
ताकत आई है बाजू में आई आहों में तात्पीरें ।

भारत माँ का बच्चा, बच्चा,

खुश हो तीना तान उठा है ॥ आज नया - - -

आज हुए हम अपने मातृक अपनी दीलत अपना घर है,

हैं तो हैं गुल आजादी से अब न इन्हें गुलामी से डर है ।
 कितना दिलकश कितना प्यारा बाग-बहारों का मंजर है ।
 मिट्टी भी आजाद वतन की तोने चाँदी से बहतर है ।

भूला भटका भारतवासी,

अपने को पहचान उठा है ।। आज नया - - -

x x x x x

"कारा में चिट्ठी की का स्वप्न"

प्यार करोगी क्या तुम बाला ।

तुम हो नव कलिका गुलाब की,

मैं हूँ एक भयंकर ज्वाला ।

याद मुझे है जब कुँजों में,

तुमको पहली बार निहारता ।

चमका था कैसा चौड़े दिन,

मध्य भाग्य का तुमग तितारता ।

कैसा था वह समय तुहाना,

जीवन क्या प्यारा प्यारा ।

प्रेम पयोनिधि में उतरे थे,

छोड़ दिया था दूर किनारा ।

बहती थी कैसी बहकी सी,

अपनी अल्टूड जीवन धारा ।

कैसा कुम संयोग भाग्य से,

आ पायेगा अब न दुबारा ।

थी जब प्राणों के प्याले में,

उल उल करती जीवन धारा ।

प्यार करोगी क्या तुम बाला । . . .

आकर साथ समीरों के तुम,

मन की कली खिला जाती थी ।

कितनी बीती बातों को तुम,

फिर से याद दिला जाती थी ।

मघल-मघल मुसका करके तुम,

बरबत हृदय खिला जाती थी ।

दो दिन की गंगा यमुना को,

जादू डाल मिला जाती थी ।

मृत आशाओं को आकर के,

जीवन डाल जिला जाती थी ।

औंठों ही औंठों में जाने,

क्या तुम चीज़ पिला जाती थी ।

मर कर लाती थी जाने क्या,

अपने अधरों में मधुबाला ।

प्यार करोगी क्या तुम बाला । . . .

कर्म कुहर में सहता कोई,

कल्प कंठ का कुन्दन आया ।

देखा मुझ तो भारत माँ को,

जंजीरों में जकड़ा पाया ।

सहते - सहते तंतापों को,

तुल गई थी कोमल काया ।

अधरों पर थी आकुल आँखें,

व्याकुल मन था मुल मुरझाया ।

सुका शीघ्र लज्जा ते भेरा,

औंठु बहे हृदय धराया ।

राग भरे जीवन ने सहता,

ली जैगड़ाई पलटा काया ।

बिखर गये मोती प्रमोद के,

टूटी मन की मंजुल माता ।

प्यार करोगी क्या तुम बाला ।

देखा क्या नर - कंकालों को,

झिड़की तहलौ हाथ पतारे ।

सूखे प्यासे प्राणों को ते,

दर दर फिरते मारे मारे ।

थक करके कंकड़ पत्थर पर,

तो जाते हैं यह बेघारे ।

शून्य गगन ही झन्का घर था,

ये दीपक यह नम के तारे ।

दीख न पड़ते हैं जेलों में,

फसलों के रंगीन नज़ारे ।

सुखे सुखे सुने सुने,

हे नदियों के कुल कगारे ।

शीघ्र दोहन के भ्रम बल की -

नत नत की निर्बल कर डाला ।

प्यार करोगी क्या तुम बाला । - - -

ज्यों ही भैंस प्रिय माता के,

दुःख हरने की मन में ठानी ।

शौकक वर्ग तत्काल हुआ,

फौता मुझको कुछ बात न मानी ।

चिड़ोह कह भेजा मुझको,

बंधन में कत काते - पानी ।

हथकड़ियाँ हैं जंजीरें हैं,

तुख स्वप्न तब प्रेम कहानी ।

कर्मज कम्बल काते - काते,

कहाँ तुम्हारा यह पट धानी ।

हे धुँधली ती स्मृति उर में,

तुन्दर युग की एक निशानी ।

क्या चिड़ोह किया था भैंस,

याहा था बस एक निवाला ।

प्यार करोगी क्या तुम बाला । - - -

देखो मुझसे कितने बन्दी,

तहुप रहे हैं दुःख अपार में ।

बंद पड़ी है माता बहिर्में,

कौठरियों के अन्धकार में ।

नहीं देख पाती क्या कुछ भी,

दुखी दुर्गों की आधार में ।

तूफ़ घुकी हैं कितनी कलियाँ,

देखी तो चढ़ती बहार में ।

प्रतिभासित है प्रलय-प्रेरणा,

धड़-धड़ धक्की की पुकार में ।

मानवता ही मीन पड़ी है,

इस अनीति में अनाधार में ।

बटौ बटौ बान पड़ गया,

देखी कीमल कर में छाला ।

प्यार करोगी क्या तुम बाला । - - -

और न पूछो कुछ भी मुझसे,

है दुःख मरी कहानी मेरी ।

आज नहीं तो कल काया की,

देखोगी मरघट में ड टेरी ।

किन्तु तताती है मित्रिवासर,

मन में उठ उठ व्यथा घिरि ।

है न पूर्ण स्वामीन अभी,

बंधन ते भारत माता मेरी ।

विद्रोही की दुनिया है यह,

जाओ जाओ करो न देरी ।

पहरेदार देखते होंगे,

कीमल ही, है निजा अधिरी ।

बढ़ी हृदय की धड़कन ऐसी ।

सपना टूटा हुआ उजाला ।

प्यार करोगी क्या तुम बाला । - - -

जमकिया श्री इन्द्र पर्व

गजल

बेगुनओं पर बम्ब की बेवतार बीछार की ।
 दे रहे हैं धमकियाँ बन्दुक और तलवार की ॥ ११॥
 बाग जलियाँ में निहत्तों पर चलायीं गोलियाँ ।
 पेट के भी बल रिंगार जुल्म की हद्द पार की ॥ १२॥
 हम गरीबों पर किया जितने सितम ये इन्तर्हा ।
 याद भूँगी नहीं उस हाथरे बदकार की ॥ १३॥
 या तो हम ही मर मिटेंगे या तो ले लेंगे तुराज ।
 होती है इस बार हुज्जत खत्म अब हर बार की ॥ १४॥
 जीर आलम में मया है ताजपत के नाम का ।
 खवार करना उनको याहा अपनी मिट्टी खवार की ॥ १५॥
 जिस जगह पर बन्द होगा भेर नर पंजाब का ।
 आबरु बढ़ जायेगी उस जेल की दीवार की ॥ १६॥
 जेल में भेजा हमारे लीहरीं को बेकसूर ।
 लाई रीडिंग ने भी अच्छी न्याय की भरमार की ॥ १७॥
 बुन मजदूरी की सरयू अब तो गहरी धार में ।
 कुछ दिनों में डूबती है इन्द्र आबरु सरकार की ॥ १८॥

गजल

हथकड़ी जो हाथ में डाली मेरे सरकार है ।
 देश के आजाद करने का यही हथियार है ॥ ११॥
 फूँक देगी तुझको जालिम मिलल लंका की तरह ।
 आहपुर तासीर यह जंजीर की झन्कार है ॥ १२॥

जेल का किसको है खटका तुली का किसको है डर ।
 देश पर कुर्बान होने को हर एक तैयार है ॥ §3§
 बच्चा-बच्चा हिन्द का है हो गया सीना तिर पर ।
 रंग लायेगा बदन का खून फिर एक बार है ॥ §4§
 राय बहादुर सम0र0बी0र0 खान बहादुर हो कोहं ।
 कष्ट इनकी कुछ नहीं हर एक जलीलो उवार है ॥ §5§
 जिनको डर हो जेल का फाँसी का खतरा हो जिन्हें ।
 बुझियाँ वह पहन ले उनका यही सिंगार है ॥ §6§
 मर्द कहना आज से अपने तिर दें छोड़ यह ।
 जो बापसुती के लिए जोश ता तावेदार है ॥ §7§
 तेग हो तर्क व आवसुम की स्वदेशी की हो दात ।
 फिर बहादुर देश अपना अपना कारोबार है ॥ §8§

गुजल

अगर आजाद गैरों से मेरा हिन्दुस्तान होगा ।
 तो हर एक नीजवाँ बुझल सतयुग का सम्राट होगा ॥ §1§
 मगर अपसोत जकड़ा है गुलामी में मेरा भारत ।
 वह दिन अब जल्द आता है कि अपना राज पाँ होगा ॥ §2§
 कटेंगे फिर नहीं जलियाँ में पारो भेड़ वकरी से ।
 न रीलर स्क ही होगा न गैरों का निशाँ होगा ॥ §3§
 न होगा मार्शल्ला भी अगर आजाद हम होंगे ।
 इसी भारत में फिर अर्जुन ता हर एक नीजवाँ होगा ॥ §4§
 बला से जान भी जाय मगर ईमान रह जाय ।
 हमें होगी बुझी अब ही हमारा वृँ खाँ होगा ॥ §5§

ये हिन्दी हिन्द के वासी नहीं तोपीं ते डरते हैं ।

मला कब तक हमारी ये ज़मीं और आत्मा होगा ॥ ॥6॥

महात्मा सत्य गाँधी ने चलाया चक्र चरखे का ।

इसी में शेर के अन्याय का बस खात्मा होगा ॥ ॥7॥

“इन्द्र” फेंगे और फूँगे हमारे बाग के बूटे ।

मुहम्मद और शीकत ता हमारा बागवां होगा ॥ ॥8॥

गज़ल

तमन्ना है यह मर कर भी चलन अपना स्वदेशी हो ।

मज़ा मरने में आये गर क़फ़न अपना स्वदेशी हो ॥ ॥1॥

मिला कैसा कहीं का रंज हम काले ही अच्छे हैं ।

बुरा क्यों हो जो यह रंग बदन अपना स्वदेशी हो ॥ ॥2॥

विदेशी लेम्प को तोड़े यह अन्धी रोशनी छोड़े ।

दुआ माँगी धिरागे अन्जुमन अपना स्वदेशी हो ॥ ॥3॥

यह फेंके कोट, काटर, नेक टाई, बूट हातन के ।

लिवात अपना स्वदेशी हो पेरहन अपना स्वदेशी हो ॥ ॥4॥

कहाँ की है यह मोटर कार तोड़ा तैमी नेर बिस्किट ।

फिटन अपनी स्वदेशी हो तिफ़िन अपना स्वदेशी हो ॥ ॥5॥

दुआ है बाद मरने के स्वदेशी रोयें मैयूत पर ।

कि सरतावा हरेक अहले वतन अपना स्वदेशी हो ॥ ॥6॥

यही है आरजू या रव चलन अपना स्वदेशी हो ।

यह दिल अपना स्वदेशी हो दहन अपना स्वदेशी हो ॥ ॥7॥

मुहब्बे हिन्द जादी मरे ीका कील है तुम लो ।

जुवाँ अपनी स्वदेशी हो सलून अपना स्वदेशी हो ॥ ॥8॥

"गजल"

अलाह गर कमी मुझे जेवर का जीक हो ।
 हाथों में हथकड़ी हो गले में भी तीक हो ॥ ११॥
 लगजिन न ठाऊँ ज़िन्म पे आफ़त हजार हो ।
 खिन्नमत में कौन की भेरा पे तर नितार हो ॥ १२॥
 इज्ज़त की चाह दिल में न जिनहार हो मुझे ।
 चढ़ जाऊँ बतन के तिर गर हार हो मुझे ॥ १३॥
 धुन में वतन की हर धड़ी करता तफ़्ज़ रहूँ ।
 जाने के तिर ज़ुल में तीना तिपर रहूँ ॥ १४॥
 हाकिम की बयाँ लिखने में जब कलम बन्द हो ।
 इज्ज़हार हो भेरा यही आजाद हिन्द हो ॥ १५॥
 ताक़त दे कुदा हिन्द को आज़ाद करा दूँ ।
 या दुश्मनों के जेल को आबाद करा दूँ ॥ १६॥
 फ़रहाद कैस का मुझे दरजा नतीब हो ।
 भेरा वतन ही बस कुदा भेरा हबीब हो ॥ १७॥
 दुश्मन की गोतियों का हो तीमे पे निशाना ।
 गाता हो "इन्द्र" तब भी वतन का तराना ॥ १८॥

"गजल"

हमारी भी ताहिब अज़िल देख लेना ।
 मेरे हिन्द की फिर ज़बल देख लेना ॥ ११॥
 दिवायेगी दुनियाँ ऐसे ऐसे करिश्मे ।
 कितनी ते न होगी नक़ल देख लेना ॥ १२॥
 लगी है लगन हमको देवी की हर दम ।
 तो हरफ़न पे अपना दखल देख लेना ॥ १३॥

न पहरेगी औरों का कश्मीरा नकली ।
 उती को यहाँ तुम असल देख लेना ॥ १४॥
 बताते हैं ईजाद की माँ जरूरत ।
 हो तादिक यहाँ वह मतल देख लेना ॥ १५॥
 बहाई है आजादी की हमने गंगा ।
 करेगी उती में गुल देख लेना ॥ १६॥
 तुम्हारे तवय पे जुदा हम हो भाई ।
 रकीयो तुम्ही अब मतल देख लेना ॥ १७॥
 न झिझकेगी मकतल में खँवर के डर से ।
 करो तुम हमें जब कृतल देख लेना ॥ १८॥
 रहें लाखों तावित कदम है मुरखी ।
 ऐ जातिम पुरानी मतल देख लेना ॥ १९॥
 पहुँ बेड़िया "इन्द्र" के पावों में जब ।
 तो हत की भी बादी डबल देख लेना ॥ ११०॥

"रतिया"

तेरे हर चक्कर में वैसे दुश्मन चक्कर खाते हैं ।
 जो जहाज कपड़ों के भरकर यहाँ को आते हैं ।
 तेरी करामात के कारण वापस चले जाते हैं ॥ ११॥
 लिवर पुल के आज दिवाले निकले जाते हैं ।
 कुली मानघेस्टर के नेनन नीर बहाते हैं ॥ १२॥
 घर बैठे भारत के आडर अबनहीं पाते हैं ।
 तस्तता माल मंगाली हम ते तार पठाते हैं ॥ १३॥
 तिर में पड़ी धूप है नया कामून बनाते हैं ।
 कुछ नहीं चलती पेज हमें बागी बतलाते हैं ॥ १४॥

तोप, तीर, तलवार, तमन्चा हमें दिखाते हैं ।

हम भी लेकर तुफे तामने पे डट जाते हैं ॥ ५॥

गाढ़ी पार "इन्द्र" तेरी है सब धरति है ।

तेरे घर ते हम दुग्मन के मान घटाते हैं ॥ ६॥

"रतिया"

बुढ़िया बयों बेठी आलस में यहाँ पोनी बेगि संभारि ।

आज लहमी घर आयेगी अंगना झारि बुहारि ।

हरि को तुमिरि यलाइदे ॥ यहाँ पिंदिया बेगि उतारि ॥ १॥

हाथ कते के धान बनाइले अब तो तु दे पारि ।

पत्र विदेशी मतीना सुये अग्नी बीच पजारि ॥ २॥

मलमल की बेज्म ओढ़नी अटका दे के फारि ।

लाज बयाऊँ और टिकाऊँ गाढ़े के पट पारि ॥ ३॥

तु हथियार बन्द फौजन के पाते मुहरा मारि ।

युद्ध बन्द मति करियो दुग्मन सब मानि हार ॥ ४॥

तेरे बल पे अंगुल ते हमने ठठी है रारि ।

यह हथियार बड़ी बेडो है योखे हाथ नकारि ॥ ५॥

मात्र "इन्द्र" की अर्ज मानि ते मती हिलावे नारि ।

गीरन के दिल पे भारत को तु सिक्का बेठारि ॥ ६॥

"रतिया"

सब मिलि काती भारतवासी यहाँ अजब रंगीला है ।

तेवर पुल के हर एक मिल का हंजन कीला है ॥

मान मानचिह्न के मारे अब क्या हीला है ॥ १॥

घूं, घूं, घूं, घूं शब्द करे ये बड़ा तुरीला है ।

जिनका मुँह था लाल तुनत ही पड़ गया पीला है ॥ १२॥

उतने कर दिया अंगुली का ताना ढीला है ।

पेड़ नहीं चलती दुश्मन की आटा गीला है ॥ १३॥

“इन्द्र” तुदमन यह यही है वान कुलीला है ।

बुन दिया है विचार गाँधी जी की लीला है ॥ १४॥

“रतिया”

हमारी मेकी को सरकार आपने मजा खाया है ।

धन जन हमने दिये युद्ध में साथ निभाया है ।

पुरस्कार के बदले में रौतार एक लगाओ है ॥ ११॥

दे देंगे स्वराज यही हरदम समझाया है ।

अमृतसर में नाटक सबकी बुन कराया है ॥ १२॥

करके सब इकरार प्रेम हमने दिखलाया है ।

कर-कर पेंतीस वर्ष वायदा तंग दिवाया है ॥ १३॥

हमने तेरी वर्ष डेढ़ ती राज चलाया है ।

जर्मन के तंग लहें हमी ने उसे हराया है ॥ १४॥

अन्यायी को राज न जग में रहने पाया है ।

अब तुम्हारे मान मारने गाँधी आया है ॥ १५॥

“रतिया”

मत लहयो बुंदरिया हमार विदेकी हो बालमा

हे हुकम गाँधी का अब परवा मगाइये ।

कपड़ा बनाने के लिए करधा भी लाइये ॥

करी देकी पे तन मन नितार ॥ ११॥

दीलत गई सब गैर मुलकिन को हमारी ।

बाकी रही है अब उसके भी जाने की तयारी ।

फिर धीमे धुनि-2 उपाट ॥ १२॥

कुरते, फितुरी, मिरज़ह देखी बनाइये ।

बच्चों की फेन्ट केप ना हरगिज पहनाइये ॥

बधे रोजाना तत्तर हज़ार ॥ १३॥

जेवर मेरा कर दीजिये गाँधी के हवाले ।

जितते वह वीर हिन्द की इज्ज़त को बचाते ॥

इन्द्र वर्मा की है ये पुकार ॥ १४॥

"रतिया"

मेरा टूटे न चरखे का तार प्रेमी हो वालमा ॥ टेक

तब काम-काज करके मैं चर्खा घुमाऊँगी ।

करधे पे बैठकर के कपड़ा बनाऊँगी ॥

करें तीसक व चार तैयार ॥ ११॥

चौसठ करोड़ धन जो विलयित हो जायेगा ।

आखिर मैं माइनों के यही काम आयेगा ॥

लंका ज़ायर के खोर पछार ॥ १२॥

बरबाद करें हिन्द पे तीपों की मार ते ।

पर इंग्लैण्ड को हिला दूँ मैं चरखे के तार ते ॥

मेरा तकवा यह जायेगा पार ॥ १३॥

चरखा छुड़ा के हिन्द को नंगा बना दिया ।

चरखे का मंत्र गाँधी जी ने फिर ते पढ़ा दिया ॥

करे चरखा ही सब का सुधार ॥ १४॥

चरखा चलारें तो करोड़ों का लाभ हो ।

इंग्लैण्ड के ज़ुलाओं के पेटों में खाय हो ॥

तूटे मजदूर श्रृंखला बजार ॥१५॥

कर सकता नहीं कोई इसकी बराबरी ।

परवा तुदमन यह है इन्द्र केतरी ।

हे भारत में फिर ते बहार ॥ १६॥

"घरना"

तिहन का जायो घरना में पब्लिक में तुनि आई ।

के प्रहलाद पेज की पुरी के हे कुमार कन्हाई ॥

ते चारन्ट दरोगा आयो घोड़ी लगन लिखाई ॥१॥

ठकुरानी ने कियो आरतो निकरोती करवाई ।

सार्त कोल बरात बनाई कलवट्टी पे छाई ॥ १२॥

जब दरबार कलवटर बैठो घरना पहुँची जाई ।

जे जे कार हुई गाँधी की पूल माल पहनाई ॥ १३॥

माँगी मुहर जमानत दे दो इन्द्र ने कीनी नाई ।

कहा कि मुख ते वाचा नर दो निश्चय हाथ रिखाई ॥ १४॥

माँकी हमते माँग लीजिए अपनी गृध्र कुलाई ।

घमाघते में को पहियाने पब्लिक और तियाई ॥ १५॥

जेल जिन्हें जन्मासों दीनों कंगन लिए मंगाई ।

नहीं तमार फौलादी कंगन मोटी रही कलाई ॥ १६॥

जैसे तेसे ते ताधि महरत ठूँस-ठोंस करवाई ।

मय गई धूम तिविल लाइन में गाँधी की जय छाई ॥ १७॥

घोड़ी व्याह "इन्द्र" को कीन्हों हेंति हेंति देउ बधाई ।

श्रीदेवी यों कहे पिता ते घर पर रखी जमाई ॥ १८॥

तबदील गवर्नमेंट की रफ्तार न होगी ।
 गर कीम अतहयोग पर तैयार न होगी ॥ १॥
 बन जायेंगे हर बहर में जलियान वाले बाग ।
 इस मुल्क की गर दूर यह तरकार न होगी ॥ २॥
 दुश्मन को अतहयोग से हम कमजोर करेंगे ।
 इन हाथों में बन्दूक या तलवार न होगी ॥ ३॥
 ये जेल कीम टूटकर अब और बनेंगे ।
 इनमें तमाम कीम गिरफ्तार न होगी ॥ ४॥
 यह कीम कैदी अतीरे खान होगा मला जित पर ।
 हंत - हंत कर फ़िदा जेल की दीवार न होगी ॥ ५॥
 कैदाई है हमको हो लोहे की बेड़ियाँ ।
 तोभे के जेवरों में ये झन्कार न होगी ॥ ६॥
 जब तक इसे खून से तीयने नहीं हम ।
 खेती खान की दोस्तो गुलजार न होगी ॥ ७॥
 कुछ मिल गये हैं ऐसे मुत्तमान और हिन्दू ।
 बस अब तमीजे तस्बी हो जिनहार न होगी ॥ ८॥
 हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे मुज्तारिब ।
 गम में हमारे जो कमी गुम उधार न होगी ॥ ९॥

"आजाद हिन्द"

"दावा है यह हमारा आजाद हिन्द होगा ।
 बरवाद हो युका जो आबाद हिन्द होगा ॥
 अब्बल यह जित तरह से दुनियों का पेगवा ।
 तारे जहाँ का फिर भी उस्ताद हिन्द होगा ॥
 वादे बिर्जा ने इस को पतझड़ जो किया है ।
 वागे जहाँ का तो भी ममजाम हिन्द होगा ॥
 पामाल कर रहे हैं जो आज इस तरह से ।
 कुछ दिन बाद उनको फिर याद हिन्द होगा ॥"

पंचम अध्याय

उपसंहार

अलीगढ़ जनपद ने अपनी ऐतिहासिक यात्रा में बहुत से नाम ग्रहण किये हैं। महाभारत काल से लेकर अब तक इसके ये नाम मिलते हैं : कोशाम्बी, कोर कोल, अलीगढ़, रामगढ़ एवं अलीगढ़ आदि। अलीगढ़ जनपद राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहा है। प्रस्तुत लघु-मीध-ग्रन्थ में अध्येता ने राष्ट्रीय आन्दोलन और इससे सम्बन्धित जनकवियों को आधार बनाया है जिसमें श्री नवाब तिह चौहान "कंज", श्री साहबसिंह "भेहरा", श्री कैमसिंह "नागर", श्री गजराजसिंह "सरोज", श्री टककलाल जर्मा, श्री छेदालाल "मूढ", श्री रामप्रसाद पुजारी, श्री वैद्य दीपचन्द आर्य, श्री नाथूराम जर्मा शंकर, श्री इन्द्र वर्मा आदि कवियों की रचनाओं में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण और विकास मिलता है। परिणामतः इनसे उनमें नवीयतना एवं जागृति का विकास हुआ है। इन्होंने इस जनपद की भाषा का प्रयोग भी अत्यन्त सफलतापूर्वक किया है।

अलीगढ़ जनपद को ही नहीं परन्तु सम्पूर्ण भारत को ब्रिटिश शासन ने एक सूत्र में बाँध दिया था। इस शासन के कारण भारत में विभिन्न प्रकार के शोषण एवं परेशानियों उत्पन्न हो गयी थीं। अंग्रेजों की कूटनीति तथा शोषण-दुर्व्यवहार से भारतवासी तंग आ गये। इनसे छुटकारा पाने के लिए देश में राजनैतिक एवं सामाजिक एकता स्थापित हुई। 19वीं शताब्दी के अन्त में अलीगढ़ जनपद में अनेक गणमान्य नेताओं तथा उल्लेखनीय व्यक्तियों का आगमन हुआ। इनमें ये प्रमुख हैं - गाँधी जी 28 नवम्बर 1917, 12 अक्टूबर 1920, 5 अगस्त 1921, 4 नवम्बर 1929 ; लाला लाजपतराय सन् 1905, 1926 ;

अमर जहीद तरदार जगतसिंह तन् 1928 ; श्री विठ्ठल भाई पटेल तन् 1930, ज्ञान अब्दुल गफ्फार खॉं, पं० जवाहरलाल नेहरू तन् 1937, पं० गोविन्द वल्लभ पन्त तन् 1937 ; राम०राम० राय तन् 1937; नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तन् 1940 आदि । इन्होंने यहाँ की जनता में आत्मसम्मान , आत्मसम्मान, राष्ट्रीय भावना, सामाजिक सद्भाव आदि की विचारधारा को जागरित किया । भारत को स्वतन्त्र कराने में देश में अनेक राष्ट्रीय आन्दोलन हुए । करोड़ों नागरिकों ने इसमें भाग लिया । काफी लोग जेल गए और बहुत से फाँसी के तख्ते पर झुमे । इसके अतिरिक्त बहुत से अज्ञात स्वतंत्रता सेनानी भी जहीद हुए । अलीगढ़ जन्पद का राष्ट्रीय आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है । तन् 1857 की असफल क्रान्ति के उपरान्त ब्रिटिश सरकार के अत्याचार दिन पर दिन बढ़ते जा रहे थे । इस समय देशवासियों को न बोलने की आजादी थी, न लिखने की । इन्हें कोई कारोबार करने की भी छुट न थी । भारत की इस दुर्दशा को देखकर महान समाजवादी आर्य समाजी दयानन्द सरस्वती ने आजादी का बिगुल बजाया । इन्होंने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, राष्ट्रीय स्वतंत्रता और धर्म अखंडता के पीर रस पूर्ण भावनों से देशभर में नई जागृति पैदा की ।

तन् 1885 में सर ह्यूम द्वारा कांग्रेस की स्थापना की गई जिसके कारण देश में राष्ट्रीयता का उदय हुआ । तत्कालीन प्रसारित समाचारों के माध्यम से अलीगढ़ जन्पद की जनता परिचित होती रही । और धीरे - धीरे कांग्रेस की ओर यहाँ के लोग आकृष्ट होते गये । तन् 1906 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में स्वराज्य प्राप्ति की घोषणा की गयी । इसके समाप्ति श्री दादा भाई नौरोजी थे । महान क्रान्तिकारी नेता श्री लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, श्री विपिन चन्द्र पाल तथा अलीगढ़ जन्पद की तत्कालीन हायरस के राजा महेन्द्रप्रताप ने भी इसमें भाग लिया । इन सभी ने मिलकर "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है हम इसे लेकर रहेंगे" का बिगुल बजाया ।

राजा महेन्द्र प्रताप देश की आजादी के लिए 17 अगस्त सन् 1914 को अपने परिवार एवं राज्य को छोड़कर विदेशों में सहायता प्राप्त के लिए चले गए। ये अफगानिस्तान, जर्मन, रूस, जापान आदि देशों में जाकर आजादी का ध्वजल बजाते रहे। देश स्वतन्त्र होने पर ही 15 अगस्त सन् 1947 को भारत लौटे। आने पर उनका मध्य स्वागत हुआ। अलीगढ़ जनपद के स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपनी एक मास की पेन्शन का धन देकर श्री मलखान सिंह जिला चिकित्सालय अलीगढ़ में "महेन्द्र प्रताप स्वतन्त्रता सेनानी आरोग्य कक्ष" का निर्माण कर जनपद के महान देशभक्त और सपूतन की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने का जो प्रयास किया है, वह इतिहास में अमर रहेगा।

अलीगढ़ जनपद के राजनीतिक इतिहास में सर सैय्यद अहमद खॉं का भी उल्लेखनीय स्थान है। उनकी विचारधारा से भारत की राजनीति भी प्रभावित हुई है। सर सैय्यद अहमद खॉं का महान्नाम कार्य सन् 1875 में मुहम्मदन ऐंग्लो ओरिएण्टल कालिना की स्थापना।। सरसैय्यद अहमद खॉं जी ने सन् 1887 से पूर्व अपने कार्यों और भाषणों से यही प्रकट किया कि वे एक सच्चे राष्ट्रवादी एवं हिन्दू मुस्लिम एकता के पौक हैं।

सन् 1921 में असहयोग आन्दोलन बड़ी तेज गति से चल रहा था। उसी समय अलीगढ़ के प्रमुख नेता श्री तोताराम राठी, मूदिव शर्मा, इन्द्र वर्मा, हनुमान प्रसाद माथुर आदि ने गिरफ्तारियाँ दीं। सन् 1923 में अलीगढ़ जनपद से 40 लोगों का जत्था ठांउ भ्रमाल सिंह के नेतृत्व में नागपुर सत्याग्रह में गया। ये लोग दो - दो महीने की जेलकाटकर आये। इसके बाद इन्हीं के नेतृत्व में सन् 1925 में कानपुर कांग्रेस सम्मेलन में अलीगढ़ के कान्तिकारी गए। सन् 1927-28 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में साइमन कमीशन भेजा जिसके विरोध में अलीगढ़ जनपद से खेर निवासी श्री भगवानदास गौतम ने आगरा जाकर उनका बहिष्कार

किया । उन्होंने नारा लगाया - "साहमन कमीशन गो बैक" ।

सन् 1930 में गांधी जी द्वारा चलाया गया नमक कानून तोड़ने के लिए अलीगढ़ जनपद से 15000 स्वयंसेवकों का एक संगठन बनाया गया । जगह-2 सत्याग्रह हुए । नमक बनाकर कानून तोड़ा गया, गिरफ्तारियाँ भी दी गई । इस आन्दोलन के प्रमुख नेता ठाठ टोडर सिंह, श्री तोताराम राठी, ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु, शवाजा अब्दुल मजीद, हाफिज उतमान, मा० जनपतलाल, केच राधवल्लभ, हरिकीशोर सराफ, नरोत्तम प्रसाद गर्ग, मदन सिंह कमान्डर आदि व्यक्ति थे । सन् 1931 से लेकर 1940 तक अलीगढ़ जनपद में ब्रिटिश सरकार के विरोध में समाई तया आन्दोलन बराबर चलते रहे । सन् 1940-41 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी अलीगढ़ जनपद अग्रसर रहा था ।

सन् 1942 में गांधी जी पूर्ण स्वराज्य के लिए अंग्रेजी "भारत छोड़ो" और "करो या मरो" का प्रस्ताव पास किया । दिसम्बर में इस आन्दोलन की प्रवण्ड ज्वाला झुक उठी । अलीगढ़ जनपद ही फिर क्यों पीछे रहता । यहाँ के नेताओं और क्रांतिकारियों ने अपनी गिरफ्तारियाँ देकर जेलें भर दीं । आजादी का नारा जनपद के कोमे - कोमे में गूँज उठा । "हन्कलाव जिन्दावाद" का गगन-भेदी नाद हुआ । उन्हीं दिनों तहसील अतरोली गोलीकाण्ड में श्री बनारसी-दास गहीड हुए और अनेकों व्यक्ति घायल हुए । इन्हीं दिनों अलीगढ़ बम केस में श्री गणेश दात और श्री रमेश चन्द्र आर्य गहीड हुए । सन् 1947 तक अलीगढ़ जनपद में स्वतन्त्रता सेनानियों ने भारी योगदान किया है । इन्होंने अनेकों शारीरिक व आर्थिक हानियों व कष्टों को सहकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान किया है । इस जनपद में अलीगढ़, इगलास, हाथरस, अतरोली, खैर, तिकन्दराराऊ, अकराबाद, बेतवाँ, बिजौली, हरदुआगंज, कपौरा, जाली, सातनी, हसायन, गंगीरी, महराक, मुरतान, ~~ईश्वरप्रसाद~~ टप्पल, विजयगढ़ आदि

ऐतिहासिक जगहों पर लगातार राष्ट्रीय आन्दोलन हुए । राष्ट्रीय आन्दोलन में असीम जनपद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

आधार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अर्जुन तिवारी, स्वतन्त्रता आन्दोलन और हिन्दी प्रकाशिता : सं० 1982 ई०

अयोध्या सिंह, भारत का सुविश्व संग्राम : सं० 1977 ई०

कृष्णदास, स्वतन्त्रता संग्राम के 90 वर्ष : सं० 1946 ई०

गजराज सिंह सरोज, अहिंसा : सं० 1949 ई०

गजराज सिंह सरोज, उद्बोधन : सं० 1966 ई०

गुल्शुब निहाल सिंह, भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास : सं०

गोपाल दास शर्मा, हिन्दी साहित्य में अलीगढ़ का योगदान : सं०

घिन्तामणि शुक्ल, अलीगढ़ जनपद का राजनैतिक इतिहास : सं० 1979 ई०

घिन्तामणि शुक्ल, स्वतन्त्रता संग्रामों की काव्यमयी घातकियाँ : सं० 1977 ई०

जयप्रकाश अग्रवाल, अलीगढ़ परिवर्धन : सं० 1970 ई०

देवराज सिंह, महाकवि अकर स्मृति-ग्रन्थ : सं० 1986 ई०

धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी विश्वकोश, सं० 1960 ई०

नवाचसिंह चौहान, बुद्धा न दीप प्रचार का, सं० 1975 ई०

निरंजनलाल लदठ, यादों की अंजुरी में बुद्धा के फूल, सं० 1975 ई०

पद्माभिषीता रामाय्या, कश्मिर का इतिहास, सं० 1948

विषन्यन्द्र, स्वतन्त्रता संग्राम, सं० 1972

मन्मथनाथ गुप्त, राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास, सं० 1948 ई०

मुकुटबिहारी लाल, भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, सं० 1981 ई०

रत्नाकर पाण्डेय, स्वतन्त्रता और साहित्य, सं० 1974 ई०

रघेन्द्रपाल सिंह, अलीगढ़ जनपद के जनकवि बेमसिंह नागर, सं० 1984 ई०

रामगोपाल, यदुवंशी, जयभारत, सं० 1961 ई०

विश्वनाथ राय, राष्ट्रीय क्रान्ति पर निबंध, सं० 1957 ई०

पत्रिकाएँ :

अलीगढ़ और तन् सत्तावन, श्रीमनाथ टंडन व साहबसिंह मेहरा, सं० १९५७ ई०

स्मारिका, हरीशंकर आजाद, सं० १९८६ ई०

कलयुग, साहबसिंह मेहरा, सं० १९६५ ई०

अलीगढ़ विकास परिक्रमा, सुचना विभाग अलीगढ़ सं० १९८९-९०

साक्षात्कार

श्री साहबसिंह मेहरा, अलीगढ़

वैद्य दीपचन्द आर्य, अलीगढ़

श्री रमेश चन्द्र पुत्र गजराजसिंह तरीज, अनीसी तिकन्दराराऊ

श्री महेश चन्द्र शर्मा पुत्र दक्कनलाल शर्मा, चण्डीत, अलीगढ़ ।